तीन मोटे

यूरी ओलेशा
तीन मोटे

Юрий Олеша
Три толстяка
На языке хинди

Yu. Olesha
THE THREE FAT MEN
In Hindi

अनुवादक : मदन लाल "मधु"

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

रादुगा प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत संघ।

ISBN 5-05-001345-6

अनुक्रम

पहला भाग
नट तिबुल

दूसरा भाग
उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया

तीसरा भाग
सुओक

चौथा भाग

हथियारसाज़ प्रोस्पेरो

पहला भाग

नट तिबुल

पहला अध्याय

डाक्टर गास्पर आर्नेरी दिन भर परेशान रहे

जादूगरों के ज़माने लद चुके हैं। सच तो यह है कि जादूगर कभी थे ही नहीं। उनकी तो केवल कल्पना की गयी थी, बहुत ही छोटे-छोटे बालकों को सुनाने के लिये उनके बारे में मनगढ़न्त कहानियां गढ़ी गयी थीं। दर असल कुछ ऐसे मदारी ज़रूर थे जो ऐसी होशियारी से सभी तरह के तमाशाई लोगों की आंखों में धूल झोंक पाते थे कि उन्हें मन्त्र फूंकने और टोने करनेवाले तथा जादूगर समझा जाता था।

कभी एक डाक्टर होते थे। उनका नाम था गास्पर आर्नेरी। भोले-भाले लोग, मेले-ठेले में घुमक्कड़ी करनेवाले और अधकचरे विद्यार्थी उन्हें भी जादूगर मान सकते थे। वास्तव में वे डाक्टर बड़े-बड़े अद्भुत काम करते थे जो सचमुच अजूबे ही लगते थे। भोले-भाले लोगों का उल्लू बनानेवाले मदारियों और जादूगरों जैसी उनमें कोई बात नहीं थी।

डाक्टर गास्पर आर्नेरी वैज्ञानिक थे। उन्होंने कोई सौ विद्यायें पढ़ी थीं। देश भर में उनसे अधिक समझदार व्यक्ति, उनकी टक्कर का विद्वान नहीं था।

डाक्टर की विद्वत्ता की सभी में धाक थी – क्या चक्कीवालों, क्या फ़ौजियों, क्या महिलाओं और क्या मन्त्रियों में। स्कूल के बालक उनके बारे में जो गाना गाते थे, उसकी स्थायी थी –

उड़कर तारों तक जो जाये।
दुम से पकड़ लोमड़ी लाये॥
जो पत्थर से भाप बनाये।
बड़े करिश्मे कर दिखलाये॥
जिसके गुण का वार न पार।
अद्भुत है डाक्टर गास्पर॥

जून महीने के एक सुहाने दिन डाक्टर गास्पर ने तरह-तरह की घासें और गुबरैले जमा करने के लिये लम्बी सैर को जाने का इरादा बनाया।

डाक्टर गास्पर जवान न थे और आंधी-पानी से घबराते थे। घर से रवाना होने के पहले उन्होंने गर्दन पर मोटा गुलूबन्द लपेट लिया, धूल-मिट्टी से आंखों का बचाव करने के लिये चश्मा चढ़ा लिया और हाथ में छड़ी ले ली ताकि कहीं ठोकर न लग जाये। यों कहना चाहिये कि उन्होंने बड़ी सावधानी से सैर-सपाटे के लिये जाने की तैयारी की।

दिन बहुत ही प्यारा था। सूरज था कि चमकता ही जा रहा था। घास ऐसी हरी-हरी थी कि मुंह में पानी भर भर आता था; हवा में फूलों का पराग उड़ रहा था, पक्षी चहचहा रहे थे, बॉल-नाच के फूले-फूले फ्रॉक की तरह हल्की-हल्की हवा लहरा रही थी।

"दिन तो ख़ूब बढ़िया है," डाक्टर ने अपने आप से कहा, "फिर भी बरसाती तो साथ ले ही लेनी चाहिये। गर्मी के मौसम का भरोसा ही क्या! जाने कब पानी बरसने लगे।"

जरूरी आदेश देकर डाक्टर ने चश्मे को साफ़ किया, सूटकेस से मिलता-जुलता हरे रंग का थैला उठाया और चल दिये।

सैर-सपाटे के लिये सबसे अच्छी जगह नगर के बाहर थी, तीन मोटों के महल के नजदीक। डाक्टर अक्सर यहीं आते थे। तीन मोटों का महल बहुत बड़े पार्क के बीचोंबीच था। पार्क के गिर्द गहरी-गहरी खाइयां थीं। खाइयों के ऊपर लोहे के काले पुल बने हुए थे। इन पुलों की रक्षा करते थे महल के संतरी, पीले पंखों वाली मोमजामे की काली टोपियां पहने हुए। पार्क के गिर्द क्षितिज को छूती हुई चरागाहें थीं, जिनमें तरह-तरह के फूल खिले थे, वृक्षों के झुरमुट थे और ताल-तलैयां थीं। ख़ूब ही जगह थी यह सैर-सपाटे के लिये। यहां तरह-तरह की घासें उगी हुई थीं, बहुत ही ख़ूबसूरत गुबरैलों का गुंजार सुनाई देता था और बहुत ही प्यारे-प्यारे पक्षी चहचहाते थे।

"जगह बहुत दूर है, पैदल चलने से थक जाऊंगा," डाक्टर ने सोचा। "नगर के छोर तक जाकर घोड़ा-गाड़ी ले लूंगा और उसमें बैठकर महल के पार्क तक पहुंच जाऊंगा।"

आज नगर के छोर पर, हमेशा की तुलना में कहीं अधिक लोग दिखाई दिये।

"क्या आज इतवार है?" डाक्टर सोच में पड़ गये, "नहीं तो! आज तो मंगलवार है।"

डाक्टर नज़दीक गये।

चौक में लोगों की भारी भीड़ थी। डाक्टर को वहां दिखाई दिये हरे फर्कों वाली सलेटी ऊनी जाकेटें पहने कुछ दस्तकार; जहाजी, जिनके चेहरों पर मौसम की छाप अंकित थी; रंगीन वास्कटें डटे धनी व्यापारी, उनकी बीवियां गुलाब के पौधों की शक्ल के स्कर्ट पहने और सुराहियां, ट्रे, आइसक्रीम के डिब्बे और अंगीठियां लिये हुए विक्रेता एवं गलियों-बाज़ारों में अभिनय करनेवाले दुबले-पतले अभिनेता जो हरी, पीली और अन्य रंग-बिरंगी पोशाकें पहने थे और जो चिथड़ों से सिली हुई रजाइयों जैसे लगते थे। वहां बहुत ही छोटे-छोटे बालक भी थे जो लाल रंग के खुशमिजाज कुत्तों को पूंछों से पकड़कर घसीट रहे थे।

सभी नगर के फाटकों की ओर जा रहे थे। लोहे के बने बड़े-बड़े और मकानों के समान ऊंचे फाटक बन्द थे।

"फाटक क्यों बन्द हैं?" डाक्टर को हैरानी हुई।

लोग शोर मचा रहे थे, ऊंचे ऊंचे बातें कर रहे थे, चीख-चिल्ला और भला-बुरा कह रहे थे। मगर किसलिये? यह समझ पाना सम्भव नहीं था। डाक्टर एक जवान औरत के पास गये जो अपने हाथों में मोटी-सी भूरी बिल्ली उठाये थी। उन्होंने पूछा –

"ज़रा यह बताने की कृपा कीजिये कि यह सब क्या किस्सा है? यहां इतनी भीड़ क्यों जमा है, लोग इतने उत्तेजित क्यों हैं और नगर के फाटक क्यों बन्द कर दिये गये हैं?"

"सैनिक नगर के लोगों को बाहर नहीं जाने देते..."

"सो क्यों?"

"ताकि वे उनकी मदद न कर सकें जो पहले ही निकलकर तीन मोटों के महल की ओर जा चुके हैं।"

"श्रीमती जी क्षमा कीजिये, मगर बात मेरी समझ में आई नहीं..."

"हे भगवान! क्या आपको यह भी नहीं मालूम कि आज हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल लोगों को लेकर गये हैं कि हल्ला बोलकर तीन मोटों के महल पर क़ब्ज़ा कर लिया जाये?"

"हथियारसाज़ प्रोस्पेरो?"

"हां, हां... चारदीवारी तो बहुत ऊंची है और फाटक के पीछे बैठे हैं निशानेबाज़ सैनिक। अब कोई भी तो नगर से बाहर नहीं जा पाता और जो लोग हथियारसाज़ के साथ गये हैं, उन्हें महल के सैनिक मार डालेंगे।"

और सचमुच ही, बहुत दूर से गोलियां चलने की कुछ हल्की-सी आवाज़ें सुनाई दीं।

औरत. के हाथ से मोटी बिल्ली छूट गई। वह गुंथे हुए आटे की तरह नीचे जा गिरी। भीड़ ज़ोर से चीख़ उठी।

"इसका मतलब यह है कि एक बहुत बड़ी घटना घट गयी और मुझे उसका पता तक नहीं लगा," डाक्टर ने सोचा। "हां, मैं तो महीने भर से अपने कमरे में ही बन्द रहा हूं। बाहर निकला ही नहीं, वहीं काम करता रहा। मुझे तो दीन-दुनिया की ख़बर ही नहीं रही..."

इसी समय, कुछ और दूरी पर, कई बार तोप की धांय-धांय सुनाई दी। तोप का धड़ाका गेंद की तरह हवा में उछला और वातावरण में घुल-सा गया। न केवल डाक्टर ही कांप उठे और कुछ क़दम पीछे हट गये, बल्कि भीड़ में जमा सभी लोगों के दिल भी दहल उठे और वे इधर-उधर बिखर गये। बच्चे रोने लगे; कबूतर ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए उड़ने लगे और कुत्ते बैठकर हूंकने लगे।

तोप की धांय-धांय ज़ोर पकड़ती गयी। ऐसा शोर मच गया कि बयान से बाहर। लोगों की भीड़ फाटक के और नज़दीक जाकर चिल्लाने लगी –

"प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो!"

"तीन मोटे मुर्दाबाद!"

डाक्टर गास्पर के तो होश हवा हो गये। लोगों ने उन्हें पहचान लिया, क्योंकि बहुत-से उन्हें जानते थे। कुछ लोग तो उनकी ओर भागे मानो डाक्टर उनकी रक्षा कर सकते हों। मगर डाक्टर तो ख़ुद जैसे-तैसे अपने आंसुओं पर क़ाबू पा रहे थे।

"जाने वहां क्या हो रहा है? कैसे मालूम किया जाये कि वहां फाटकों के पीछे क्या हो रहा है? मुमकिन है कि लोग जीत जायें? मगर यह भी हो सकता है कि उन सबको मौत के घाट उतार दिया गया हो!"

इसी समय कोई दसेक व्यक्ति उस चौक की ओर दौड़े, जहां तंग-सी तीन गलियां मिलती थीं। वहां नुक्कड़ पर पुराने और ऊंचे बुर्जवाला एक मकान था। औरों के साथ-साथ डाक्टर ने भी बुर्ज पर चढ़ने का इरादा बना लिया। नीचे की मंज़िल पर ग़ुसलख़ाने से मिलती-जुलती लांबी थी। वहां तहख़ाने के समान अंधेरा था। ऊपर जाने के लिये चक्करदार ज़ीना था। छोटी-छोटी खिड़कियों से रोशनी आ रही थी, मगर बहुत ही कम। सभी लोग बहुत ही धीरे-धीरे और मुश्किल से ऊपर चढ़ रहे थे। ऐसा इसलिये भी था कि ज़ीना ख़स्ताहाल था और रेलिंग भी टूटी-फूटी थी। इस बात की कल्पना तो की ही जा सकती है कि डाक्टर गास्पर के लिये सबसे ऊपरवाली मंज़िल पर पहुंचना कितना कठिन था। ख़ैर तो वे अभी बीसवीं पैड़ी पर ही पहुंचे थे कि अंधेरे में चीख़ उठे –

"हाय, मेरा दिल निकला जाता है और मेरे जूते की एक एड़ी टूट गई!"

डाक्टर अपनी बरसाती तो तोप के दसवीं बार गरजने के बाद चौक में ही खो बैठे थे।

बुर्ज के ऊपर पत्थरों की मुंडेर से घिरी हुई चौड़ी-सी छत थी। यहां से कम से कम पचास किलोमीटर तक का दृश्य दिखाई दे रहा था। दृश्य बेशक रमणीक था, मगर उसपर मुग्ध होने, उसे सराहने की फ़ुर्सत ही कहां थी। सभी की नज़र उधर लगी हुई थी जहां लड़ाई हो रही थी।

"मेरे पास दूरबीन है। मैं हमेशा आठ शीशों वाली दूरबीन अपने पास रखता हूं। यह लो!" डाक्टर ने कहा और पेटी खोलकर दूरबीन लोगों की ओर बढ़ाई।

सभी लोग एक-एक करके दूरबीन में से देखने लगे।

डाक्टर गास्पर को हरे-भरे खुले मैदान में बहुत-से लोग दिखाई दिये। वे नगर की ओर भागे आ रहे थे, सिर पर पैर रखकर। दूर से वे रंग-बिरंगे धब्बों जैसे प्रतीत हो रहे थे। घुड़सवार सैनिक उनका पीछा कर रहे थे।

डाक्टर गास्पर को यह सारा दृश्य मायाद्वीप के एक चित्र जैसा प्रतीत हुआ। सूरज खूब चमक रहा था, हरियाली चमचमा रही थी। गोले रूई के टुकड़ों की तरह फटते और घड़ी भर के लिये उनकी चमक ऐसे कौंधती मानो कोई दर्पण द्वारा सूर्य की किरण को प्रतिबिम्बित कर रहा हो। घोड़े पिछली टांगों पर खड़े होते थे और लट्टू की तरह घूमते थे। तीन मोटों का पार्क और महल सफ़ेद और पारदर्शी धुएं की जाली में लिपटे हुए थे।

"वे भाग रहे हैं!"

"वे भागे आ रहे हैं... लोग हार गये!"

भागे आ रहे लोग नगर के क़रीब पहुंचते जा रहे थे। बहुत-से लोग रास्ते में ही गिर पड़े थे। ऐसा लगता था मानो घास पर रंग-बिरंगे चिथड़े बिखरा दिये गये हों।

एक गोला धनधनाता हुआ चौक के ऊपर से गुज़रा।

कोई बुरी तरह डर गया और उसने दूरबीन नीचे गिरा दी।

गोला फटा और छत पर खड़े लोग बुर्ज से नीचे भाग चले।

इनमें एक तालासाज़ भी था। उसका चमड़े का पेशबन्द किसी हुक में अटक गया। उसने मुड़कर देखा, उसे कोई भयानक दृश्य दिखाई दिया और वह गला फाड़कर चिल्ला उठा—

"भागो! उन्होंने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को पकड़ लिया! वे अब नगर में आये कि आये!"

चौक में खलबली मच गयी।

लोग झटपट फाटकों से दूर हट गये और चौक से गलियों की ओर भाग चले। गोलियों की ठां-ठां से सेभी के कानों के पर्दे फटने लगे।

डाक्टर गास्पर और दो अन्य व्यक्ति बुर्ज की तीसरी मंज़िल पर ही रुक गये। वे मोटी दीवार में बनी हुई छोटी-सी खिड़की में से झांकने लगे।

खिड़की इतनी छोटी थी कि केवल एक व्यक्ति ही ढंग से बाहर देख सकता था। बाक़ियों को तो ज़रा-सी झलक ही मिल सकती थी।

डाक्टर भी झलक ही पा रहे थे। मगर वह झलक भी काफ़ी भयानक थी।

लोहे के बड़े-बड़े फाटक पूरी तरह खोल दिये गये थे। लगभग तीन सौ व्यक्ति इन फाटकों से एकदम बाहर आये। ये हरे कफ़ों वाली सलेटी ऊनी जाकटें पहने हुए दस्तकार थे। ख़ून से लथ-पथ ये लोग ज़मीन पर गिरते जा रहे थे।

सैनिकों के घोड़े इनके सिरों पर चढ़े आ रहे थे। सैनिक तलवारों से वार कर रहे थे, गोलियां दाग़ रहे थे। उनकी मोमजामे की चमकती हुई काली टोपियों में लगे पीले पंख लहरा रहे थे। घोड़े अपने लाल-लाल मुंह खोलते थे, जिनमें से झाग निकल रहा था और वे अपने दीदे इधर-उधर घुमा रहे थे।

"वह देखिये! उधर देखिये! वह रहा प्रोस्पेरो!" डाक्टर चिल्लाये।

हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को रस्से से बांधकर घसीटा जा रहा था। वह कुछ क़दम चलता, गिर पड़ता और फिर उठता। उसके लाल बाल उलझे-उलझाये

हुए थे, चेहरा ख़ून से लथ-पथ था और उसके गले में मोटे रस्से का फंदा पड़ा हुआ था।

"प्रोस्पेरो! बन्दी बना लिया गया!" डाक्टर चिल्लाये।

इसी समय एक गोला लाठी पर आकर गिरा। बुर्ज झुका, झूल-सा गया, घड़ी भर के लिये टेढ़े रुख सम्भला रहा और फिर धड़ाम से नीचे जा गिरा।

डाक्टर भी कलाबाजियां खाते हुए नीचे जा पहुंचे और अपने बूट की दूसरी एड़ी, छड़ी, थैले और चश्मे से हाथ धो बैठे।

दूसरा अध्याय

जल्लादों के दस तख़्ते

डाक्टर नीचे तो जा गिरे कलाबाज़ियां खाते हुए, मगर कुशल ही रही। उनका सिर भी नहीं फटा और टांगें भी सही-सलामत रहीं। मगर इससे क्या! बेशक हड्डी-पसली सलामत रही, फिर भी गिरते हुए बुर्ज के साथ नीचे जा गिरने में तो कोई मजा नहीं हो सकता, ख़ास तौर पर डाक्टर जैसे व्यक्ति के लिये, जो जवानी की मंज़िल लांघकर बुढ़ापे में क़दम रख चुका हो। डर से ही डाक्टर बेहोश हो गये।

जब उन्हें होश आया तो शाम हो चुकी थी। डाक्टर ने अपने इर्दगिर्द नज़र डाली –

"ओह, क्या मुसीबत है! ज़ाहिर है कि ऐनक तो चूरचूर हो गयी। ऐनक के बिना मुझे सम्भवतः ऐसा ही नज़र आता है जैसा कि अच्छी नज़रवाले व्यक्ति को उस समय जब वह ऐनक चढ़ा लेता है। यह तो बहुत बुरी बात है।"

इसके बाद वह टूटी हुई एड़ियों के बारे में बड़बड़ाते रहे –

"मेरा तो वैसे ही क़द छोटा है और अब एक इंच और छोटा हो जाऊंगा। या शायद दो इंच, क्योंकि दोनों एड़ियां टूट गयी हैं। नहीं, नहीं, केवल एक इंच ही..."

वह मलबे के ढेर पर पड़ा हुआ था। लगभग पूरे का पूरा बुर्ज गिर गया था। दीवार का लम्बा-लम्बा और पतला-पतला टुकड़ा हड्डी की तरह बाहर को निकला हुआ था। कहीं बहुत दूर से संगीत की स्वरलहरी सुनाई दे रही थी। वाल्ज़ की दिलकश धुन हवा के पंखों पर उड़ती हुई आती, खो जाती और फिर से सुनाई न देती। डाक्टर ने ऊपर की ओर नज़र डाली। ऊपर विभिन्न दशाओं में काली टूटी हुई कड़ियां लटकी हुई थीं। शाम के हरे-से आकाश में तारे झिलमिला रहे थे।

"जाने यह वाल्ज़ की धुन कहां से सुनाई दे रही है!" डाक्टर आश्चर्यचकित हुए।

बरसाती के बिना ठंड महसूस होने लगी। चौक में एकदम सन्नाटा था। कराहते हुए डाक्टर पत्थरों के ढेर पर से उठे और उन्होंने किसी के बड़े-से बूट से ठोकर खाई। तालासाज़ एक कड़ी के आर-पार पड़ा हुआ आकाश को ताक रहा था। डाक्टर ने उसे हिलाया-डुलाया। मगर तालासाज़ नहीं उठा। वह मर चुका था।

डाक्टर ने मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने को टोप उतारने के लिये हाथ बढ़ाया –

"ओह, टोप भी गया! तो अब मैं क्या करूं?"

डाक्टर चौक से चल दिये। सड़क पर लोग पड़े थे। डाक्टर ने झुककर हरेक को निकट से देखा। उनकी खुली हुई फैली-फैली आंखों में सितारे प्रतिबिम्बित हो रहे थे। उन्होंने उनके माथे छुए जो बहुत ठण्डे और रक्त से भीगे हुए थे जो रात के समय काला-काला दिखाई दे रहा था।

"तो यह हुआ! यह हुआ!" डाक्टर फुसफुसाये। "इसका मतलब है कि लोग हार गये... तो अब क्या होगा?"

आधे घण्टे बाद वे वहां पहुंचे जहां लोग दिखाई दिये। वे बहुत थक चुके थे, बेहद भूखे-प्यासे थे। शहर के इस हिस्से में हर दिन का सा दृश्य था।

डाक्टर चौराहे पर खड़े थे, काफ़ी देर तक चलते रहने के बाद थोड़ा दम लेते हुए सोच रहे थे –

"कैसी अजीब बात है! यहां रंग-बिरंगी बत्तियां जल रही हैं, घोड़ा-गाड़ियां आ-जा रही हैं, शीशे के दरवाज़े खुल और बन्द हो रहे हैं। अर्ध-गोलाकार खिड़कियों में से सुनहरी रोशनी छन रही है। वहां स्तम्भों के क़रीब जोड़े नाच रहे हैं। लोग नाच-रंग में डूबे हुए हैं। काले-काले पानी के ऊपर रंग-बिरंगी चीनी हांडियां घूम रही हैं। लोग उसी तरह से अपनी रास-रंग की दुनिया में मस्त हैं, जैसे एक दिन पहले थे। क्या वे यह नहीं जानते कि आज सुबह क्या काण्ड हुआ है? क्या उन्होंने गोलियों की ठांय-ठांय और लोगों की आहें-कराहें नहीं सुनीं? क्या उन्हें यह मालूम नहीं कि जन-नेता, हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को गिरफ़्तार कर लिया गया है? हो सकता है कि ऐसा कुछ भी न हुआ हो? शायद मैंने कोई भयानक सपना देखा हो?"

सड़क के नुक्कड़ पर एक लैम्प जल रहा था और पटरी के साथ घोड़ा-गाड़ियां क़तार बांधे खड़ी थीं। मालिनें गुलाब बेच रही थीं और कोचवान उनसे बातें कर रहे थे।

"उसके गले में फंदा डालकर नगर भर में से घसीटा गया। ओह, बेचारा!"

"अब उसे लोहे के पिंजरे में बन्द कर दिया गया है। पिंजरा तीन मोटों के महल

में रखा हुआ है," एक मोटे कोचवान ने कहा जो हल्के नीले रंग का फ़ीतेवाला ऊंचा टोप पहने था।

इसी समय एक महिला अपनी छोटी-सी बेटी के साथ मालिनों के पास फूल ख़रीदने के लिये आई।

"किसे बन्द कर दिया गया पिंजरे में?" महिला ने दिलचस्पी ली।

"हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को। सैनिकों ने उसे बन्दी बना लिया है।"

"शुक्र है भगवान का!" महिला ने कहा।

उसकी बेटी रोने लगी।

"अरी बुद्धू, तू किसलिये रोती है?" महिला को हैरानी हुई। "तू हथियारसाज़ प्रोस्पेरो के लिये दुखी होती है? उसके लिये दुखी होने की जरूरत नहीं। वह हमारा बुरा करना चाहता था... देख तो, कितने सुन्दर गुलाब के फूल हैं..."

गुलाब के बड़े-बड़े फूल खारे-से पानी और पत्तों से भरी रकाबियों में राजहंसों की भांति धीरे-धीरे तैर रहे थे।

"ये ले तीन गुलाब। रोने की कोई बात नहीं। वे लोग विद्रोही हैं। अगर उन्हें लोहे के पिंजरों में बन्द नहीं किया गया तो ये हमारे घर-बार, कपड़ों-लत्तों और गुलाबों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे और हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

इसी वक़्त एक छोकरा दौड़ता हुआ पास से गुज़रा। पहले तो उसने महिला के सितारों जड़े लबादे को खींचा और फिर लड़की की चोटी खींची।

"अरी ओ महारानी!" लड़का चिल्लाया। "अगर हथियारसाज़ प्रोस्पेरो पिंजरे में बन्द है तो क्या हुआ, नट तिबुल तो आज़ाद है!"

"ओह, शैतान!"

महिला ने पैर पटके और उसका पर्स नीचे गिर गया। मालिनें ठठाकर हंस पड़ीं। मोटे कोचवान ने इस शोर-शराबे से फ़ायदा उठाया और महिला से घोड़ा-गाड़ी में बैठकर चल देने का प्रस्ताव किया।

महिला और लड़की घोड़ा-गाड़ी में बैठकर चली गयीं।

"अरे, ज़रा सुन तो कूद-फांद करनेवाले!" एक मालिन ने लड़के को पुकारा। "इधर तो आ! तुझे जो कुछ मालूम है वह ज़रा हमें भी तो सुना..."

दो कोचवान अपनी ऊंची सीटों से नीचे उतरे और बड़े-बड़े पांच कालरों वाले अपने चोग़ों से उलझते हुए मालिनों के पास आये।

"यह हुआ न चाबुक! बढ़िया चाबुक!" उस लम्बे चाबुक की ओर देखते हुए लड़के ने सोचा जिसे कोचवान सटकारता था। लड़के का मन ऐसा चाबुक पाने के लिये ललक उठा मगर अनेक कारणवश उसके लिए ऐसा चाबुक पाना सम्भव नहीं था।

"हां, तो क्या कहा तू ने?" कोचवान ने भारी-भरकम आवाज़ में पूछा। "नट तिबुल आज़ाद है?"

"ऐसा सुनने में आया है। मैं बन्दरगाह पर गया था, वहीं ऐसा सुना..."

"क्या सैनिकों ने उसकी हत्या नहीं कर डाली?" दूसरे कोचवान की आवाज़ भी भारी-भरकम थी।

"नहीं, बड़े मियां... अरी सुन्दरी, मुझे एक गुलाब दे दे!"

"ठहर रे, उल्लू! पहले तू सारा क़िस्सा तो सुना..."

"हां। तो क़िस्सा यह है कि शुरू में सभी ने यह समझा कि नट तिबुल मारा गया। बाद में जब मुर्दों में उसे तलाश किया गया तो वह नहीं मिला।"

"क्या यह नहीं हो सकता कि उसे नहर में फेंक दिया गया हो?" कोचवान ने पूछा।

एक भिखमंगा भी बातचीत में शामिल हो गया।

"किसे फेंक दिया गया हो नहर में?" उसने पूछा। "नट तिबुल कोई बिल्ली का बच्चा थोड़े ही है। उसे डुबो देना ख़ाला जी का घर नहीं है। नट तिबुल ज़िन्दा है। बचकर भाग निकला!"

"तुम झूठ बक रहे हो, घनचक्कर!" कोचवान ने कहा।

"नट तिबुल ज़िन्दा है!" मालिनें ख़ुशी से चिल्ला उठीं।

छोकरे ने एक गुलाब झपटा और सिर पर पैर रखकर भाग चला। गीले फूल से पानी के छींटे डाक्टर पर जा गिरे। डाक्टर ने चेहरे से आंसुओं की तरह खारे छींटे पोंछे और भिखमंगे की बातें सुनने के लिये क़रीब जाकर खड़े हो गये।
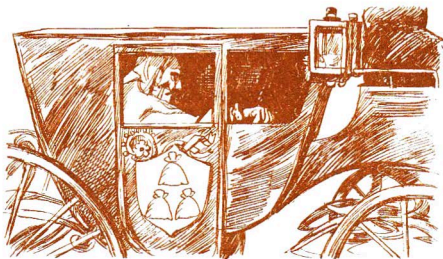
मगर इसी समय कुछ परिस्थितियों ने बातचीत में खलल डाल दिया। सड़क पर एक विचित्र-सा जुलूस प्रकट हुआ। आगे-आगे दो घुड़सवार थे, मशालें लिये हुए। मशालें दहकती हुई दाढ़ियों की तरह लहरा रही थीं। उनके पीछे-पीछे राज्यचिह्न वाली काली घोड़ा-गाड़ी धीरे-धीरे आ रही थी।

घोड़ा-गाड़ी के पीछे-पीछे चले आ रहे थे बढ़ई। कोई एक सौ।

बढ़ई अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाये हुए, काम में जुट जाने के लिये बिल्कुल तैयार थे। वे पेशबन्द बांधे थे, आरे और रन्दे उठाये हुए तथा बग़ल में औज़ारों के बक्से दबाये हुए थे। जुलूस के दोनों ओर सैनिक थे। उनके घोड़े तेज़ी से दौड़ने को उतावले थे और वे उनकी लगामें खींचकर उन्हें क़ाबू में रख रहे थे।

"यह कैसा जुलूस है? यह क्या मामला है?" राहगीरों ने उत्तेजित होते हुए एक दूसरे से पूछा।

राज्यचिह्न वाली घोड़ा-गाड़ी में तीन मोटों की परिषद् का एक कर्मचारी बैठा था। मालिनें डर गयीं। वे गालों पर हथेलियां रखे हुए उसके सिर को ताक रही थीं। उसका सिर शीशे के दरवाज़े में से नज़र आ रहा था। सड़क जगमग कर रही थी। काले विगवाला सिर ऐसे हिल रहा था मानो वह निर्जीव हो। ऐसा प्रतीत होता था मानो घोड़ा-गाड़ी में आदमी नहीं, कोई पक्षी बैठा हो।

"रास्ते से हट जाओ!" सैनिक चिल्लाये।

"बढ़ई कहां जा रहे हैं?" नाटी-सी मालिन ने सैनिकों के सरदार से पूछा।

सैनिकों का सरदार उसके चेहरे के निकट मुंह करके इतने ज़ोर से चीख़ा कि मालिन के बाल मानो हवा के झोंके से लहरा उठे—

"बढ़ई जल्लादों के तख़्ते बनाने जा रहे हैं। समझी? बढ़ई ऐसे दस तख़्ते बनायेंगे!"

"आ!"

मालिन के हाथ से रकाबी छूट गयी। गुलाब के फूल बिखर गये।

"वे जल्लादों के तख़्ते बनाने जा रहे हैं!" डाक्टर गास्पर ने भयभीत होते हुए दोहराया।

"हां, तख़्ते!" सैनिक ने घूमते और मूंछों के बीच से, जो बड़े-बड़े जूतों जैसी लगती थीं, दांत दिखाते हुए कहा। "सभी विद्रोहियों के लिए तख़्ते बनाये जायेंगे! सभी के सिर धड़ से अलग किये जायेंगे! उन सभी के जो तीन मोटों की सत्ता के विरुद्ध सिर उठायेंगे!"

डाक्टर का सिर चकराने लगा। उन्हें प्रतीत हुआ कि वे बेहोश हो जायेंगे।

"आज मुझे बहुत-सी परेशानियों का मुंह देखना पड़ा है," उन्होंने अपने आप से कहा। "इसके अलावा मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं और मैं बुरी तरह थक-टूट भी गया हूं। जल्दी से घर जाना चाहिए।"

वास्तव में ही डाक्टर को अब आराम करने की बड़ी ज़रूरत थी। वे उस दिन घटी घटनाओं, देखी और सुनी चीज़ों से इतने अधिक उत्तेजित थे कि बुर्ज के साथ नीचे आ गिरने, टोप, बरसाती, छड़ी और एड़ियां खो देने का भी उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रह गया था। ज़ाहिर है कि सबसे बुरी बात तो यह थी कि ऐनक से हाथ धो बैठे थे। सो वे एक बग्घी में बैठकर घर की ओर चल दिये।

तीसरा अध्याय

सितारे का चौक

डाक्टर अपने घर लौट रहे थे। बग्घी चौड़ी-चौड़ी पक्की सड़कों पर से जा रही थी। सड़कें दीवानख़ानों से भी ज़्यादा जगमगा रही थीं। बहुत ऊंचाई पर लैम्पों की श्रृंखला फैली हुई थी। लैम्प शीशे के ऐसे गोलों जैसे थे जिनमें मानो सफ़ेद उबला हुआ दूध भरा हो। लैम्पों के गिर्द ढेरों ढेर पतंगे उड़ रहे थे, हल्की-सी सरसराहट का गीत गुनगुनाते हुए जल रहे थे। बग्घी नदी के किनारेवाली सड़क पर जा रही थी, पथरीली दीवार के साथ-साथ। वहां कांसे के बबर पंजों में ढालें लिये लम्बी-लम्बी ज़बानें निकाले हुए थे। नीचे गाढ़ा-गाढ़ा पानी धीरे-धीरे बह रहा था, राल की तरह काला-काला और चमकदार। पानी में नगर उल्टा प्रतिबिम्बित हो रहा था, वह मानो तैरना चाहता था, मगर नहीं तैर पाता था और कोमल सुनहरे धब्बों में ही घुलकर रह जाता था। डाक्टर की बग्घी मेहराब की तरह ख़मदार पुलों के ऊपर से गुज़री। नीचे से अथवा दूसरे किनारे से वे उन बिल्लियों जैसे लग रहे थे जो झपटने से पहले अपनी लोहे की पीठों में ख़म डाल रही हों। यहां हर पुल के शुरू में सन्तरी नज़र आते थे। वे ढोलों पर बैठे हुए पाइपों से कश लगा रहे थे, ताश खेल रहे थे और तारों को ताकते हुए जम्हाइयां ले रहे थे। डाक्टर बग्घी में जा रहे थे, इधर-उधर देख रहे थे और आवाज़ों पर कान लगाए हुए थे।

गलियों, मकानों और शराबख़ानों की खुली खिड़कियों और मनोरंजन पार्कों से किसी गीत की बिखरी-बिखरायी पंक्तियां सुनाई दे रही थीं—

क़ैद किया प्रोस्पेरो को अब
बन्दी उसे बनाया।
बैठा लोहे के पिंजरे में
अब वह क़ाबू आया।।

नशे में धुत्त एक बांका-छैला भी इन्हीं पंक्तियों को दोहरा रहा था। इस बांके-छैले की मौसी चल बसी थी। मौसी के पास ढेरों रुपया था और उससे भी ज्यादा झांइयां थीं। नजदीकी रिश्तेदार उसका एक भी नहीं था। सो मौसी का सारा धन बांके को विरासत में मिल गया। इसीलिए अब वह इस बात पर झुंझला रहा था कि जनता ने धनियों की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊपर उठाया था।

चिड़ियाघर में बढ़िया तमाशा हो रहा था। लकड़ी के मंच पर तीन मोटे-मोटे और झबरीले बन्दर तीन मोटों के रूप में प्रस्तुत थे। एक कुत्ता मैंडोलीन पर धुन बजा रहा था।

सुर्ख पोशाक पहने, पीठ पर सुनहरा सूरज और पेट पर सुनहरा सितारा लगाये हुए एक मसखरा वाद्ययन्त्रों की संगत में इस कविता का पाठ कर रहा था —

गेहूं के बोरों से मोटे
तीनों लुढ़के जायें।
काम न कोई इन्हें और लो
केवल तोंद फुलायें।।
इनकी अरे समझ पथराई।
घड़ी आख़िरी आई।।

"घड़ी आख़िरी आई!" सभी ओर से दाढ़ियों वाले तोते चीख़ उठे।

भयानक शोर मच गया। पिंजरों में बन्द तरह-तरह के जानवर भौंकने, हूंकने, किकियाने और सीटियां बजाने लगे।

बंदर मंच पर इधर-उधर कूद-फांद रहे थे। उनकी टांगें कौन-सी हैं और हाथ कौन-से, यह समझ पाना कठिन था। वे दर्शकों के बीच कूद गये और इधर-उधर भागने लगे। दर्शक भी चीख़-चिल्ला रहे थे। जो मोटे थे, वे तो ख़ास तौर पर ख़ूब शोर मचा रहे थे। वे गुस्से से लाल पीले होते और कांपते हुए मसखरे पर टोपियां और दूरबीनें फेंक रहे थे। एक मोटी महिला ने मसखरे पर अपना छाता ताना, मगर पास बैठी हुई एक अन्य मोटी महिला की टोपी उसके साथ अटक कर सिर से उतर गयी।

"ऊई मां!" — दूसरी मोटी महिला ज़ोर से चिल्लाई, क्योंकि टोपी के साथ-साथ उसके बनावटी बाल भी उतर गये थे।

भागते हुए एक बन्दर ने इस महिला की चांद हथेली से थपथपा दी। वह तो वहीं बेहोश हो गयी।

"हा-हा-हा!"

"हा-हा-हा!" अन्य दर्शक जो दुबले-पतले थे और कुछ घटिया कपड़े पहने थे ज़ोरों के ठहाके लगा रहे थे। "शाबाश! शाबाश! इनकी ऐसी की तैसी! तीन मोटे मुर्दाबाद! प्रोस्पेरो ज़िन्दाबाद! तिबुल ज़िन्दाबाद! जनता ज़िन्दाबाद!"

इसी समय किसी ने बहुत ज़ोर से चीखकर कहा –

"आग लग गई! शहर जला जा रहा है..."

सभी लोग बाहर भाग चले, धक्कम-पेल करते, बेंचों को उलटते-पलटते। चिड़ियाघर के चौकीदार इधर-उधर भागते हुए बन्दरों को पकड़ने लगे।

कोचवान ने चाबुक से सामने की ओर इशारा करते हुए डाक्टर से कहा –

"सैनिक मज़दूरों के मुहल्लों को आग लगा रहे हैं। वे नट तिबुल को पकड़ना चाहते हैं..."

नगर के ऊपर, काले-काले मकानों के ढेर के ऊपर आग की लाल-लाल लपटें दिखाई दे रही थी।

जब यह बग्घी, जिसमें डाक्टर घर जा रहे थे, नगर के मुख्य चौक – सितारे के चौक – में पहुंची, तो उसके लिए आगे जाना असम्भव हो गया। वहां ढेरों घोड़ा-गाड़ियां और कोचें थीं, घुड़सवारों और पैदल चलनेवालों की भारी भीड़ जमा थी।

"यहां क्या क़िस्सा है?" डाक्टर ने पूछा।

मगर किसी ने भी इस सवाल का जवाब नहीं दिया – सभी लोग चौक में घट रही घटना को देखने में इतने अधिक खोये हुए थे। कोचवान भी अपनी सीट पर खड़ा होकर उधर ही देखने लगा।

इस चौक का नाम सितारे का चौक क्यों पड़ा, इसकी भी कहानी है। इस चौक के सभी ओर बहुत बड़े-बड़े, समान ऊंचाई और बनावट वाले मकान थे जो ऊपर से शीशे के गुम्बज से ढके हुए थे। इस तरह यह चौक सरकस के एक विराटकाय मंडप जैसा प्रतीत होता था। गुम्बज के बीच में बहुत ही अधिक ऊंचाई पर दुनिया का सबसे बड़ा लैम्प जलता रहता था। यह आश्चर्यजनक बड़े आकार का शीशे का गोला था। इसके चारों ओर लोहे का चक्र था। वह बहुत ही मज़बूत तारों के सहारे लटका हुआ था और शनिग्रह जैसा प्रतीत होता था। पृथ्वी पर इसके समान दूसरी रोशनी नहीं थी। इसीलिए लोगों ने इस लैम्प को "सितारे" की संज्ञा दे दी थी। इस तरह इस सारे चौक का यही नाम पड़ा गया।

चौक, मकानों और आसपास की गलियों को और रोशनी की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। यह सितारा पत्थर की ऊंची दीवार की तरह खड़े मकानों की सभी गलियों, सभी कोनों और सभी कोठरियों में रोशनी पहुंचाता था। यहां लोगों का लैम्पों और मोमबत्तियों के बिना काम चल जाता था।

कोचवान घोड़ा-गाड़ियों, कोचों और कोचवानों के ऊंचे टोपों, जो दवाख़ानों की शीशियों के सिरों जैसे थे, के ऊपर से नज़र दौड़ा रहा था।

"आपको क्या दिखाई दे रहा है? वहां क्या हो रहा है?" कोचवान के पीछे से झांकते और उत्तेजित होते हुए डाक्टर ने पूछा। नाटे क़द के डाक्टर को कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। उनकी नज़र भी कमज़ोर थी।

कोचवान ने जो कुछ देखा था, सब कह सुनाया। यह कुछ देखा था उसने।

चौक में बहुत हलचल थी। विराट गोलाकार विस्तार में लोग इधर-उधर दौड़-धूप कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो चौक का घेरा हिंडोले की तरह घूम रहा था। जो कुछ ऊपर हो रहा था उसे अधिक अच्छी तरह देख पाने के लिए लोग लगातार इधर-उधर भाग-दौड़ रहे थे।

ऊंचाई पर लटका हुआ लैम्प सूरज की तरह आंखों को चकाचौंध कर रहा था। ऊपर को मुंह उठाये हुए लोग हथेलियों से आंखों पर ओट किये थे।

"वह रहा! वह रहा!" लोग चीख़ उठे।

"वह देखिये! वहां!"
"कहां? कहां है?"
"वहां, काफ़ी ऊंचाई पर!"
"तिबुल! तिबुल!"

सैकड़ों उंगलियों ने बाईं ओर संकेत किया। वहां साधारण मकान था। मगर छहों मंज़िलों की सभी खिड़कियां चौपट खुली हुई थीं। हर खिड़की में से सिर बाहर निकले हुए थे। वे एक दूसरे से भिन्न नज़र आ रहे थे। कुछ सिरों पर फुंदने वाले रात्रिकालीन टोपे थे; कुछ नारियां अपने सिरों पर गुलाबी बॉनेट टोपी पहने थीं जिनमें से भूरे घुंघराले बाल बाहर

निकले हुए थे ; कुछ रूमाल बांधे थीं ; कुछ ऊपरवाले कमरों में जहां युवा ग़रीब कवि, चित्रकार और अभिनेता रहते थे, सिगरेट के धुएं के बादलों में खोये हुए सफ़ाचट दाढ़ी-मूंछवाले खुशमिज़ाज चेहरे और नारियों के सिर भी दिखायी दे रहे थे। उनके सुनहरे चमकदार बाल इस तरह फैले हुए थे मानो उनके कंधों पर पंख लगे हुए हों। यह घर, जिसकी सलाखों वाली खिड़कियां खुली हुई थीं और जिनसे रंग-बिरंगे सिर बाहर झांक रहे थे, एक बड़े पिंजरे जैसा प्रतीत हो रहा था, जिसमें पपीहे भरे हुए हों। इन सिरों के स्वामी छत पर घटनेवाली किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना को देखने की कोशिश कर रहे थे। यह उतना ही असम्भव था जितना कि दर्पण के बिना अपने कान देख पाना। अपने मकान की छत देखने को उत्सुक लोगों के लिए चौक में जमा उन्मत्त भीड़ दर्पण का काम दे रही थी। चौक में जमा भीड़ सभी कुछ देख रही थी, शोर मचा रही थी और हाथ हिला रही थी। कुछ लोगों की खुशी का कोई ठिकाना न था, दूसरे गुस्से से आग-बबूला हुए जा रहे थे।

छत पर एक छोटी-सी आकृति हिलती-डुलती नज़र आ रही थी। वह धीरे-धीरे, सावधानी और विश्वास के साथ मकान के तिकोने ढालू शिखर से नीचे की ओर आ रही थी। उसके पैरों के नीचे टीन बज रहा था।

यह आकृति अपना सन्तुलन बनाये रखने के लिए लबादे को इधर-उधर हिला रही थी, ठीक उसी तरह, जैसे सरकस में रस्से पर चलनेवाला कलाकार सन्तुलन के लिए पीली चीनी छतरी का उपयोग करता है।

यह था नट तिबुल।

लोग चिल्ला उठे –

"शाबाश तिबुल! शाबाश तिबुल!"

"सम्भलकर बढ़ते जाओ! याद कर लो कि कैसे तुम मेले में रस्से पर चला करते थे..."

"अरे, वह गिरनेवाला आदमी नहीं! वह हमारे देश का चोटी का नट है..."

"उसके लिए यह कोई नई चीज़ नहीं है। हम अपनी आंखों से देख चुके हैं कि वह रस्से पर चलने की कला में कितना अधिक माहिर है..."

"शाबाश तिबुल!"

"भाग जाओ! बच निकलो! प्रोस्पेरो को आज़ाद कराओ!"

कुछ दूसरे लोग लाल-पीले हो रहे थे। वे घूंसे दिखाते हुए चिल्ला रहे थे –

"अब तू बचकर कहीं नहीं भाग सकेगा, उल्लू मसख़रे!"

"शैतान का चर्खा!"

"बाग़ी! तुझे ख़रगोश की तरह गोली का निशाना बनाया जायेगा..."

"कान खोलकर सुन ले! हम तुझे छत से जल्लाद के तख़्ते पर खींच ले जायेंगे। कल दस तख़्ते तैयार हो रहे हैं!"

तिबुल खतरनाक फ़ासला तय करता गया।

"अरे, यह यहां आ कैसे गया?" लोग पूछ रहे थे। "वह इस चौक में कैसे आ धमका? छत पर कैसे जा चढ़ा?"

"वह सैनिकों के हाथों से बच निकला," दूसरों ने जवाब दिया। "वह भागा, ओझल हो गया और फिर नगर के विभिन्न स्थानों पर दिखाई दिया, एक छत से दूसरी पर कूदता गया। वह तो बिल्ली की तरह फुर्तीला है। उसका हुनर आज उसके दाम आ गया। ऐसे ही तो देश भर में उसकी ख्याति नहीं हो गयी!"

चौक में सैनिक आ गये। लोग आस-पास की गलियों में भाग गये। तिबुल रेलिंग लांघकर छत के किनारे पर जा खड़ा हुआ। उसने अपना हाथ फैला दिया जिसके गिर्द लबादा लिपटा हुआ था। हरा लबादा झंडे की भांति लहरा उठा।

मेले-ठेले के खेल-तमाशों और रविवारीय सैर-सपाटों के समय लोग तिबुल को इसी लबादे और पीले तथा काले तिकोने टुकड़ों से सिली बिरजस पहने हुए देखने के आदी थे। अब ऊंचाई पर शीशे के गुम्बज के नीचे छोटा-सा, दुबला-पतला और धारीदार तिबुल भिड़ जैसा लग रहा था जो मकान की सफ़ेद दीवार पर रेंग रही हो। जब लबादा हवा में फड़फड़ाता तो ऐसे लगता कि भिड़ ने अपने चमकदार हरे पंख फैला दिये हों।

"अभी तू नीचे आ गिरेगा, जहन्नुमी कीड़े! अभी तुझे गोली का निशाना बना दिया जायेगा!" झाइयों वाली मौसी से बहुत-सा धन विरासत में पा जानेवाले और नशे में धुत्त बांके-छैले ने चिल्लाकर कहा।

सैनिकों ने अपने मोर्चे साध लिये। उनका अफ़सर गुस्से से भुनभुनाता हुआ इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहा था। उसके हाथ में पिस्तौल थी। उसकी एड़ियां स्लेज की पटरियों की तरह लम्बी थीं।

एकदम गहरा सन्नाटा छा गया। डाक्टर ने अपना दिल थाम लिया जो उबलते हुए पानी में अंडे की तरह उछल रहा था।

तिबुल क्षण भर के लिए छत के सिरे पर रुका रहा। उसे सामनेवाली दिशा में पहुंचना था। तब वह सितारे के चौक से मजदूरों के मुहल्लों में भाग सकता था।

अफ़सर पीले और नीले फूलों की क्यारी के बीचोंबीच खड़ा था। उसकी बगल में तालाब था और पत्थर के गोल प्याले से फ़व्वारा छूट रहा था।

"ज़रा रुको!" अफ़सर ने सैनिकों से कहा। "मैं खुद इस पर गोली चलाऊंगा। मैं अपनी रेजिमेन्ट का सबसे अच्छा निशानेबाज़ हूं। ज़रा ग़ौर से देखना कि कैसे गोली चलाई जाती है!"

चौक के गिर्द बने नौ मकानों से गुम्बज के मध्य में, यानी सितारे की ओर
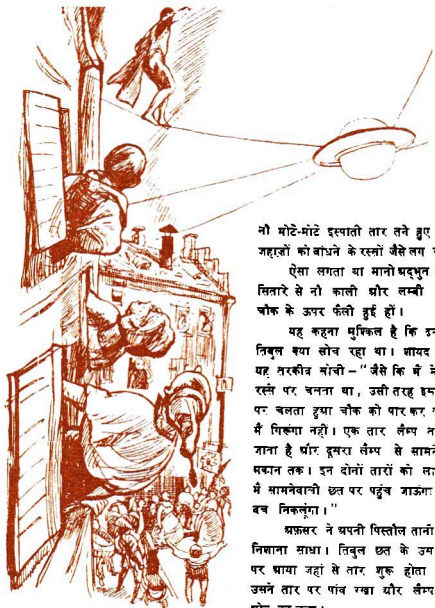
नौ मोटे-मोटे इस्पाती तार तने हुए थे जो जहाज़ों को बांधने के रस्सों जैसे लग रहे थे।

ऐसा लगता था मानो अद्भुत दमकते सितारे से नौ काली और लम्बी किरणें चौक के ऊपर फैली हुई हों।

यह कहना मुश्किल है कि इन क्षण तिबुल क्या सोच रहा था। शायद उसने यह तरकीब सोची – "जैसे कि मैं मेले में रस्से पर चलता था, उसी तरह इस तार पर चलता हुआ चौक को पार कर लूंगा। मैं गिरूंगा नहीं। एक तार लैम्प तक ले जाता है और दूसरा लैम्प से सामनेवाले मकान तक। इन दोनों तारों को लांघकर मैं सामनेवाली छत पर पहुंच जाऊंगा और बच निकलूंगा।"

अफ़सर ने अपनी पिस्तौल तानी और निशाना साधा। तिबुल छत के उस सिरे पर आया जहां से तार शुरू होता था। उसने तार पर पांव रखा और लैम्प की ओर बढ़ चला।

लोगों ने दम साध लिया।

वह कभी तो बहुत धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता, कभी बहुत तेज़ी से, लगभग भागते हुए। वह अपने हाथ फैलाकर ख़ुद को संतुलित करता। हर घड़ी ऐसे लगता कि वह गिरा कि गिरा। अब उसकी छाया दीवार पर झलकने लगी। वह लैम्प के जितना अधिक निकट होता जाता था, उसकी परछाईं दीवार पर नीची, बड़ी और पीली होती जाती थी।

चौक नीचे बहुत दूरी पर था।

लैम्प की दूरी जब आधी रह गयी, तो गहरी ख़ामोशी में अफ़सर की आवाज़ गूंज उठी –

"मैं अब गोली चलाता हूं। वह सीधा तालाब में जा गिरेगा। एक, दो, तीन!"

गोली चलने की आवाज़ गूंज उठी।

तिबुल आगे बढ़ता रहा, मगर न जाने क्यों अफ़सर धड़ाम से तालाब में जा गिरा। उसे गोली मार दी गयी थी।

एक सैनिक के हाथ में पिस्तौल थी जिससे नीला धुआं निकल रहा था। उसी ने अफ़सर को गोली मारी थी।

"कुत्ते का पिल्ला!" सैनिक ने कहा। "तू जनता के हमदर्द को मारना चाहता था। मैंने तेरा इरादा नाकाम बना दिया। जनता ज़िन्दाबाद!"

"जनता ज़िन्दाबाद!" दूसरे सैनिकों ने उसका समर्थन किया।

"तीन मोटे ज़िन्दाबाद!" उनके विरोधी चिल्लाये।

वे सभी दिशाओं में फैल गये और तार पर चले जा रहे तिबुल पर गोलियां बरसाने लगे।

तिबुल अब लैम्प से दो क़दमों की दूरी पर था। वह अपना लबादा हिलाकर लैम्प की जगमगाहट से आंखों को बचा रहा था। गोलियां उसके आस-पास से गुज़र रही थीं। लोग ख़ुशी से चिल्ला रहे थे।

ठांय! ठांय!

"निशाने चूक रहे हैं!"

"हुर्रा! निशाने चूक रहे हैं!"

तिबुल ने लैम्प के गिर्द लगे हुए लोहे के चक्र पर पांव रखा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं!" विरोधी दल के सैनिकों ने धमकी दी। "वह उधर सामने की ओर जायेगा... वह दूसरे तार पर से गुज़रेगा। हम वहां से उसे नीचे मार गिरायेंगे!"

इसी क्षण एक ऐसी बात हुई जिसकी किसी ने भी आशा नहीं की थी। धारीदार आकृति जो लैम्प के निकट होने पर काली नज़र आने लगी थी, लोहे के चक्र के सिरे पर बैठ गयी,

उसने कोई पुर्ज़ा घुमाया, सूं-सूं और फिर फक की आवाज़ हुई और लैम्प आन की आन में बुझ गया। किसी के मुंह से एक बोल तक न फूट पाया। सन्दूक के भीतर गायी जानेवाली भयानक ख़ामोशी और भयानक अंधेरे का सा वातावरण हो गया।

अगले क्षण बहुत ऊंचाई पर कुछ टक-टक और टन-टन हुई। अन्धकारपूर्ण गुम्बज में हल्की रोशनी का एक धब्बा-सा दिखाई दिया। सभी को थोड़ा-सा आकाश और उसमें दो सितारे नज़र आये। इसके बाद इस गगनचुम्बी सूराख़ में से एक काली आकृति रेंगकर बाहर निकली। फिर शीशे के गुम्बज पर किसी के तेज़ी से भागने की आवाज़ सुनाई दी।

नट तिबुल इस सूराख़ में से बच निकला था।

गोलियां चलने और अचानक अंधेरा हो जाने से घोड़े डर गये थे।

डाक्टर की बग्घी तो उलटते-उलटते बची। कोचवान ने लगामें कसकर घोड़ों को क़ाबू में किया और घुमावदार रास्ते से डाक्टर को घर ले चला।

इस तरह एक ग़ैरमामूली दिन और ग़ैरमामूली रात बिताकर आख़िर डाक्टर गास्पर आर्नेरी घर लौटे। उनकी नौकरानी, मौसी गानीमेड ओसारे में ही उससे मिली। वह बहुत परेशान नज़र आ रही थी। डाक्टर इतनी देर तक घर नहीं लौटे थे! मौसी गानीमेड ने हाथ नचाये, गहरी सांस ली और सिर हिलाते हुए कहा—

"आपका चश्मा कहां गया? टूट गया? आह, डाक्टर, प्यारे डाक्टर! आपकी बरसाती कहां गयी? खो गयी? ओह, ओह!"

"मौसी गानीमेड, इतना ही नहीं, मेरी दोनों एड़ियां भी टूट गयी हैं..."

"ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ!"

"आज तो इस से भी ज़्यादा बुरी बात हुई है मौसी गानीमेड: हथियारसाज़ प्रोस्पेरो बन्दी बना लिया गया। उसे लोहे के पिंजरे में बन्द कर दिया गया।"

मौसी गानीमेड को कुछ भी मालूम नहीं था कि दिन को क्या कुछ हुआ था। हां, उसने तोपों की गरज सुनी थी, मकानों के ऊपर लाल लपटें देखी थीं। पड़ोसिन ने उसे बताया था कि बड़ई अदालत चौक में विद्रोहियों के सिर काटने के लिए जल्लादों के तख़्ते बना रहे हैं।

"मुझे बहुत डर महसूस हुआ। मैंने खिड़कियां बन्द कर ली और सोच लिया कि बाहर नहीं जाऊंगी। हर घड़ी मैं आपके आने की उम्मीद करती रही। बहुत ही परेशान रही... दोपहर का खाना ठंडा हो गया, शाम के खाने का भी वक़्त गुज़र गया, मगर आप नहीं लौटे..." उसने कहा।

रात बीत चुकी थी। डाक्टर सोने की तैयारी करने लगे।

डाक्टर ने जो सौ विद्यायें पढ़ी थीं, उनमें इतिहास भी शामिल था। उनके पास चमड़े की जिल्दवाली एक बड़ी कापी थी। इस कापी में वे महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में अपनी राय लिखा करते थे।

"आदमी को हर चीज़ वक़्त पर करनी चाहिए," डाक्टर ने उंगली ऊपर उठाते हुए कहा।

थकान की परवाह न करते हुए डाक्टर ने चमड़े की जिल्दवाली कापी उठाई, मेज़ पर जा बैठे और लिखने लगे।

"कारीगरों, खान-मजदूरों और जहाज़ियों, – यानी नगर के सभी ग़रीब लोगों ने तीन मोटों की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया है। सैनिकों की जीत हुई। हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को क़ैद कर लिया गया और नट तिबुल भाग गया। अभी, कुछ ही समय पहले सितारे के चौक में एक सैनिक ने अपने अफ़सर को गोली से उड़ा दिया। इसका मतलब यह है कि जल्द ही सभी सैनिक जनता के विरुद्ध लड़ने और तीन मोटों की रक्षा करने से इन्कार कर देंगे। मुझे केवल तिबुल के बारे में चिन्ता हो रही है..."

इसी क्षण डाक्टर को अपने पीछे सरसराहट-सी सुनाई दी। उन्होंने घूमकर देखा। उस ओर अंगीठी थी। अंगीठी में से हरा लबादा पहने हुए एक लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति बाहर आया। यह था नट तिबुल।

दूसरा भाग

उत्तराधिकारी टूटी की गुड़िया

गुब्बारेवाले के साथ क्या कुछ बीती

अगले दिन अदालत चौक में ज़ोरों से काम हो रहा था। वहां जल्लादों के दस तख़्ते बनाये जा रहे थे। सैनिक काम की निगरानी कर रहे थे। बढ़ई मन मारकर काम कर रहे थे।

"हम कारीगरों और खान-मज़दूरों के सिर काटने के लिए तख़्ते नहीं बनाना चाहते!" उन्होंने गुस्से से कहा।

"वे हमारे भाई हैं!"

"उन्होंने इसलिए अपनी जान की बाज़ी लगाई कि सभी मेहनतकशों को आज़ादी मिल सके!"

"चुप रहो!" सैनिकों का सरदार ऐसे ज़ोर से चिल्लाया कि दीवार के सहारे खड़े किये हुए तैयार तख़्ते नीचे जा गिरे। "चुप रहो, वरना मैं तुम्हें कोड़े लगवाऊंगा!"

सुबह से ही विभिन्न दिशाओं से लोग भारी संख्या में अदालत चौक की ओर आने लगे थे।

तेज़ हवा चल रही थी, धूल के बादल उड़ रहे थे, दूकानों के साइनबोर्ड हिल-डुल और खटखटा रहे थे, सिरों से टोपियां उड़कर घोड़ा-गाड़ियों के पहियों के नीचे लुढ़क रही थीं।

एक जगह पर तो हवा के कारण बहुत ही अनहोनी बात हो गयी – गुब्बारे एक गुब्बारे बेचनेवाले को ले उड़े।

"हुर्रा! हुर्रा!" इस अनोखी उड़ान को देखते हुए बालक चिल्ला उठे।

बालकों ने ख़ुश होते हुए ख़ूब ज़ोर से तालियां बजायीं। बात यह है कि यह दृश्य तो वैसे ही बहुत दिलचस्प था और फिर गुब्बारे बेचनेवाले को ऐसी अटपटी स्थिति में देखकर बालकों को वैसे भी बहुत ख़ुशी हुई। वह इसलिये कि बालकों को हमेशा इस गुब्बारे बेचनेवाले से ईर्ष्या होती थी। ईर्ष्या करना बुरी बात है। मगर किया भी क्या जाये! लाल, नीले और पीले गुब्बारे तो बरबस बालकों का मनमोह लेते। हर बालक चाहता कि उसके पास भी एक ऐसा गुब्बारा हो। गुब्बारे बेचनेवाले के पास तो ढेरों गुब्बारे होते थे। मगर करिश्मे

तो कभी नहीं होते ! बहुत ही आज्ञाकारी लड़के और बहुत ही दयालु लड़की को भी उसने अपने जीवन में कभी एक बार भी लाल, नीला या पीला गुब्बारा भेंट नहीं किया था।

अब उसे ऐसा संगदिल होने की सज़ा मिली थी। वह गुब्बारों वाली रस्सी के साथ लटका हुआ शहर के ऊपर उड़ रहा था। चमकते और ऊंचे नीलाकाश में उड़ते हुए गुब्बारे जादुई अंगूरों के रंग-बिरंगे गुच्छे जैसे प्रतीत हो रहे थे।

"बचाओ!" गुब्बारे बेचनेवाला चिल्ला रहा था। मगर उसे मदद मिलने की कोई आशा नहीं थी और वह अपनी टांगों को ज़ोरों से इधर-उधर झटक रहा था।

गुब्बारे बेचनेवाला अपने पैरों में घास-फूस के और माप से बड़े जूते पहने हुए था। जब तक वह ज़मीन पर था, सब ठीक-ठाक था। इसलिये कि जूते पैर से निकल न जायें, वह पटरियों पर चलता हुआ आलसी व्यक्ति की तरह पैरों को घसीटता रहता था। मगर अब जब वह हवा में उड़ रहा था, तो यह तिकड़म उसके काम न आ सकती थी।

"ओह, बेड़ा ग़र्क़!"

उड़ते हुए और एक दूसरे से रगड़ खाते हुए गुब्बारे हवा में कभी एक तरफ़ को हो जाते थे, कभी दूसरी तरफ़ को।

आख़िर एक जूता उसके पैर से उतरकर नीचे गिर ही गया।

"अरे वह देखो! मूंगफली! मूंगफली!" नीचे भागते हुए बालक चिल्लाये।

वास्तव में ही नीचे गिरता हुआ जूता मूंगफली की याद दिलाता था।

इसी समय सड़क पर नृत्य का शिक्षक चला जा रहा था। बहुत ही बांका-सजीला था वह। लम्बा क़द, छोटा-सा गोल-मटोल सिर और पतली-पतली टांगें, वायलिन या टिड्डे से मिलता-जुलता। उसके कोमल कान बांसुरी की दर्दीली तान और नर्तकों के नाज़ुक शब्द सुनने के आदी थे। बालकों की ख़ुशी भरी किलकारियां और हो-हल्ला वह कैसे सहन करता!

"चीख़ना-चिल्लाना बन्द करो!" उसने बिगड़ते हुए बालकों से कहा। "ऐसे भी कहीं शोर मचाया जाता है! ख़ुशी को ख़ूबसूरत और मधुर वाक्यों में व्यक्त करना चाहिये... मिसाल के तौर पर..."

उसने मुद्रा बनाई, मगर मिसाल पेश करने की नौबत न आ पायी। नृत्य के सभी अध्यापकों की तरह उसे भी पैरों की ओर ही देखने की आदत पड़ी हुई थी। हाय, अफ़सोस! ऊपर क्या हो रहा था, इसकी तरफ़ उसका ध्यान नहीं गया।

गुब्बारे बेचनेवाले का जूता उसके सिर पर आ पड़ा। उसका सिर छोटा-सा था, इसलिये घास-फूस का बड़ा-सा जूता उसके सिर पर टोप की तरह आकर टिक गया।

अब यह नृत्य का सजीला अध्यापक गाय की तरह रम्भाने लगा। जूते से उसका आधा चेहरा ढंक गया।
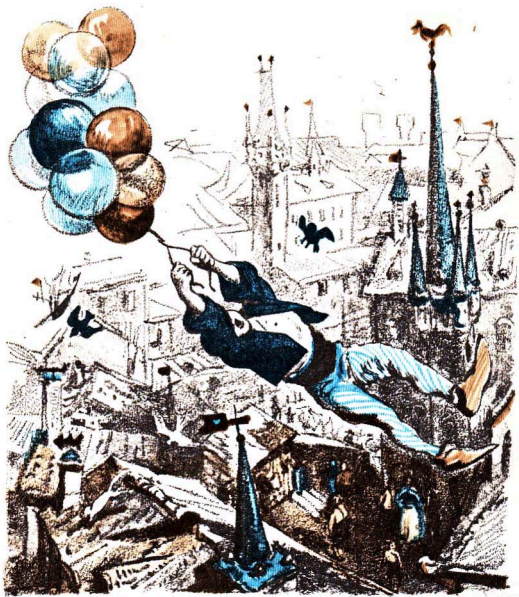
बालक तो हंसी के मारे लोट-पोट होने लगे—
"हा-हा-हा! हा-हा-हा!"

नाच का शिक्षक, एक-दो-तीन
चलता नज़र झुकाये।
नाक बड़ी लम्बी-सी उसकी
चूहे-सा किकियाये।।
सिर पर टिका फूस का जूता
शोभा कही न जाये।

बाड़ पर बैठे हुए लड़कों ने सुर मिलाकर उक्त पंक्तियां गायीं। वे किसी भी क्षण बाड़ के दूसरी ओर कूदने और नौ-दो-ग्यारह हो जाने को तैयार थे।

"आह!" नृत्य के शिक्षक ने आह भरी। "आह, कितने दुख की बात है! बॉल-नाच का जूता होता, तब भी कोई बात थी! मेरी क़िस्मत में घास-फूस का ऐसा गन्दा ही जूता रह गया था!"

आखिर हुआ यह कि नृत्य के शिक्षक को गिरफ़्तार कर लिया गया।

"ए हज़रत," उसे डांटा गया, "कैसी भयानक सूरत बनाये फिर रहे हो। तुम समाज की शान्ति-भंग कर रहे हो। ऐसी हरकत तो वैसे ही कभी नहीं करनी चाहिये, और आजकल के ख़तरनाक वक़्त में तो भूलकर भी नहीं।"

नृत्य के शिक्षक ने हाथ मले।

"कैसा सफ़ेद झूठ है यह!" उसने रोते और दुहाई देते हुए कहा। "उफ़, कैसी ग़लतफ़हमी हो गयी है! वाल्ज़ नृत्यों और मुस्कानों की दुनिया में रहनेवाला, मेरे जैसा सजीला-छबीला व्यक्ति—क्या वह भी समाज की शान्ति-भंग कर सकता है? हाय! हाय!"

नृत्य के शिक्षक के साथ आगे क्या बीती, यह हमें मालूम नहीं। फिर हमें इसमें ख़ास दिलचस्पी भी नहीं है। हमारे लिये तो यह जानना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हवा में उड़ते हुए गुब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ।

वह कुकरौंधा फूल की पंखुड़ी की तरह उड़ रहा था।

"यह तो सरासर बदतमीज़ी है!" गुब्बारे बेचनेवाला चिल्ला रहा था। "मैं बिल्कुल उड़ना नहीं चाहता! मुझे तो उड़ना ही नहीं आता..."

मगर उसकी चीख़-पुकार बेसूद रही। हवा और भी तेज़ हो गयी। गुब्बारों का गुच्छा अधिकाधिक ऊंचा होता गया। हवा उसे नगर के बाहर, तीन मोटों के महल की ओर उड़ाये लिये जा रही थी।

गुब्बारे बेचनेवाले को कभी-कभी नीचे की भी झलक मिल जाती। नीचे उसे छतें, नाखूनों की तरह गन्दी-मन्दी टाइलें, साथ-साथ सटे हुए मकान, नीले पानी की संकरी पट्टी, खिलौनों-से लोग और बाग़-बगीचों के हरे-हरे धब्बे नज़र आते। नगर उसे मानो बकसुए में टंगा हुआ घूमता-सा लगता था।

हालत ने और भी ख़तरनाक रुख़ अपनाया।

"कुछ देर अगर और इसी तरफ़ उड़ता गया, तो मैं तीन मोटों के पार्क में जा गिरूंगा!" गुब्बारे बेचनेवाला यह सोचकर कांप उठा।

अगले ही क्षण उसने अपने को धीरे-धीरे, बड़ी अदा और ख़ूबसूरती से पार्क के ऊपर उड़ते पाया। वह अधिकाधिक नीचे आता जाता था। हवा का ज़ोर कम हो गया था।

"मैं अब ज़मीन पर पहुंचा कि पहुंचा! मुझे पकड़ लिया जायेगा। पहले तो वे

कसकर मेरी पिटाई करेंगे और फिर जेल में बन्द कर देंगे। यह भी हो सकता है कि सभी तरह के झंझट से बचने के लिये फ़ौरन सिर ही क़लम कर दें।"

किसी ने उसे नहीं देखा। हां, एक वृक्ष पर बैठे हुए पक्षी अवश्य डरकर सभी दिशाओं में उड़ गये। उड़ते हुए रंग-बिरंगे गुब्बारों की हल्की-सी परछाईं पड़ रही थी, बादलों की परछाईं जैसी। प्यारे-प्यारे इन्द्रधनुष जैसे रंगों की यह परछाईं बजरी बिछे मार्ग, फूलों की क्यारी, हंस के ऊपर बैठे हुए एक लड़के की मूर्त्ति और ड्यूटी पर खड़े सन्तरी के ऊपर से तैरती हुई गुजरी। इस रंग-बिरंगी छाया से सन्तरी के चेहरे पर कमाल के परिवर्त्तन हुए। उसकी नाक मुर्दे की नाक की तरह नीली, मदारी की नाक की तरह हरी और फिर शराबी की नाक की तरह लाल हुई। कालेंद्स्कोप में शीशे के रंग-बिरंगे टुकड़े भी इसी तरह रंग बदलते हैं।

खतरनाक घड़ी नजदीक आती जा रही थी। हवा गुब्बारे बेचनेवाले को महल की खुली हुई खिड़कियों की तरफ़ उड़ा ले चली। उसे तनिक भी सन्देह नहीं था कि वह क्षण भर में रुई के गाले की तरह किसी खिड़की में से अन्दर जा गिरेगा।

ऐसा ही हुआ भी।

गुब्बारे बेचनेवाला एक खिड़की में से अन्दर जा गिरा। यह महल के रसोईघर की खिड़की थी। यहां मिठाइयां बनाई जा रही थीं।

उस दिन तीन मोटों के महल में इस बात की ख़ुशी में शानदार दावत हो रही थी कि एक दिन पहले हुई बग़ावत को कामयाबी से कुचल दिया गया था। दावत के बाद तीनों मोटे, राज्य परिषद् के सभी सदस्य, दरबारी और सम्मानित मेहमान अदालत चौक में जानेवाले थे।

प्यारे पाठको, महल के मिठाईघर में जा पहुंचने की तो कल्पना करते ही मुंह में बरबस पानी भर आता है। यह तो मोटे ही बता सकते थे कि वहां कैसी कैसी चटख़ारेवाली चीज़ें बनती थीं। फिर आज तो ख़ास दिन था। शानदार दावत का दिन! आप कल्पना कर सकते हैं कि रसोइये और हलवाई क्या-क्या कमाल दिखा रहे होंगे।

मिठाईघर में जाकर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले को जहां डर लगा, वहां ख़ुशी भी हुई। शायद भिड़ को डर और ख़ुशी की ऐसी ही अनुभूति उस समय होती है जब वह किसी लापरवाह गृहिणी द्वारा खिड़की में रख दिये केक के ऊपर मंडराती है।

वह बहुत तेजी से उड़ता हुआ भीतर आया और इसलिये ढंग से अपने इर्दगिर्द नजर न डाल सका। शुरू में तो उसे ऐसे लगा कि वह ऐसी जगह पर आ गिरा है जहां उष्ण देशों के अद्भुत, रंग-बिरंगे और दुर्लभ परिन्दे बन्द हैं; वे फुदकते हैं, चहचहाते हैं, चीं-चीं करते और सीटियां बजाते हैं। मगर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि यह पक्षीघर नहीं, फलों की दूकान है जहां तरह-तरह के उष्णदेशीय फल रखे हुए हैं, पके हुए और रसीले।

सिर चकरानेवाली मीठी-मीठी सुगंध उसकी नाक में घुस गयी। गर्मी और घुटन से उसका दम घुटने लगा।

मगर इसी क्षण सब कुछ गड़बड़ हो गया – अद्भुत पक्षीघर भी और फलों की दूकान भी।

गुब्बारे बेचनेवाला पूरे का पूरा किसी नर्म-गर्म चीज़ पर जा बैठा। गुब्बारे उसने हाथ से नहीं छोड़े, कसकर पकड़े रहा। वे उसके सिर के ऊपर निश्चल खड़े हो गये।

उसने ख़ूब ज़ोर से आंखें भींच लीं। यह सोच लिया कि किसी भी क़ीमत पर आंखें नहीं खोलेगा।

"अब मैं सब कुछ समझ गया," उसने सोचा। "यह न तो पक्षीघर है और न फलों की दूकान। यह तो मिठाईघर है और मैं केक के ऊपर बैठा हूं!"

सचमुच ऐसा ही था भी।

वह चाकलेट, माल्टों, अनारों, क्रीमों, पिसी हुई चीनी और मुरब्बों के साम्राज्य में बैठा था, रंग-बिरंगे और प्यारी-प्यारी सुगन्धवाले साम्राज्य के सिंहासन पर। उसका सिंहासन था केक।

वह आंखें बन्द किये हुए था। वह समझता था कि अब उसकी ख़ूब लानत-मलामत होगी, उसे मारा-पीटा जायेगा और वह इस सब के लिये पूरी तरह तैयार था। मगर हुआ वह, जिसकी उसने कल्पना तक न की थी।

"केक का तो सत्यानाश हो गया," छोटे हलवाई ने दुखी होते हुए कहा।

इसके बाद ख़ामोशी छा गयी। सिर्फ़ उबलने चाकलेट में से फटते हुए बुलबुलों की आवाज़ आती रही।

"जाने अब क्या होगा?" गुब्बारे वेचनेवाले ने डर के मारे गहरी सांस लेते और अपनी आंखों को और अधिक कसकर मींचते हुए फुसफुसाकर कहा।

उसका दिल ऐसे उछल रहा था जैसे मनीबैग में पैसा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं!" बड़े हलवाई ने भी कड़ाई से कहा, "हॉल में वे लोग दूसरा राउंड ख़त्म कर चुके हैं। बीस मिनट बाद केक पहुंचना चाहिये। रंग-बिरंगे गुब्बारे और इस उड़नेवाले उल्लू का बेहूदा-सा चेहरा बढ़िया दावत के केक की सजावट के लिये बहुत ठीक रहेगा।" बड़े हलवाई ने इतना कहा और हुक्म दिया – "क्रीम लाओ!"

और सचमुच क्रीम लाई गई।

बस, अब तो ग़ज़ब ही हो गया!

तीन हलवाई और बीस रसोइये-छोकरे गुब्बारे बेचनेवाले पर टूट पड़े। मगर तीनों मोटों में से सबसे मोटा इस दृश्य को देखता तो वह भी वाह वाह कर उठता। एक मिनट में ही उसे सभी तरफ़ से क्रीम से ढक दिया गया। गुब्बारे बेचनेवाला आंखें बन्द किये बैठा था, कुछ भी नहीं देखता था। मगर नज़ारा था देखने लायक़। उसे क्रीम से तर-ब-तर कर दिया गया। हां, उसका सिर, बेल-बूटों वाली केतली से मिलता-जुलता उसका तोबड़ा बाहर निकला हुआ था। बाक़ी सारा शरीर हल्की गुलाबी झलकवाली सफ़ेद क्रीम से लथ-पथ कर दिया गया था। गुब्बारे बेचनेवाला और तो कुछ भी हो सकता था, मगर अब गुब्बारे बेचनेवाला नहीं रहा था। जैसे उसका घास-फूस का जूता ग़ायब हो गया था, वैसे ही अब वह ख़ुद भी।

कोई कवि उसे बर्फ़ की तरह सफ़ेद राजहंस समझ सकता था, किसी माली को वह संगमरमर का बुत-सा लग सकता था, कोई धोबिन उसे ढेरों ढेर साबुन का फेन मान सकती थी और कोई बालक बर्फ़ का पुतला।

सबसे ऊपर गुब्बारे लटके हुए थे। ऐसी सजावट थी तो ग़ैरमामूली, मगर कुल मिलाकर ख़ासी जंच रही थी।

"हुं!" अपने चित्र को मुग्ध दृष्टि से निहारनेवाले चित्रकार के अन्दाज़ में बड़े हलवाई ने कहा। इसके बाद उसकी आवाज़ पहले की भांति ही भयानक हो उठी और उसने चीख़कर हुक्म दिया — "मुरब्बे लाओ!"

मुरब्बे आ गये। वे सभी क़िस्मों, सभी शक्लों और सभी आकारों के थे। उनमें खट्टे भी थे, मीठे भी, तिकोनी शक्ल के, सितारों जैसे, गोल, दूज के चांद जैसे और गुलाब की शक्ल के भी। रसोइये-छोकरे ख़ूब मन लगाकर अपना काम कर रहे थे। बड़े हलवाई के तीन तालियां बजाते तक क्रीम का टीला — सारे का सारा केक — तरह-तरह के मुरब्बों से सज गया।

"बस, काफ़ी है!" बड़े हलवाई ने कहा। "अब इसे थोड़ी देर के लिये ओवन में रख देना चाहिये ताकि वह ज़रा ज़रा गुलाबी हो जाये।"

"ओवन में?" गुब्बारे बेचनेवाले का दम निकल गया। "यह क्या सुना मैंने? किस ओवन में? मुझे ओवन में?!"

इसी समय एक बैरा दौड़ता हुआ मिठाईघर में आया।

"केक लाओ! केक!" वह चिल्लाया। "फ़ौरन केक लाओ! हॉल में केक का इन्तज़ार हो रहा है।"

"तैयार है!" बड़े हलवाई ने जवाब दिया।

"शुक्र है भगवान का!" गुब्बारे बेचनेवाले ने कहा। अब उसने ज़रा-ज़रा आंख खोली।

नीली वर्दी पहने हुए छः बैरों ने इस बड़ी-सी प्लेट को उठाया जिसमें वह बैठा हुआ था। वे उसे ले चले। वह मिठाईघर से बाहर आ चुका था जब उसे रसोइयों के ठहाके सुनाई दिये थे।

बैरे उसे लिये हुए चौड़ी सीढ़ियां चढ़कर ऊपर हॉल में पहुंचे। गुब्बारे बेचनेवाले ने घड़ी भर के लिये फिर आंखें बन्द कर लीं। हॉल में ख़ूब शोर मच रहा था, हंसी-ख़ुशी का वातावरण था। बहुत-से लोगों की आवाज़ें एकसाथ सुनाई दे रही थीं, ठहाके गूंज रहे थे, तालियां बजाई जा रही थीं। हर बात इस चीज़ की गवाही देती थी कि दावत ख़ूब कामयाब रही थी।

गुब्बारे बेचनेवाले को, नहीं, केक को लाकर मेज़ पर रख दिया गया।

अब गुब्बारे बेचनेवाले ने आंखें खोलीं।

उसने तीन मोटों को देखा।

वे इतने मोटे थे कि हैरत से उसका मुंह खुला रह गया।

"वह पहले की तरह लोहे के पिंजरे में बन्द है। पिंजरा यहीं महल में, उत्तराधिकारी टुट्टी के चिड़ियाघर में रखा हुआ है।"

"उसे यहां बुलवाइये..."

"उसे यहां ले आओ!" – पहले मोटे ने कहा। "हमारे मेहमान उस दरिन्दे को अधिक नज़दीक से देख पायेंगे। मैं तो आप सब को चिड़ियाघर में ही चलने का सुझाव देता, मगर वहां तो बहुत शोर, चीख़-चिंघाड़ और बदबू है... जामों की खनक और फलों की महक से इसका क्या मुक़ाबला..."

"वह तो है ही! सो तो है ही! चिड़ियाघर जाने में कोई तुक नहीं..."

"प्रोस्पेरो को यहीं बुलवाइये! हम केक खाते हुए उस राक्षस को देखेंगे।"

"फिर केक!" गुब्बारे बेचनेवाला सहम उठा। "कम्बख़्त हाथ धोकर केक के ही पीछे पड़े हुए हैं... पेटू न हों तो!"

"प्रोस्पेरो को यहां लाया जाये," -पहले मोटे ने कहा।

सरकारी सलाहकार बाहर निकला। दो क़तारों में खड़े हुए बैरों ने एक दूसरे से दूर हटते हुए सिर झुका लिये। ये क़तारें नीची हो गयीं।

पेटू ख़ामोश हो गये।

"वह बहुत ख़तरनाक आदमी है," दूसरे मोटे ने कहा। "सबसे ज्यादा ताक़तवर है। बबरशेर से भी बढ़कर। उसकी आंखों से नफ़रत की चिंगारियां निकलती हैं। उससे आंखें मिलाने की तो हिम्मत ही नहीं हो सकती।"

"उसका सिर भी भयानक है," राज्य परिषद् के सेक्रेट्री ने कहा। "यह बड़ा सारा! स्तम्भ के सिरे जैसा। बाल उसके लाल हैं। ऐसा लगता है मानो उसके सिर से आग की लपटें निकल रही हों।"

अब, जब हथियारसाज़ प्रोस्पेरो की बात चल पड़ी तो पेटुओं की हालत ही बदल गयी। उन्होंने खाना-पीना, मज़ाक़ करना और शोर मचाना बन्द कर दिया, पेट सिकोड़ लिये और कुछेक के तो चेहरों का रंग भी उड़ गया। बहुतों को तो इस बात का अफ़सोस भी होने लगा था कि क्यों उन्होंने उसे देखने की इच्छा ज़ाहिर की।

तीनों मोटे संजीदा सूरत बनाये बैठे थे और मानो कुछ-कुछ दुबला भी गये थे।

अचानक सभी चुप हो गये। गहरा सन्नाटा छा गया। हर मोटा कुछ इस तरह से हिला-डुला मानो दूसरे के पीछे छिपना चाहता हो।

हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को हॉल में लाया गया।

आगे-आगे सरकारी सलाहकार था। दायें-बायें सैनिक थे। वे मोमजामे की काली टोपियां पहने हुए थे और नंगी तलवारें हाथ में लिये हॉल में आये। जंजीरों की खनखनाहट

सुनाई दी। हथियारसाज़ के हाथों में हथकड़ियां पड़ी हुई थीं। उसे मेज़ के पास लाया गया। वह मोटों से कुछ क़दमों की दूरी पर रुक गया। वह खड़ा था सिर झुकाये हुए। क़ैदी के चेहरे का रंग पीला था। उसके माथे, कनपटियों और अस्तव्यस्त लाल बालों के नीचे खून जमा हुआ था।

प्रोस्पेरो ने सिर उठाकर मोटों की ओर देखा। पास बैठे हुए सभी लोग झटके के साथ पीछे हट गये।

"किस लिये इसे यहां ले आये?" एक मेहमान ने चीखकर पूछा। यह देश का सबसे धनी मिल-मालिक था। "मुझे इससे दहशत होती है!"

मिल-मालिक इतना कहकर बेहोश हो गया और उसकी नाक फलों की जेली में जा धंसी। कुछ मेहमान तो दरवाज़ों की तरफ़ भाग चले। केक की अब किसी को सुध न रही।

"क्या चाहते हैं आप लोग मुझसे?" हथियार-साज़ ने पूछा।

पहले मोटे ने हिम्मत से काम लेते हुए कहा –

"हम ज़रा यह देखना चाहते थे कि तुम लगते कैसे हो। तुम अब जिनकी मुट्ठी में बन्द हो, क्या तुम्हारे लिये भी उन लोगों को देखना दिलचस्प नहीं है?"

मुझे उबकाई आती है आपको देखकर।"

"घबराओ नहीं, जल्द ही हम तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर देंगे। इस तरह हम तुम्हें हमारी ओर देखने की ज़हमत से निजात दिला देंगे।"

"बड़ी परवाह पड़ी है मुझे सिर की। मेरा तो एक सिर है, मगर जनता के सिर हैं लाखों। आप उन सभी को तो काटने से रहे!"

"आज अदालत चौक में सज़ा दी जायेगी। वहां जल्लाद तुम्हारे साथियों से निपटेंगे।"

पेटुओं ने चटखारा भरा। मिल-मालिक होश में आ गया। इतना ही नहीं, उसने अपने गालों से गुलाबी जेली भी चाटी।

"आप लोगों के दिमाग़ों पर चरबी चढ़ी हुई है," प्रोस्पेरो ने कहा। "आपको अपनी तोंदों के सिवा किसी चीज़ का होश नहीं है!"

"ज़रा ग़ौर फ़रमाइये न!" दूसरे मोटे ने बिगड़ते हुए कहा। "किस चीज़ का होश होना चाहिये हमें?"

"अपने मन्त्रियों से पूछिये। वे जानते हैं कि देश में क्या कुछ हो रहा है।"

सरकारी सलाहकार ने अटपटा-सा हुंकारा भरा। मन्त्रियों ने उंगलियों से प्लेटों पर ताल देनी शुरू की।

"इनसे पूछिये," प्रोस्पेरो कहता गया, "ये बतायेंगे आपको..."

वह चुप हो गया। सभी बेचैनी से उसका मुंह ताकने लगे।

"ये आपको बतायेंगे कि कमर दोहरी करके उगाया गया जिन किसानों का अनाज आप लोग छीन लेते हैं, वे ज़मींदारों के ख़िलाफ़ विद्रोह कर रहे हैं। वे उनके महलों को आग लगा रहे हैं, उन्हें अपनी ज़मीनों से निकाल रहे हैं। खान-मज़दूर अब इसलिये खानों से कोयला नहीं निकालना चाहते कि वह सब आप हथिया लें। आप लोगों की और अधिक तिजोरियां भरने के लिये मज़दूर काम करने को तैयार नहीं हैं। वे मशीनों को तोड़-फोड़ रहे हैं। जहाज़ी आपके माल को सागर में फेंक रहे हैं। सैनिक आपके लिये काम करना नहीं चाहते। विद्वान, कर्मचारी, न्यायाधीश और अभिनेता, जनता की ओर होते जा रहे हैं। वे सभी, जो पहले आपके लिये खटते थे और बदले में कौड़ियां पाते थे, जबकि आप लोग और ज़्यादा मालामाल होते जाते थे, वे सभी बदक़िस्मत, सभी अभागे, सभी भूखे, ख़स्ताहाल, यतीम, लुंज-पुंज और भिखमंगे अब आपके, मोटी तोंदवालों और धनियों के ख़िलाफ़, जिनके सीने में दिल की जगह पत्थर है, मोर्चा लेने को डट गये हैं..."

"मेरे ख़्याल में तो यह बेकार बक बक कर रहा है..." सरकारी सलाहकार ने टोकते हुए कहा।

मगर प्रोस्पेरो ने अपनी बात जारी रखी–

"पन्द्रह सालों से मैं जनता को आपसे और आपकी सत्ता से घृणा करना सिखा रहा हूं। ओह, कितने अर्से से हम शक्ति बटोर रहे हैं! अब आप लोगों की आख़िरी घड़ी आ गयी है..."

"बन्द करो यह अपनी बकवास!" तीसरा मोटा चीख़ उठा।

"इसे वापिस पिंजरे में भेज देना चाहिये," दूसरे मोटे ने सुझाव दिया।

पहले मोटे ने कहा–

"जब तक नट तिबुल को क़ैद नहीं कर लिया जाता, तब तक तुम अपने पिंजरे में ही पड़े सड़ते रहोगे। हम तुम दोनों को एकसाथ ही जहन्नुम को चलता करेंगे। लोग तुम्हारी लाशें देखेंगे तो एक ज़माने तक उन्हें हम से उलझने का ख़्याल तक नहीं आयेगा।"

प्रोस्पेरो चुप हो गया। उसने फिर से सिर झुका लिया।

पहला मोटा कहता गया —

"तुम्हें होश भी है कि किससे भिड़ने की सोच रहे हो। हम तीनों मोटे बहुत सशक्त हैं, साधनसम्पन्न हैं। हमीं तो हर चीज़ के मालिक हैं। मैं, पहला मोटा, हमारे देश में पैदा होनेवाले सारे अनाज का मालिक हूं। सारे कोयले का स्वामी है दूसरा मोटा और तीसरे मोटे ने सारा लोहा खरीद लिया है। हमीं सबसे बढ़-चढ़कर अमीर हैं! देश का सबसे अधिक धनी व्यक्ति हमारे मुकाबले में सौगुना ग़रीब है। हम अपने सोने से जो भी चाहें, वही खरीद सकते हैं!"

अब बाक़ी पेटुओं को भी जोश आया। मोटे के शब्दों ने उन्हें दिलेर बना दिया।

"इसे पिंजरे में भिजवाइये! पिंजरे में!" वे चिल्लाने लगे।

"वापिस चिड़ियाघर में!"

"पिंजरे में!"

"विद्रोही!"

"पिंजरे में!"

सैनिक प्रोस्पेरो को ले गये।

"अब हम केक खायेंगे," पहले मोटे ने कहा।

"हाय, अब जान गई!" गुब्बारे बेचनेवाले ने सोचा।

सभी की नज़रें उसपर टिकी हुई थीं। उसने आंखें बन्द कर लीं। पेटू रंग-तरंग में आ गये —

"हो-हो-हो!"

"हा-हा-हा! क्या ग़ज़ब का केक है! ज़रा गुब्बारों पर तो नज़र डालिये!"

"वे तो कमाल ही किये दे रहे हैं।"

"और यह तोबड़ा!"

"इसके क्या कहने हैं!"

सभी लोग केक की ओर सरक गये।

"इस तोबड़े को देखकर बरबस हंसी आती है। जाने इसके अन्दर क्या कुछ भरा हुआ है?" किसी ने पूछा और गुब्बारे बेचनेवाले के माथे पर ज़ोर से चपत जमाया।

"मिठाइयां होंगी।"

"या शैम्पेन..."

"बहुत ख़ूब! बहुत ही ख़ूब!"

"लाइये, पहले इसका सिर काटकर यह देखें कि इसके अन्दर से क्या निकलता है..."

"ऊई मां!"

गुब्बारे बेचनेवाला अपने पर क़ाबू न रख पाया। वह साफ़ तौर पर चीख़ उठा – "ऊई मां!" और उसने आंखें खोल दीं। जिज्ञासु झटके के साथ पीछे हट गये। इसी समय बरामदे में किसी बालक की ऊंची आवाज़ गूंज उठी –

"गुड़िया! मेरी गुड़िया!"

सभी कान लगाकर सुनने लगे। तीन मोटे और सरकारी सलाहकार तो ख़ास तौर पर परेशान हो उठे।

बालक का चीख़ना रोने में बदल गया। गुस्से में आया हुआ बालक बरामदे में आकर बहुत जोर से रो पड़ा।

"यह क्या मामला है?" पहले मोटे ने पूछा। "यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है!"

"यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है!" दूसरे और तीसरे मोटे ने एकसाथ दोहराया।

उन तीनों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं। वे बुरी तरह सहम गये थे।

सरकारी सलाहकार, कुछ मन्त्री और नौकर-चाकर बरामदे में खुलनेवाले एक दरवाज़े की ओर भागे।

"क्या हुआ? क्या हुआ?" हॉल में सभी ओर ऐसी फ़ुसफ़ुसाहट सुनाई दी।

लड़का भागकर हॉल में आया, मन्त्रियों और नौकरों-चाकरों को इधर-उधर हटाता हुआ। उसके बाल इधर-उधर झूल रहे थे और वह चमकते हुए बढ़िया जूते पहने था। वह मोटों की ओर भाग गया। वह सिसकियां लेता हुआ कुछ असम्बद्ध शब्द कह रहा था जो किसी की समझ नहीं आ रहे थे।

"इस लड़के की अब मुझ पर नज़र पड़ी कि पड़ी," गुब्बारे बेचनेवाला घबरा उठा। "यह कम्बख़्त क्रीम जो मुझे सांस लेने या उंगली तक भी हिलाने-डुलाने नहीं देती, यक़ीनन इसे अपनी ओर खींचेगी। ज़ाहिर है कि उसे चुप कराने के लिये वे केक का टुकड़ा काट कर देंगे और उसके साथ-साथ मेरी एड़ी भी अलग हो जायेगी।"

मगर लड़के ने केक की ओर नज़र उठाकर भी न देखा। इतना ही नहीं, गुब्बारे बेचनेवाले के गोल सिर के ऊपर लटक रहे शानदार गुब्बारों की ओर भी उसका ध्यान न गया।

वह फूट फूटकर रो रहा था।

"क्या बात है?" पहले मोटे ने पूछा।

"उत्तराधिकारी टूट्टी क्यों रो रहा है?" दूसरे मोटे ने जानना चाहा।

तीसरे मोटे ने गाल फुला लिये।

उत्तराधिकारी टूट्टी बारह वर्ष का था। तीन मोटों के महल में उसका पालन-शिक्षण हो रहा था। वह तो मानो छोटा-सा राजकुमार था। मोटे उत्तराधिकारी चाहते थे। उनका अपना कोई बच्चा नहीं था। तीन मोटों की सारी दौलत और देश की बागडोर टूट्टी को ही विरासत में मिलनेवाली थी।

उत्तराधिकारी टूट्टी के आंसुओं ने मोटों के दिलों को हथियारसाज़ प्रोस्पेरो के शब्दों से भी अधिक दहला दिया।

लड़का गुस्से से मुट्ठियां भींच रहा था, हाथ झटक रहा था, पांव पटक रहा था।

उसके गुस्से और झुंझलाहट की कोई हद नहीं थी।

कारण किसी को मालूम नहीं था।

लड़के के शिक्षक स्तम्भों की ओट से झांक रहे थे, हॉल में प्रवेश करते हुए घबराते थे। काली पोशाकें पहने और काले विग लगाये हुए वे धुएं से काली हुई लैम्प की चिमनियों के समान लग रहे थे।

आख़िर कुछ शान्त होने पर लड़के ने बताया कि क्या क़िस्सा हुआ था।

"मेरी गुड़िया, मेरी अद्भुत गुड़िया टूट गयी है! उन्होंने मेरी गुड़िया का बुरा हाल कर दिया है। सैनिकों ने उसमें तलवारें घुसेड़ी हैं..."

वह फिर फूट फूटकर रोने लगा। अपनी छोटी-छोटी मुट्ठियों से आंसू पोंछते हुए वह उन्हें अपने गालों पर फैलाता जा रहा था।

"क्या ?!" मोटे चिल्ला उठे।

"क्या ?!"

"सैनिकों ने ?"

"गुड़िया में तलवारें घुसेड़ीं ?"

"उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया में ?"

और हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने मानो गहरी सांस लेते हुए धीरे से कहा – "यह नहीं हो सकता !"

सरकारी सलाहकार ने सिर थाम लिया। वही कमज़ोर दिल का मिल-मालिक फिर बेहोश हो गया, मगर मोटे के ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने के फलस्वरूप फ़ौरन होश में आ गया –

"दावत ख़त्म की जाये ! सब काम-काज छोड़ दिये जायें ! परिषद् के सदस्य बुलाये जायें ! सभी कर्मचारियों, सभी न्यायाधीशों, सभी मन्त्रियों, सभी जल्लादों को बुलाया जाये ! आज सज़ायें देने का काम स्थगित किया जाये ! महल में गद्दार हैं !"

भारी हलचल मच गयी। कुछ ही क्षण बाद महल के दूत सभी दिशाओं में सरपट घोड़े दौड़ाते नजर आये। पांच मिनट बाद सभी दिशाओं से न्यायाधीश, सलाहकार और जल्लाद घोड़े दौड़ाते हुए महल की ओर आने लगे। अदालत चौक में बाग़ियों को सज़ा पाते हुए देखने के लिये जमा हुई भीड़ को वापिस जाना पड़ा। ढोंडी पीटनेवालों ने चबूतरे पर खड़े हो भीड़ को यह सूचना दी कि एक बहुत ज़रूरी कारण से बाग़ियों को दण्ड देने का काम अगले दिन के लिये स्थगित कर दिया गया है।

गुब्बारे बेचनेवाले को केक के साथ-साथ ही हॉल से बाहर लाया गया। आन की आन में पेटुओं का नशा उतर गया था। उन सब ने उत्तराधिकारी टूट्टी को घेर लिया और उसकी कहानी सुनने लगे।

"मैं पार्क में घास पर बैठा था और गुड़िया भी मेरे पास ही बैठी थी। हम सूर्यग्रहण के शुरू होने का इन्तज़ार कर रहे थे। यह बहुत दिलचस्प चीज़ है। कल मैंने किताब में पढ़ा था... जब सूर्यग्रहण होता है तो दिन में सितारे नज़र आते हैं..."

बहुत ज़ोर से सिसकियां लेता हुआ उत्तराधिकारी अपनी बात जारी नहीं रख पा रहा था। उसकी जगह उसके एक शिक्षक ने सारा क़िस्सा सुनाया। शिक्षक भी मुश्किल से ही अपनी बात कह पाया, क्योंकि वह डर से कांप रहा था।

"उत्तराधिकारी टूट्टी और उसकी गुड़िया के निकट ही मैं नाक ऊपर को किये हुए धूप में बैठा था। मेरी नाक पर फुंसी है और मैंने सोचा कि सूरज की किरणें मुझे इस भोंडी फुंसी से निजात दिला देंगी। अचानक वहां कुछ सैनिक सामने आ खड़े हुए। कोई बारह रहे होंगे। वे किसी बात को लेकर आपस में गर्मागर्म बहस कर रहे थे। हमारे निकट आकर वे रुक गये। उनकी सूरत देखकर दहशत होती थी। उनमें से एक ने उत्तराधिकारी टूट्टी की ओर इशारा करते हुए कहा – 'यह बैठा है भेड़िये का बच्चा। तीन मोटे सुअरों के यहां भेड़िये का बच्चा पाला जा रहा है!' ओह! मैं तो इन शब्दों का अर्थ समझता था।"

"ये तीन मोटे सुअर कौन हुए?" पहले मोटे ने पूछा।

बाक़ी दोनों मोटे लाल हो गये। तब पहले मोटे के चेहरे पर भी सुर्खी दौड़ गयी। अब इन तीनों ने इतने ज़ोर से नाक का इंजन चलाना शुरू किया कि बरामदे का शीशे का दरवाज़ा खुलने और बन्द होने लगा।

"वे उत्तराधिकारी टूट्टी के गिर्द आकर खड़े हो गये।" शिक्षक ने बात जारी रखी। "उन्होंने कहा – 'तीन सुअरों के यहां लोहे का भेड़िये का बच्चा पाला जा रहा है। उत्तराधिकारी टूट्टी, तेरे कौनसे पहलू में दिल है?' उन्होंने पूछा... 'उसका दिल निकाल दिया गया है। वे इसे बेहद गुस्सैल, शैतान, संगदिल और जनता से नफ़रत करनेवाला बनाना चाहते हैं... जब तीन सुअरों का दम निकल जायेगा तो यह क्रोधी भेड़िया उनकी गद्दी सम्भाल लेगा'।"

"आपने उन्हें ऐसी बकवास बन्द करने के लिये क्यों नहीं कहा?" शिक्षक का कंधा हिलाते हुए सरकारी सलाहकार चीख़ उठा। "क्या आप इतना भी न भांप सके कि वे ग़द्दार थे जो जनता के साथ जा मिले थे?"

शिक्षक की घिग्घी बंध गयी। उसने मरे मरे शब्दों में कहा –

"यह तो मैं समझ रहा था, मगर मुझे उनसे दहशत होती थी। वे बहुत गुस्से में थे। मेरे पास तो सिर्फ़ फुंसी थी, कोई हथियार तो था नहीं... उनके हाथ तलवारों की मूठों पर थे, वे कुछ भी कर गुज़रने को तैयार थे। उनमें से एक ने कहा – 'यह देखिये, यह रही पुतली, गुड़िया। यह भेड़िये का बच्चा गुड़िया से खेलता है। इसे जीते-जागते बालकों से दूर रखा जाता है। स्प्रिंगवाली गुड़िया इसकी दोस्त है।' तब एक दूसरा सैनिक चीख़ उठा – 'मेरी पत्नी और बेटा गांव में हैं! एक दिन मेरा बेटा तीर-कमान से खेल रहा था। उसके तीर से ज़मींदार के बगीचे में एक नाशपाती बिंध गयी। ज़मींदार ने अमीरों की सत्ता का मुंह चिढ़ाने के लिये लड़के को कोड़े लगवाये और उसके नौकरों-चाकरों ने मेरी बीवी की खुले आम बेइज़्ज़ती की।' सैनिक शोर मचाने लगे और उत्तराधिकारी टुट्टी के और क़रीब आ गये। इसी वक़्त अपने बेटे का क़िस्सा सुनानेवाले ने तलवार निकाली और गुड़िया में घुसेड़ दी। बाक़ियों ने भी ऐसा ही किया..."

अब उत्तराधिकारी टुट्टी बहुत ही ज़ोर से रो पड़ा।

"'ले तू तो मज़ा चख ले, भेड़िये के बच्चे!' उन्होंने कहा। 'बाद को तेरे मोटे सुअरों से भी निपटेंगे!'"

"कहां हैं ये ग़द्दार?" मोटे चीख़ उठे।

"वे गुड़िया फेंक कर पार्क में जा घुसे। उन्होंने नारे लगाये – 'हथियारसाज़ प्रोस्पेरो ज़िन्दाबाद! नट तिबुल ज़िन्दाबाद! तीन मोटे मुर्दाबाद!'"

"सन्तरियों ने उनपर गोलियां क्यों नहीं चलाईं?" हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने जानना चाहा।

अब शिक्षक ने बहुत ही ख़तरनाक ख़बर सुनाई –

"सन्तरियों ने अपने टोप हिलाकर उनके लिये शुभकामना की। मैंने बाड़ के पीछे से सन्तरियों को उनसे विदा लेते देखा था। उन्होंने कहा था – 'साथियो! जनता से जाकर कहना कि जल्द ही सारी सेना उनकी ओर हो जायेगी...'"

तो यह कुछ हुआ था पार्क में। ख़तरे की सूचना दी जाने लगी। विश्वसनीय फ़ौजी दस्तों को महल की चौकियों, पार्क के आने-जाने के दरवाज़ों, पुलों और नगर के फाटक पर तैनात किया गया।

राज्यीय परिषद् की बैठक शुरू हुई। मेहमान घरों को चले गये। महल के बड़े डाक्टर

ने तीनों मोटों का वजन किया। मगर अत्यधिक उत्तेजना के बावजूद तीनों में से किसी की रत्ती भर चर्बी कम नहीं हुई थी। बड़े डाक्टर को गिरफ़्तार कर लिया गया और फ़रमान जारी किया गया कि उसे रोटी और पानी के सिवा कुछ भी न दिया जाये।

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया पार्क में घास पर पड़ी मिल गयी। वह सूर्यग्रहण न देख पाई। बहुत बुरी तरह उसका हुलिया बिगाड़ दिया गया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी किसी भी तरह शान्त नहीं हो पा रहा था। वह टूटी हुई गुड़िया का आलिंगन करता हुआ ज़ार-ज़ार आंसू बहा रहा था। गुड़िया लड़की जैसी लगती थी। उसका क़द टूट्टी के बराबर था। वह बहुत ही महंगी और बड़े कलात्मक ढंग से बनायी गयी गुड़िया थी और बिल्कुल जीती-जागती लड़की जैसी लगती थी।

अब उसका फ़ॉक चिथड़ों में बदल चुका था और तलवारों के वारों से उसके वक्ष पर काले-काले सूराख़ हो गये थे। एक घंटा पहले तक वह बैठ सकती थी, खड़ी हो सकती थी, मुस्करा और नाच सकती थी। अब वह महज़ पुतली थी, चिथड़ों के सिवा कुछ न थी। अब गुलाबी रेशमी कपड़े के नीचे उसके गले और छाती का टूटा हुआ स्प्रिंग ऐसे खरखरा रहा था जैसे घंटे बजाने के पहले पुरानी दीवालघड़ी खरखराती है।

"वह मर गयी!" उत्तराधिकारी टूट्टी ने शोकातुर होते हुए कहा। "हाय! कितने दुख की बात है! वह मर गयी!"

बालक टूट्टी भेड़िये का बच्चा नहीं था।

"इस गुड़िया को ठीक करना होगा," सरकारी सलाहकार ने राज्यीय परिषद् की बैठक में कहा। "उत्तराधिकारी टूट्टी के दुख का पारावार नहीं। हर क़ीमत पर इस गुड़िया को ठीक करना होगा!"

"दूसरी ख़रीद ली जाये," मन्त्रियों ने सुझाव दिया।

"उत्तराधिकारी टूट्टी दूसरी गुड़िया नहीं चाहता। वह चाहता है कि इसी को ज़िन्दा किया जाये।"

"मगर कौन यह कर सकता है?"

"मैं जानता हूं उसे," सार्वजनिक शिक्षा के मन्त्री ने कहा।

"कौन है वह?"

"श्रीमानो, हम भूल गये कि हमारे नगर में डाक्टर गास्पर आर्नेरी रहता है। यह व्यक्ति तो सभी कुछ कर सकता है। वह उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया को ठीक कर सकता है।"

परिषद् के सभी सदस्य ख़ुशी से चिल्ला उठे—

"हुर्रा! हुर्रा!"

डाक्टर गास्पर की याद आने पर परिषद् के सभी सदस्य एकसाथ गा उठे—

उड़कर तारों तक जो जाये।
दुम से पकड़ लोमड़ी लाये।।
जो पत्थर से भाप बनाये।
बड़े करिश्मे कर दिखलाये।।
जिसके गुण का वार न पार।
अद्भुत है डाक्टर गास्पर।।

उसी समय डाक्टर गास्पर के नाम फ़रमान जारी किया गया—

श्री डाक्टर गास्पर आर्नेरी,

इस पत्र के साथ उत्तराधिकारी टूट्टी की टूटी हुई गुड़िया भेजी जा रही है। तीन मोटों की सरकार की राज्यीय परिषद् आपको आदेश देती है कि आप कल तक इस गुड़िया को ठीक कर दें। अगर यह गुड़िया पहले की तरह भली-चंगी और जीती-जागती सी हो जायेगी, तो आपको मुंह मांगा इनाम दिया जायेगा। अगर यह आदेश पूरा नहीं किया गया तो आपको कड़ी सजा दी जायेगी।

सरकारी सलाहकार,
राज्यीय परिषद् का अध्यक्ष...

सरकारी सलाहकार ने हस्ताक्षर किये। वहीं राज्य की बड़ी-सी मुहर लगा दी गयी। मुहर गोल थी और उसके बीच में ठसाठस भरी हुई थैली बनी हुई थी।

महल के सन्तरियों का कप्तान काउंट बोनावेन्तूरा दो सन्तरियों को साथ लेकर नगर की ओर रवाना हो गया ताकि डाक्टर गास्पर आर्नेरी को ढूंढ़कर उसे राज्यीय परिषद् का आदेश-पत्र पहुंचा दे।

ये लोग घोड़ों पर सवार थे और उनके पीछे-पीछे घोड़ा-गाड़ी थी। उसमें एक दरबारी बैठा था। उसकी गोद में गुड़िया थी। गुड़िया का घुंघराले पटोंवाला सिर उसके कंधे से टिका हुआ था और बहुत ही करुणाजनक लग रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी ने रोना बन्द कर दिया। उसे यक़ीन हो गया कि अगले दिन उसकी गुड़िया भली-चंगी और ज़िन्दा होकर लौट आयेगी।

इस तरह महल में वह दिन बहुत चिन्ता और परेशानी में बीता।

गुब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ?

बैरे उसे हॉल से बाहर ले आये थे, यह तो हम जानते हैं।

वह फिर से मिठाईघर में पहुंच गया।
वहां यह दुर्घटना हो गयी।
केक लेकर जानेवाले नौकरों में से एक का पैर सन्तरे के छिलके पर जा पड़ा।
"सम्भलना!" बाक़ी नौकर चिल्लाये।
"हाय, मैं गिरा!" गुब्बारे बेचनेवाले ने जब अपने सिंहासन को डोलते पाया, तो वह चीख़ उठा।

मगर नौकर अपने को सम्भाल न पाया। वह टाइलों के मजबूत फ़र्श पर गिर पड़ा। वह अपनी लम्बी टांगों को पटकते हुए चिल्लाने लगा।

"हुर्रा!" रसोइये-छोकरे ख़ुश होकर शोर मचाने लगे।

"शैतान न हों तो!" नौकर और प्लेट के साथ ही फ़र्श पर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले ने हताश और दुखी होते हुए कहा।
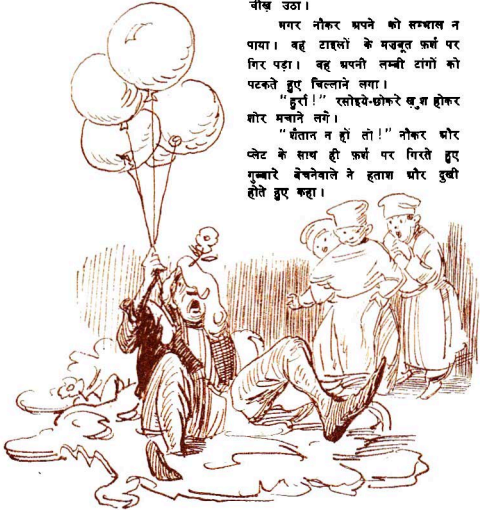
बड़ी सारी प्लेट के टुकड़े-टुकड़े हो गये। फेंटी हुई फूली-फूली क्रीम के गोले सभी दिशाओं में बिखर गये। नौकर उछलकर खड़ा हुआ और भाग गया।

रसोइये-छोकरे उछलने-कूदने, नाचने और शोर मचाने लगे।

गुब्बारे बेचनेवाला प्लेट के टुकड़ों, रसभरी के शरबत के डबरे और खूब फेंटी हुई बढ़िया क्रीम के बादलों से घिरा हुआ बैठा था। क्रीम के ये बादल खराब हुए केक पर अब पिघलते जा रहे थे।

गुब्बारे बेचनेवाले ने यह देखकर राहत की सांस ली कि मिठाईघर में सिर्फ़ रसोइये-छोकरे ही थे, तीनों बड़े हलवाई नहीं थे।

"रसोइये-छोकरों से मैं अपना काम निकाल लूंगा। वे मुझे भागने में मदद देंगे। मेरे गब्बारे मुझे मुसीबत से उबार लेंगे।" उसने सोचा।

वह गुब्बारों वाली रस्सी को कसकर पकड़े रहा।

छोकरों ने उसे सभी ओर से घेर लिया। उनकी ललचायी नज़रें बता रही थीं कि गुब्बारे उनके लिये सबसे बड़ी दौलत हैं। उनमें से प्रत्येक केवल एक गुब्बारा पा जाने का सपना देखता है, वह इसे अपनी बहुत बड़ी खुशक़िस्मती समझेगा।

इसलिये उसने कहा –

"मैं इन जान-जोखिम के कारनामों से तंग आ गया हूं। मैं न तो छोटा लड़का हूं और न ही कोई सूरमा। हवा में उड़ते फिरना मुझे पसन्द नहीं। तीन मोटों से मेरी जान कांपती है। दावती केक की खूबसूरती बढ़ाने का हुनर मुझे नहीं आता। मैं तो जी-जान से बस यही चाहता हूं कि जल्दी से जल्दी इस महल से निकल जाऊं।"

रसोइये-छोकरे ने हंसना बन्द कर दिया।

गुब्बारे हिल-डुल रहे थे, हवा में लहरा रहे थे। हिलते-डुलते गुब्बारों पर पड़ती हुई सूरज की किरणों से उनके अन्दर कभी नीला, कभी पीला और कभी लाल शोला-सा भड़क उठता। बहुत ही ग़ज़ब के थे ये गुब्बारे।

"तुम लोग यहां से भाग निकलने में मेरी मदद कर सकते हो?" रस्सी को झटके के साथ खींचते हुए गुब्बारे बेचनेवाले ने कहा।

"हां, कर सकते हैं," एक छोकरे ने धीरे से कहा और साथ ही यह भी जोड़ दिया – "अपने गुब्बारे हमें दे दीजिये।"

गुब्बारे बेचनेवाला यही तो चाहता था।

"अच्छा, ऐसा ही सही," उसने अपनी खुशी छिपाते हुए मरी-सी आवाज में उत्तर दिया। "मैं तैयार हूं। बेशक गुब्बारे बहुत महंगे हैं। मुझे इनकी सख़्त जरूरत है, फिर भी

मैं राजी हूं। तुम लोग मुझे बहुत पसन्द हो। तुम बड़े खुशमिजाज हो, तुम्हारे चेहरों पर निश्छलता है, तुम खुलकर हंसते हो।"

"तुम सब पर शैतान की मार!" साथ ही उसने मन ही मन यह भी कहा।

"बड़ा हलवाई इस समय रसदखाने में है," छोकरे ने कहा। "वह शाम की चाय के लिये बिस्कुट बनाने की सामग्री तोल रहा है। हमें उसके लौटने से पहले-पहले यह काम करना चाहिये।"

"यह तुम ठीक कहते हो," गुब्बारे बेचनेवाले ने सहमति प्रकट की। "देर करने में कोई तुक नहीं।"

"सुनिये तो! मैं एक राज जानता हूं।"

इतना कहकर यह छोकरा तांबे के बड़े-से देग के पास गया जो टाइलों के स्टैंड पर रखा हुआ था। उसने देग का ढक्कन उठाकर अधिकारपूर्ण ढंग से कहा—

"लाइये गुब्बारे।"

"तेरा दिमाग़ चल गया है क्या!" गुब्बारे बेचनेवाला झल्ला उठा। "देग से मुझे क्या लेना-देना है? मैं भागना चाहता हूं। तुम उल्टे क्या यह चाहते हो कि मैं देग में जा बैठूं?"

"हां, यही तो।"

"देग में?"

"हां, देग में।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद आप ख़ुद ही देख लेंगे कि क्या कमाल होता है। चलिये घुसिये देग में। भागने का यही सबसे बढ़िया उपाय है।"

देग इतना बड़ा था कि दुबले-पतले गुब्बारे बेचनेवाले की तो बात ही क्या, तीनों मोटों में से सबसे ज्यादा मोटा भी उसमें समा सकता था।

"अगर वक़्त रहते मुसीबत से पिंड छुड़ाना चाहते हैं, तो जल्दी से इसमें घुस जाइये।"

गुब्बारे बेचनेवाले ने देग में झांककर देखा। उसे उसका तल नज़र न आया। उसने कुएं की भांति उसमें गहरा काला गढ़ा देखा।

"तो ऐसा ही सही," गुब्बारे बेचनेवाले ने गहरी सांस ली। "अगर देग में ही घुसना जरूरी है, तो यही सही। हवाई उड़ान और क्रीम के स्नान से तो यह कुछ बुरा नहीं। अच्छा तो नमस्कार, छोटे-छोटे शैतानो! यह लो मेरी आज़ादी की क़ीमत।"

इतना कहकर उसने गांठ खोली और छोकरों में गुब्बारे बांट दिये। हरेक को गुब्बारे मिल गये, अलग-अलग धागे से बंधे हुए।

इसके बाद वह टांगें अन्दर घुसेड़ते हुए अपने ख़ास भद्दे ढंग से देग में घुसा। छोकरे ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"गुब्बारे! गुब्बारे!" छोकरे ख़ुशी से शोर मचाने लगे।

वे मिठाईघर की खिड़कियों के नीचे पार्क में आ खड़े हुए।

यहां खुली हवा में गुब्बारों के साथ खेलना कहीं अधिक दिलचस्प था।

अचानक मिठाईघर की तीनों खिड़कियों में से तीनों हलवाइयों ने बाहर झांका।

"यह क्या हो रहा है?!" वे तीनों चीख़ उठे। "यह कैसी बदतमीज़ी है? फ़ौरन वापिस चलो!"

हलवाइयों की डांट से इन छोकरों की तो जान ही निकल गयी। डर के मारे गुब्बारों के धागे उनके हाथ से छूट गये।

उनकी ख़ुशी हवा में उड़ गयी।

बीस के बीस गुब्बारे बड़ी तेज़ी से चमकते हुए निर्मल नीलाकाश में ऊंचे चढ़ते गये। रसोइये-छोकरे फूलों के बीच मुंह खोले हुए घास पर खड़े थे। सफ़ेद टोपियों वाले अपने सिरों को पीछे की ओर फेंके हुए वे उन्हें ताक रहे थे।

पांचवां अध्याय

नीग्रो और पत्तागोभी का कल्ला

आपको यह तो याद होगा कि डाक्टर गास्पर की हंगामों और ख़तरों की रात का कैसे अन्त हुआ था? यही कि उसके कमरे की अंगीठी में से नट तिबुल निकलकर सामने आ खड़ा हुआ था।

सुबह होने पर उन दोनों ने वहां क्या किया, यह कोई नहीं जानता। मौसी गानी-मेड दिन भर की उत्तेजना और डाक्टर गास्पर की प्रतीक्षा से बहुत थक गयी थी और अब गहरी नींद सो रही थी। उसे सपने में मुर्गी दिखाई दी।

अगले दिन, यानी उस दिन जब गुब्बारों वाला उड़ता हुआ तीन मोटों के महल में जा पहुंचा और सैनिकों ने उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया में तलवारें घुसेड़ीं, मौसी गानीमेड को एक बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा। हुआ यह कि चूहेदानी में बन्द चूहा निकल भागा। पिछली रात यही चूहा आध सेर मुरब्बा चट कर गया था। इस से पहलेवाली रात को उसने कारनेशन फूलों वाला गिलास गिरा दिया था। गिलास चूरचूर हो गया था और फूलों से म

जाने क्यों, दवाई की सी गन्ध आने लगी थी। उस भयानक रात को चूहा पिंजरे में आ फंसा था।

सुबह उठते ही मौसी गानीमेड ने चूहेदानी को हाथ में उठा लिया। चूहा ऐसे निश्चिन्त भाव से बैठा था मानो कह रहा हो कि पहली बार थोड़े ही पिंजरे में आया हूं। बहुत ही शैतान चूहा था वह।

"जो तेरे लिए न हो, अब तू वह मिठाई कभी न खाना!" मौसी गानीमेड ने चूहेदानी ऐसी जगह पर रखते हुए कहा जहां से वह दिखाई दे सके।

मौसी गानीमेड ने कपड़े पहने और डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला की ओर चल दी। वह डाक्टर को यह ख़ुशख़बरी सुनाना चाहती थी। पिछली सुबह को जब उसने डाक्टर को यह बुरी ख़बर सुनाई थी कि चूहा मुरब्बा चट कर गया है, तो डाक्टर ने हमदर्दी ज़ाहिर की थी और कहा था—

"चूहे को मुरब्बा इसलिये अच्छा लगता है कि उसमें बहुत-से तेज़ाब होते हैं।"

यह सुनकर मौसी गानीमेड शान्त हो गई थी।

"चूहे को मेरे तेज़ाब अच्छे लगते हैं... अब देखेंगे कि उसे मेरी चूहेदानी भी अच्छी लगती या नहीं।"

मौसी गानीमेड डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाज़े पर पहुंची। उसके हाथ में चूहेदानी थी।

अभी बहुत ही सवेरा था। खुली खिड़की में से हरियाली झलक दिखा रही थी। वह तेज़ हवा जो गुब्बारे बेचनेवाले को ले उड़ी थी, बाद में चली।

दरवाज़े के पीछे से कुछ आहट मिल रही थी।

"ओह, बेचारे डाक्टर!" मौसी गानीमेड ने सोचा। "लगता है, रात भर बिल्कुल सोये ही नहीं!"

उसने दरवाज़े पर दस्तक दी।

डाक्टर ने अन्दर से कुछ कहा, मगर वह मौसी को सुनाई नहीं दिया।

दरवाज़ा खुला।

डाक्टर गास्पर दहलीज़ के पास खड़े थे। प्रयोगशाला में से जले हुए कार्क की सी गन्ध आ रही थी। कोने में स्पिरिट-लैम्प का छोटा-सा लाल शोला झलमला रहा था। ज़ाहिर था कि बची-बचायी रात के समय डाक्टर कोई वैज्ञानिक कार्य करते रहे थे।

"नमस्ते!" डाक्टर ने ख़ुशी से कहा।

मौसी गानीमेड ने डाक्टर को दिखाने के लिए चूहेदानी ऊपर को उठाई। चूहा अपना नाक सिकोड़ते हुए कमरे की गन्ध को सूंघ रहा था।

"मैंने चूहा पकड़ लिया!"

"सच!" डाक्टर बहुत खुश हुए। "दिखाइये तो!"

मौसी गानीमेड खिड़की की तरफ़ लपकी।

"यह रहा!"

मौसी ने चूहेदानी डाक्टर की ओर बढ़ाई। अचानक उसे वहां एक नीग्रो दिखाई दिया। खिड़की के पास रखी हुई जिस पेटी पर "सावधानी से!" लिखा हुआ था, उसी पर एक सुन्दर नीग्रो बैठा था।

नीग्रो लाल बिरजस के सिवा कुछ भी न पहने था।

नीग्रो का रंग काला, बैंगनी, बादामी था। उसका बदन चमक रहा था।

वह पाइप के कश लगा रहा था।

मौसी गानीमेड इतने ज़ोर से "ऊई मां!" कहकर चीख़ उठी कि बस दो टुकड़े होते होते बची। वह लट्टू की तरह घूमी और उसने कनकौवे की तरह हाथ झटके। यह सब करते हुए उससे कुछ ऐसी असावधानी हुई कि चूहेदानी का मुंह खुल गया और चूहा निकलकर न जाने कहां ग़ायब हो गया।

इतनी अधिक डर गयी थी मौसी गानीमेड!

नीग्रो ठठाकर ज़ोर से हंस दिया। उसकी लम्बी टांगें फैली हुई थीं और उसके लाल जूते बड़ी-बड़ी सूखी हुई लाल मिर्चों जैसे प्रतीत हो रहे थे।

नीग्रो के दांतों के बीच पाइप तूफ़ान में झूलती हुई टहनी की भांति हिल-डुल रही थी।

डाक्टर भी हंस रहा था और उसकी नाक पर टिका हुआ नया चश्मा ऊपर-नीचे हो रहा था।

मौसी गानीमेड तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गयी।

"चूहा!" वह चिल्लाई। "चूहा! मिठाई! नीग्रो!"

डाक्टर गास्पर उसकी ओर लपके।

"मौसी गानीमेड," उसे दिलासा देते हुए डाक्टर ने कहा। "आप बेकार ही परेशान न हों। मैं आपसे अपने नये तजरबे की चर्चा करना भूल गया... मगर आप ऐसी आशा तो कर ही सकती हैं... मैं तो ठहरा वैज्ञानिक, विभिन्न विज्ञानों का विशेषज्ञ, तरह-तरह की अनूठी चीज़ों का माहिर। मैं तो सभी तरह के तजरबे करता रहता हूं। मेरी प्रयोगशाला में नीग्रो ही नहीं, हाथी भी नज़र आ सकता है। मौसी गानीमेड... मौसी गानीमेड... नीग्रो की बात नीग्रो के साथ रही, आमलेट की आमलेट के साथ... हम नाश्ते का इन्तज़ार कर रहे हैं। मेरे नीग्रो दोस्त को बहुत-से अंडों का आमलेट पसन्द है..."

"चूहे को तेज़ाब पसन्द है," सहमी हुई मौसी गानीमेड फुसफुसायी, "और नीग्रो को आमलेट पसन्द है..."

"हां, ऐसा ही है। आमलेट तो अभी से आइये और चूहे की चिन्ता कीजियेगा रात को। रात को वह क़ाबू में आ जायेगा, मौसी गानीमेड। आज़ाद रहकर वह करेगा भी क्या? मिठाई तो वह चट कर ही चुका है।"

मौसी गानीमेड रोई और उसने नमक की जगह अंडों में अपने आंसू मिला दिये। उन में ऐसी तलख़ी थी कि उन्होंने मिर्चों का काम पूरा किया।

"अच्छा किया कि काफ़ी मिर्च डाल दी। बहुत ज़ायक़ेदार बना है!" आमलेट को चट करते हुए नीग्रो ने कहा।

मौसी गानीमेड ने दिल मज़बूत करनेवाली दवाई की कुछ बूंदें पीं जिनमें से अब न जाने क्यों कारनेशन फूलों की गंध आ रही थी। शायद आंसुओं के कारण।

बाद को उसने डाक्टर गास्पर को गली में जाते देखा। नया गुलूबन्द लगाये, नयी छड़ी लिये और नये जूते पहने (बेशक वास्तव में पुराने जूतों को नयी लाल एड़ियां लगी हुई थीं) वे ख़ूब जंच रहे थे।

उनके साथ-साथ नीग्रो चल रहा था।

मौसी गानीमेड ने कसकर आंखें मूंद लीं और फ़र्श पर बैठ गयीं। वास्तव में फ़र्श पर नहीं, बिल्ली के ऊपर, जो डरकर ज़ोर-ज़ोर से म्याऊं-म्याऊं कर उठी। मौसी गानीमेड आपे से बाहर हो गयी और उसने बिल्ली की पिटाई कर डाली। एक तो इसलिए कि वह हर समय रास्ते में आती रहती थी और दूसरे इसलिये कि वह चूहे को भी नहीं पकड़ पायी थी।

इसी बीच चूहा डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला से भागकर मौसी गानीमेड की दराज़दार अलमारी में जा घुसा था और मिठाई की प्यारी-प्यारी याद करता हुआ बादामों के बिस्कुट हड़पता जा रहा था।

डाक्टर गास्पर आर्नेरी छाया की गली में रहता था। बायीं ओर मुड़कर साग्रवी लिज़वेता के कूचे में पहुंचा जा सकता था। वहां से आगे वह गली आती थी जो बिजली गिरने के कारण नष्ट हुए बलूत के लिये मशहूर थी। इस गली से पांच मिनट तक और चलने पर व्यक्ति चौदहवें बाज़ार में पहुंच जाता था।

डाक्टर गास्पर और नीग्रो उधर ही चल दिये। हवा तेज़ हो गयी थी। जला हुआ बलूत हवा के झोंकों में झूले की तरह झूल-झूल जाता था। एक इश्तिहार चिपकानेवाले को अपना काम करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। बड़ा-सा इश्तिहार उसके क़ाबू से बाहर होता हुआ उसके मुंह पर फड़फड़ा रहा था। दूर से ऐसा लगता था मानो कोई व्यक्ति सफ़ेद नेप्किन से मुंह पोंछ रहा हो।

आख़िर उसने बाड़ पर इश्तिहार चिपका ही दिया।

डाक्टर गास्पर ने इश्तिहार पढ़ा जिसमें लिखा था —

आइये !

आइये !

आइये !

आज तमाशा देखने आइये !

तीन मोटों की सरकार ने लोगों के लिए

खेल-तमाशे की व्यवस्था की है !

जल्दी कीजिये !

जल्दी कीजिये !

जल्दी कीजिये !

चौदहवें बाज़ार में पहुंचिये !

"अब सारी बात समझ में आ गयी," डाक्टर गास्पर ने कहा। "आज अदालत चौक में बाग़ियों को सज़ा दी जानेवाली है। तीन मोटों की सरकार के जल्लाद उन लोगों के सिर क़लम करेंगे जिन्होंने अमीरों और पेटुओं की सत्ता के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी। तीन मोटे जनता की आंखों में धूल झोंकना चाहते हैं। उन्हें इस बात का डर है कि अदालत चौक में जमा होनेवाले लोग कहीं जल्लादों के तख़्ते न तोड़ डालें, जल्लादों की हत्या न कर दें और अपने उन भाइयों को आज़ाद न करा लें जिन्हें मौत की सज़ा देने की घोषणा की जा चुकी है। इसीलिये उन्होंने लोगों के मनोरंजन की व्यवस्था की है। वे चाहते हैं कि लोग आज दी जानेवाली सज़ाओं के बारे में बिल्कुल भूल ही जायें।"

डाक्टर गास्पर और उनका नीग्रो साथी बाज़ार चौक में पहुंचे। मंडपों के गिर्द लोगों की भारी रेलपेल थी। मगर वहां डाक्टर गास्पर को न तो कोई बांका-छैला नज़र आया, न कोई बनी-ठनी महिला, जो सुनहरी मछलियों और अंगूरों की आभावाली बढ़िया पोशाक पहने हो। वहां कोई जाना-माना बुज़ुर्ग भी नहीं था जो स्वर्णमढ़ी पालकी में बैठकर आया हो, न कोई ऐसा सौदागर ही था जिसकी बग़ल में चमड़े की बड़ी-सी थैली लटक रही हो।

यहां नगर के बाहर गन्दे-मन्दे घरों में रहनेवाले ग़रीब लोग — कारीगर, मिस्त्री, जौ की रोटियां बेचनेवाले, रोज़नदारिनें, कुली, बूढ़ी औरतें, भिखमंगे और लुंज-पुंज ही दिखाई दे रहे थे। पुराने और जीर्ण-शीर्ण भूरे कपड़ों में कहीं-कहीं केवल हरे कफ़, रंग-बिरंगे लबादे या रंग-बिरंगे रिबन नज़र आ जाते थे।

बूढ़ी औरतों के पके हुए बाल नमदे की तरह तेज़ हवा में उड़ रहे थे, आंखों में पानी आ रहा था। भिखमंगों के बादामी रंग के चिथड़े फड़फड़ा रहे थे।

सभी के चेहरों पर तनाव था, सभी यह समझ रहे थे कि कोई न कोई अनहोनी बात होनेवाली है।

"अदालत चौक में सज़ायें दी जायेंगी," लोग कह रहे थे, "वहां हमारे साथियों के सिर क़लम किये जायेंगे और यहां वे मसख़रे उछल-कूद मचायेंगे जिनकी तीन मोटों ने ख़ूब मुट्ठी गर्म की है।"

"आओ, अदालत चौक में चलें!" लोग चिल्लाये।

"हमारे पास तो हथियार नहीं हैं। हमारे पास पिस्तौलें और तलवारें नहीं हैं। मगर अदालत चौक के गिर्द सैनिकों का तिहरा पहरा है।"

"सैनिक अभी तो उनका साथ दे रहे हैं। उन्होंने हम पर गोलियां चलाईं। पर ख़ैर, कोई बात नहीं! आज नहीं तो कल अपने मालिकों को छोड़कर हमारा साथ देंगे।"

"अभी पिछली रात ही एक सैनिक ने सितारे के चौक में अपने अफ़सर को गोली का निशाना बना दिया। इस तरह उसने नट तिबुल की जान बचाई।"

"तिबुल कहां है? वह बचकर भाग गया या नहीं?"

"मालूम नहीं। सैनिक सारी रात और पौ फटने तक मजदूरों के घरों को आग की नजर करते रहे। वे तिबुल को ढूंढ़ लेना चाहते थे।"

डाक्टर गास्पर और नीग्रो मंडपों के क़रीब पहुंचे। तमाशा अभी शुरू नहीं हुआ था। फूलों के छापेवाले पर्दों और तख़्तों के पीछे से लोगों की आवाज़ें, घंटियों की टनटनाहट, बांसुरियों की गूंज और कुछ सरसराने, किकियाने और चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वहां अभिनेता खेल-तमाशे के लिए तैयार हो रहे थे।

पर्दा हटा और एक चेहरा दिखाई दिया। यह एक स्पेनी था जिसे पिस्तौल की निशानेबाज़ी में कमाल हासिल था। उसके बड़े-बड़े गलमुच्छे थे और एक आंख की पुतली हिल-डुल रही थी।

"ओह," नीग्रो को देखकर उसने कहा। "तुम भी इस तमाशे में हिस्सा ले रहे हो? कितनी रक़म मिली है?"

नीग्रो चुप रहा।

"मुझे तो दस स्वर्ण मुद्रायें मिली हैं।" स्पेनी ने डींग हांकते हुए कहा। उसने नीग्रो को भी अभिनेता ही समझा। "इधर आओ," उसने रहस्यपूर्ण मुद्रा बनाते हुए फुसफुसाकर कहा।

नीग्रो मंच पर चढ़ गया। स्पेनी ने उसे राज़ बताया। राज़ यह था कि तीन मोटों ने सौ अभिनेताओं की जेब गर्म करके उन्हें बाज़ारों में तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखाने और साथ ही अमीरों तथा पेटुओं की सत्ता की बड़ाई और विद्रोहियों, हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल की बुराई करने का काम सौंपा था।

"उन्होंने मदारियों, जानवर सधानेवालों, मसख़रों, विचित्र आवाज़ें निकालनेवालों और नर्तकों का बड़ा-सा दल इस काम में जुटाया है ... सभी की मुट्ठियां गर्म की गयी हैं।"

"क्या सभी अभिनेता तीन मोटों की तारीफ़ करने को राज़ी हो गये हैं?" डाक्टर गास्पर ने पूछा।

स्पेनी ने आवाज़ और धीमी कर ली—

"शी!" उसने होंठों पर उंगली रखते हुए कहा। "यह बहुत धीमे से कहने की बात है। बहुतों ने इन्कार कर दिया। उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया।"

नीग्रो का ख़ून खौलने लगा।

इसी समय संगीत गूंज उठा। कुछ मंडपों में तमाशा शुरू हो गया। भीड़ इधर-उधर हिलने-डुलने लगी।

"दर्शकगण!" लकड़ी के ऊंचे चबूतरे पर खड़े हुए एक मसख़रे ने चीख़ते हुए कहा। "दर्शकगण! मैं आपको बधाई देता हूं..."

वह लोगों के चुप हो जाने की प्रतीक्षा करता हुआ ख़ामोश हो गया। उसके चेहरे से आटा झड़ झड़कर गिर रहा था।

"दर्शकगण, मैं आपको आज के विशेष ख़ुशी के अवसर पर बधाई देता हूं। आज हमारे प्यारे, लाल-लाल गालों वाले तीन मोटों के जल्लाद दुष्ट विद्रोहियों के सिर क़लम करेंगे . . ."

वह अपनी बात पूरी न कर पाया। इसी समय किसी कारीगर ने बची हुई रोटी उसकी ओर फेंकी। वह उसके मुंह में जा गिरी।

"ग-ग-ग-ग-ग . . ."

मसख़रे ने ज़ोर लगाते हुए अपनी बात पूरी करने की कोशिश की, मगर बेसूद। अधपकी रोटी उसके मुंह में चिपक गयी। उसने हाथ झटके और अटपटे से मुंह बनाये।

"शाबाश! यह इसी लायक़ था!" लोग चिल्ला उठे।

मसख़रा भागकर लकड़ी की दीवार के पीछे ग़ायब हो गया।

"कमीना कहीं का! तीन मोटों का नमक हलाल करना चाहता था! मुट्ठी गर्म कर दी गयी, इसलिये उन लोगों पर कीचड़ उछालना चाहता था जिन्होंने हमारी आज़ादी के लिये मौत को गले लगाया!"

संगीत बहुत ऊंचा हो गया। अन्य कई आरकेस्ट्रा भी शामिल हो गये – नौ बांसुरियां, तीन बिगुल, तीन ढोल और एक वायलिन, जिसके स्वरों से दांत में दर्द की अनुभूति-सी होने लगती थी, एकसाथ बज रहे थे।

मंडपों के प्रबन्धकों ने भीड़ के शोर को इस संगीत में डुबो देना चाहा।

"शायद हमारे अभिनेता इन रोटियों से डर जायेंगे," उनमें से एक ने कहा। "हमें तो ऐसे ज़ाहिर करना चाहिए मानो कुछ हुआ ही न हो।"

"आइये! इधर आइये! खेल शुरू होता है . . ."

एक दूसरे मंडप का नाम था 'लोजन का घोड़ा'।

पर्दे के पीछे से मैनेजर सामने आया। वह हरे रंग का ऊंचा ऊनी टोप पहने था और उसके कोट पर तांबे के गोल-गोल बटन लगे हुए थे। उसके गालों पर बहुत-सा रंग मला गया था और वे बिल्कुल लाल-लाल दिखाई दे रहे थे।

"ज़रा चुप हो जाइये," उसने ऐसे कहा मानो जर्मन में बोल रहा था। "ज़रा चुप हो जाइये! हमारा तमाशा देखने लायक़ है!"

कुछ लोग चुप हो गये।

"आज के पर्व के विशेष अवसर पर हमने पहलवान लापीतूप को निमन्त्रित किया है!"

"ला-पी-तू-ला!" बिगुल ने मानो नाम दोहराया।
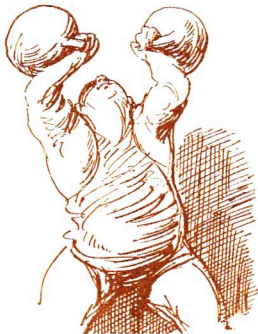
बताशों ने मानो तालियां बजायीं।

"पहलवान लापीतूप आपको अपनी ताक़त के कमाल दिखायेगा..."

आरकेस्ट्रा ज़ोर से गूंज उठा। पर्दा हटा। लापीतूप मंच पर आया। गुलाबी बिरजस पहने हुए यह देव-दानव वास्तव में ही बहुत शक्तिशाली प्रतीत हुआ।

वह फूं-फां कर रहा था और सांड़ की तरह सिर झुकाये था। त्वचा के नीचे उसकी पेशियां अजगर द्वारा निगले हुए ख़रगोशों की भांति ऊपर-नीचे हिल-डुल रही थीं।

सहायकों ने बड़े-बड़े बाट लाकर मंच पर फेंक दिये। तख़्ते तो टूटते-टूटते ही बचे। धूल का बादल ऊपर उठा। बाज़ार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगों की धीमी-सी फुसफुसाहट सुनाई दी।

पहलवान ने अपना कमाल दिखाना शुरू किया। उसने दोनों हाथों में एक-एक बाट उठाया, उन्हें गेंद की तरह उछाला, साधा और फिर इतने ज़ोर से आपस में टकराया कि चिनगारियां चमक उठीं।

"देखा आपने!" उसने कहा। "ऐसे ही तीन मोटे हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपड़ियां टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।"

यह पहलवान भी तीन मोटों की स्वर्ण मुद्राओं के बदले में अपनी आत्मा बेच चुका था।

"हा-हा-हा!" अपने मज़ाक़ से ख़ुश होते हुए वह ठठाकर हंस दिया।

वह जानता था कि उस पर रोटी फेंकने की हिम्मत किसी को नहीं होगी। सभी तो उसकी ताक़त को देख रहे थे।

गहरी ख़ामोशी छा गयी थी। उस ख़ामोशी में नीग्रो की आवाज़ साफ़ तौर पर गूंज उठी। सभी के सिर उसकी ओर घूम गये।

"क्या कहा था तुमने?" मंच की पैड़ी पर पांव रखते हुए नीग्रो ने पूछा।

"मैंने कहा था कि तीन मोटे हथियारसाज प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपड़ियां टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।"

"ज़बान को लगाम दो!"

नीग्रो ने इत्मीनान और कड़ाई से, मगर धीरे से कहा।

"तुम कौन हो रे, काले-कलूटे?" पहलवान बिगड़ा।

उसने बाट फेंककर कूल्हों पर हाथ रख लिये।

नीग्रो मंच पर जा चढ़ा।

"तुम बहुत ताक़तवर हो, मगर कमीने भी कुछ कम नहीं। बेहतर है तुम यह बताओ कि तुम हो कौन? जनता पर फब्तियां कसने का हक़ तुम्हें किसने दिया? मैं तुम्हें जानता हूं। तुम लुहार के बेटे हो। तुम्हारा बाप अभी तक कारखाने में काम करता है। तुम्हारी बहन का नाम एली है। वह धोबिन है। वह अमीरों के कपड़े धोती है। बहुत मुमकिन है कि सैनिकों ने कल उसे गोली का निशाना बना दिया हो ... और तुम ग़द्दार हो!"

पहलवान स्तम्भित रह गया। नीग्रो ने तो सचमुच हर बात सही कही थी। पहलवान की तो अक़्ल चकरा गयी थी।

"चलते बनो यहां से!" नीग्रो चिल्लाया।

पहलवान अब सम्भला। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। उसने घूंसे तान लिये।

"तुम्हें मुझे हुक्म देने का कोई हक़ नहीं है!" वह मुश्किल से इतना ही कह पाया। "मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम शैतान हो!"

"चलते बनो यहां से! मैं तीन तक गिनता हूं। एक!"

भीड़ सकते में आ गयी। नीग्रो पहलवान से क़द में छोटा और शरीर में एक-तिहाई था। मगर फिर भी किसी को इस बात में रत्ती भर सन्देह नहीं था कि अगर हाथापाई की नौबत आ गयी तो नीग्रो ही बाज़ी मार जायेगा। वह इतना फ़ैसलाकुन और संजीदा नज़र आ रहा था, इतना भरोसा था उसे अपनी ताक़त पर।

"दो!"

पहलवान ने गर्दन तान ली।

"शैतान!" वह फुसफुसाया।

"तीन!"

पहलवान ग़ायब हो गया। बहुत-से लोगों ने तो कसकर आंखें मूंद लीं। उन्हें तो उम्मीद थी कि पहलवान ज़ोर का वार करेगा। मगर जब उन्होंने आंखें खोलीं तो पहलवान को ग़ायब पाया। वह पलक झपकते में दीवार के पीछे जाकर ओझल हो गया था।

"इस तरह से लोग तीन मोटों को चलता कर देंगे!" नीग्रो ने हाथ ऊंचे कर हंसते हुए कहा।

लोगों की ख़ुशी का पारावार न रहा। उन्होंने तालियां बजायीं और हवा में टोपियां उछालीं।

"जय जनता!"

"शाबाश! शाबाश!"

केवल डाक्टर गास्पर ही असन्तोष जाहिर करते हुए सिर हिला रहे थे। वे किस बात से नाख़ुश थे, यह स्पष्ट नहीं था।

"यह कौन है? कौन है यह? यह नीग्रो?" दर्शकों ने जानना चाहा।

"क्या यह भी अभिनेता है?"

"हमने तो इसे पहले कभी नहीं देखा!"

"कौन हो तुम?"

"क्यों तुम ने जनता की हिमायत की?"

"ज़रा रास्ता दीजिये! रास्ता दीजिये!"

चिथड़े पहने हुए एक व्यक्ति भीड़ को चीरकर आगे बढ़ा रहा था। यह वही भिखमंगा था जो पिछली शाम को मालिनों और कोचवानों से बातचीत करता रहा था। डाक्टर गास्पर ने उसे पहचान लिया।

"ज़रा मेरी बात सुनिये," भिखमंगे ने चिल्लाकर कहा। "क्या आप लोग इतना भी नहीं समझ रहे हैं कि हमारी आंखों में धूल झोंकी जा रही है? यह नीग्रो भी पहलवान लापीतुप की तरह ही अभिनेता है। ये एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इसने भी तीन मोटों का माल खाया है!"

नीग्रो ने मुट्ठियां भींच लीं।

भीड़ की ख़ुशी गुस्से में बदल गयी।

"बिल्कुल ऐसा ही है! एक बदमाश ने दूसरे बदमाश को भगा दिया है।"

"उसे डर था कि हम उसके साथी की पिटाई कर देंगे, इसलिए उसने हम लोगों का उल्लू बनाया है।"

"दफ़ा हो जाओ यहां से!"

"नीच!"

"ग़द्दार!"

डाक्टर गास्पर कुछ कहना, भीड़ को शान्त करना चाहते थे, मगर देर हो चुकी थी। कोई बारह व्यक्तियों ने मंच पर आकर नीग्रो को घेर लिया।

"इसकी खूब पिटाई करो!" कोई बुढ़िया चिल्लाई।

नीग्रो ने हाथ बढ़ाया। वह शान्त था।

"ज़रा इत्मीनान कीजिये!"

लोगों का शोर, चीख़-चिल्लाहट और सीटियां नीग्रो की आवाज़ में दब गयीं। ख़ामोशी छा गयी और उस ख़ामोशी में नीग्रो ने शान्त भाव से साफ़-साफ़ कहा—

"मैं नट तिबुल हूं।"

लोग हक्के-बक्के रह गये।

जिन लोगों ने तिबुल को घेर रखा था, वे पीछे हट गये।

"आह!" भीड़ ने गहरी सांस ली।

सैकड़ों लोग आश्चर्य से सिहरे और स्तम्भित होकर रह गये।

केवल एक ही व्यक्ति ने बदहवासी में पूछा—

"तो तुम काले क्यों हो?"

"यह डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये!" उसने मुस्कराकर डाक्टर की ओर संकेत किया।

"निस्सन्देह यह तिबुल ही है।"

"तिबुल!"

"हुर्रा! तिबुल सही-सलामत है! तिबुल जिन्दा है! तिबुल हमारे बीच है!"

"तिबुल ज़िंदाबाद!"

मगर ख़ुशी से नारे लगाते हुए लोग अचानक ही चुप हो गये। अप्रत्याशित कोई बुरी बात हो गयी थी। पीछे खड़े लोगों में घबराहट फैल गयी। लोग सभी दिशाओं में तितर-बितर होने लगे।

"ख़ामोश! ख़ामोश हो जाओ!"

"तिबुल भागो, अपनी जान बचाओ!"

चौक में तीन घुड़सवार आये और उनके पीछे एक घोड़ा-गाड़ी नमूदार हुई।

ये घुड़सवार थे—महल के सैनिकों का कप्तान काउंट बोनावेन्तूरा और उसके दो सैनिक। घोड़ा-गाड़ी में महल का एक कर्मचारी उत्तराधिकारी टुट्टी की टूटी हुई गुड़िया लिये बैठा था। घुंघराले कटे हुए बालों वाला गुड़िया का सिर करुणाजनक ढंग से कर्मचारी के कंधे के साथ सटा हुआ था।

ये लोग डाक्टर गास्पर की तलाश कर रहे थे।

"सैनिक!" कोई गला फाड़कर चीख़ उठा।

बहुत-से लोग पास की बाड़ फांद गये।

काली घोड़ा-गाड़ी रुक गयी। घोड़े सिर झटक रहे थे। उनके साजों की घंटियां टनटना रही थीं, साज लौ दे रहे थे। हवा घोड़ों के सिरों पर लगे हुए नीले पंखों के गुच्छों से खिलवाड़ कर रही थी।

घुड़सवार घोड़ा-गाड़ी के गिर्द खड़े हो गये।

कप्तान बोनावेन्तूरा की आवाज़ बड़ी भयानक थी। अगर वायलिन की आवाज़ से दांत में दर्द-सा अनुभव होता था, तो कप्तान की आवाज़ से ऐसा लगता था मानो किसी ने दांत तोड़ डाला हो।

कप्तान ने रक़ाबों में उठकर पूछा –

"डाक्टर गास्पर आर्नेरी का घर कहां है?"

वह लगामों को कसे हुए था। वह हाथों में चौड़े-चौड़े कफ़ों वाले चमड़े के खुरदरे-से दस्ताने पहने था।

उसके प्रश्न की मानो एक बुढ़िया पर बिजली-सी गिरी। वह बुरी तरह सहम उठी और किसी एक दिशा में उसने अपना हाथ हिला दिया।

"कहां है?" कप्तान ने प्रश्न दोहराया।

अब उसकी आवाज़ से ऐसी अनुभूति हुई मानो एक दांत नहीं, बत्तीसी ही तोड़ डाली गयी हो।

"मैं यहां हूं। कौन मुझे पूछ रहा है?"

लोग इधर-उधर बिखर गये। डाक्टर गास्पर सधे हुए क़दम रखते घोड़ा-गाड़ी के क़रीब आये।

"आप हैं डाक्टर गास्पर आर्नेरी?"

"हां, मैं ही हूं।"

घोड़ा-गाड़ी का पट खुला।

"फ़ौरन घोड़ा-गाड़ी में बैठ जाइये। अभी आपको आपके घर ले जायेंगे और वहां आपको सारी बात का पता चल जायेगा।"

एक अरदली घोड़ा-गाड़ी के पीछे से कूदकर आगे आया और उसने डाक्टर गास्पर को सहारा देकर घोड़ा-गाड़ी में चढ़ाया। पट बन्द कर दिया गया।

धूल का बादल उड़ाता हुआ जुलूस रवाना हो गया। घड़ी भर बाद सभी लोग मोड़ मुड़कर ओझल हो गये।

न तो कप्तान बोनावेन्तूरा और न सैनिकों का ध्यान ही भीड़ के पीछे खड़े हुए तिबुल की ओर गया। वैसे भी नीग्रो को देखकर वे उस व्यक्ति को न पहचान पाते जिसे ढूंढ़ने के लिए पिछली रात वे बेहद दौड़-धूप करते रहे थे।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो खतरा टल गया था। मगर अचानक किसी की गुस्से से भरी आवाज़ सुनाई दी।

पहलवान लापीतूप मोमजामे से ढके लकड़ी के घेरे पर चढ़ता हुआ चिल्ला रहा था—

"ज़रा ठहरो... ज़रा ठहरो तो, अब तुम्हें मजा चखाऊंगा, मेरे दोस्त! मैं अभी सैनिकों को जाकर बताता हूं कि तुम यहां हो!"

इतना कहकर वह लकड़ी के घेरे पर चढ़ गया।

लकड़ी का घेरा मोटे का वज़न बर्दाश्त न कर पाया। वह ज़ोर से चरमराकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।

पहलवान की टांग बेंच में फंस गई। उसने उसे बाहर निकाला और लोगों की भीड़ को चीरता हुआ तेज़ी से घोड़ा-गाड़ी के पीछे भाग चला।

"रुक जाइये!" वह भागता हुआ अपने नंगे और गोल-मटोल हाथों को हिलाता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता जा रहा था। "रुक जाइये! नट तिबुल का पता चल गया! नट तिबुल यहां है! मेरी मुट्ठी में बन्द है!"

मामले ने खतरनाक रुख ले लिया। घूमती हुई आंख की पुतली और पेटी के साथ टंगी हुई पिस्तौल वाला स्पेनी भी सामने आ गया। दूसरी पिस्तौल उसके हाथ में थी। उसने हो-हल्ला मचा दिया। वह मंच पर उछलता-कूदता हुआ शोर मचा रहा था—

"उपस्थितगण! हमें तिबुल को सौंप देना चाहिए, वरना हमारी शामत आ जायेगी! हमें तीन मोटों से नहीं उलझना चाहिए!"

मंडप का वह मैनेजर भी उसके साथ आ मिला जिसके पहलवान को तिबुल ने मंच से भगा दियर था। वह चिल्लाया—

"इसने मेरा तमाशा चौपट कर दिया! इसने पहलवान लापीतूप को मंच से भगा दिया! मैं इसके लिए तीन मोटों के गुस्से का शिकार नहीं होना चाहता!"

लोगों की भीड़ ने तिबुल को अपनी ओट में कर लिया।

पहलवान घुड़सवारों तक नहीं पहुंच पाया। वह फिर से चौक में लौट आया। वह तेज़ी से तिबुल की ओर बढ़ा जा रहा था। स्पेनी कूदकर मंच से नीचे उतर गया और उसने दूसरी पिस्तौल भी बाहर निकाल ली। मंडप का मैनेजर न जाने कहां से सफ़ेद काग़ज़ का एक चक्र उठा लाया। सरकस में सधे हुए कुत्ते ऐसे ही चक्रों के बीच से कूदते हैं। वह इसी चक्र को घुमाता हुआ स्पेनी के पीछे-पीछे मंच से नीचे कूद गया।

स्पेनी ने पिस्तौल का घोड़ा चढ़ा लिया।

तिबुल ने समझ लिया कि अब उसे भाग जाना चाहिए। भीड़ ने रास्ता दे दिया। पलक झपकते में वह चौक से ग़ायब हो गया। वह बाड़ फांदकर सब्ज़ी के खेत में जा

पहुंचा। उसने सेंध में से झांककर देखा। पहलवान, स्पेनी और मैनेजर खेत की ओर भागे आ रहे थे। नजारा ऐसा था कि बरबस हंसी आ जाये। तिबुल हंस पड़ा।

पहलवान उन्मत्त हाथी की तरह भागा आ रहा था, स्पेनी पिछली टांगों पर उछलने वाले चूहे जैसा लग रहा था और मैनेजर घायल टांग वाले कौए की तरह कूद रहा था।

"हम तुम्हें जिन्दा पकड़ लेंगे!" वे चिल्लाये। "अपने को हमारे हवाले कर दो!"

स्पेनी पिस्तौल के घोड़े को खटखटा रहा था, दांत किटकिटा रहा था। मैनेजर कागज का चक्र घुमा रहा था।

तिबुल हमला होने का इन्तजार करने लगा। वह भुरभुरी काली मिट्टी पर खड़ा था। उसके चारों ओर क्यारियां थीं। उन में पत्तागोभी के कल्ले थे, चुकन्दर थे, हरे-हरे सिर बाहर निकले हुए थे, डंठल हिल रहे थे और चौड़े-चौड़े पत्ते पड़े हुए थे।

हवा में सभी कुछ हिल-डुल रहा था। निर्मल नीलाकाश खूब चमक रहा था।

लड़ाई शुरू हुई।

तीनों व्यक्ति बाड़ के क़रीब पहुंचे।

"तुम यहां हो?" पहलवान ने पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला।

तब स्पेनी ने कहा —

"अपने को हमारे हवाले कर दो! मेरे दोनों हाथों में पिस्तौलें हैं। ये पिस्तौलें दुनिया की सबसे अच्छी फ़र्म 'ठग और बेटा' की बनी हुई हैं। मैं देश का सबसे बढ़िया निशानेबाज हूं, समझे?"

तिबुल को पिस्तौल चलाने की कला में कमाल हासिल नहीं था। उसके पास तो पिस्तौल थी भी नहीं। मगर उसके हाथ के पास या शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि उसके पैर के पास पत्तागोभी के बहुत-से कल्ले जरूर पड़े हुए थे। वह झुका, उसने एक गोल और भारी-सा कल्ला तोड़ा और बाड़ के दूसरी ओर दे मारा। कल्ला मैनेजर के पेट पर जाकर लगा। इसके बाद उसने दूसरा और तीसरा कल्ला फेंका... वे लगभग बम की तरह फटे।

दुश्मनों के होश हवा हो गये।

तिबुल चौथा कल्ला उठाने के लिए झुका। उसने उसे दोनों हाथों में भर लिया, उखाड़ने के लिए जोर लगाया, मगर नहीं, उसे कामयाबी नहीं मिली। इतना ही नहीं, उसने तो इन्सान की तरह बात भी करनी शुरू कर दी!

"यह गोभी का कल्ला नहीं, मेरा सिर है। मैं गुब्बारे बेचनेवाला हूं। मैं एक भूमिगत मार्ग द्वारा तीन मोटों के महल से भाग आया हूं। इस मार्ग का आरम्भ होता है

एक देश से और अन्त होता है यहां। वह मार्ग जमीन के नीचे लम्बी आंत की तरह फैला हुआ है..."

तिबुल को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। पत्तागोभी का कल्ला इन्सान का सिर बन गया था!

तिबुल तब झुका और उसने ध्यान से इस करिश्मे की ओर देखा। उसे अपनी आंखों पर विश्वास करना ही पड़ा। वह व्यक्ति जो रस्से पर चल सकता है, उसकी आंखें धोखा नहीं खा सकती थीं। उसने जो कुछ देखा था, उसमें पत्तागोभी के कल्ले जैसी कोई चीज़ नहीं थी।

यह गुब्बारे बेचनेवाले का गोल-मटोल लोबड़ा था। सदा की भांति वह बेल-बूटों और पतली टूटी वाली केतली के समान लग रहा था।

गुब्बारे बेचनेवाले का सिर जमीन से ऊपर को उठा हुआ था और उसकी गर्दन के गिर्द काली, सीली मिट्टी का कालर-सा बना हुआ था।

"यह भी खूब रही!" तिबुल ने कहा।

गुब्बारे बेचनेवाला गोल-गोल आंखों से तिबुल की ओर देख रहा था जिनमें निर्मल नीलाकाश प्रतिबिम्बित हो रहा था।

"मैंने रसोइये-छोकरों को अपने गुब्बारे दे दिये और उन्होंने भागने में मेरी सहायता की... वह देखो, उनमें से एक गुब्बारा उड़ भी रहा है..."

तिबुल ने उधर नजर दौड़ाई और बहुत ऊंचाई पर नीले आकाश में संतरे रंग का एक छोटा-सा गुब्बारा उड़ता हुआ देखा।

यह उन गुब्बारों में से एक था जो रसोइये-छोकरों ने उड़ा दिये थे।

उन तीनों ने भी जो बाड़ के पीछे खड़े हमले की योजना बना रहे थे, गुब्बारा देखा। अब स्पेनी तो सब कुछ ही भूल गया। वह जमीन से ऊपर को उछला, उसने अपनी आंख की पुतली घुमाई और निशाना साधने की मुद्रा बना ली। उसे तो निशानेबाजी का जनून था।

"उधर देखिये," वह चिल्लाया। "दस बुर्जों की ऊंचाई पर वह निकम्मा गुब्बारा उड़ रहा है! मैं सोने की दस मुहरों की शर्त लगाने को तैयार हूं कि उसे बींध डालूंगा। मुझसे बेहतर निशानेबाज ढूंढ़े नहीं मिलेगा!"

कोई भी उससे शर्त लगाने को तैयार नहीं था, मगर इस से स्पेनी के जोश में कमी नहीं आई। पहलवान और मैनेजर तो गुस्से से लाल-पीले हो उठे।

"पाजी!" पहलवान चिल्ला उठा। "एकदम पाजी! यह गुब्बारों को निशाने बनाने का समय नहीं है। पाजी न हो तो! हमें तिबुल को पकड़ना है! बेकार कारतूस बरबाद न करो।"

मगर इस से कोई लाभ नहीं हुआ। यह बढ़िया निशानेबाज किसी भी तरह अपने पर क़ाबू न पा सका। निशाना लगाने के लिये गुब्बारा बहुत ही आकर्षक था। स्पेनी ने अपनी घुमती हुई पुतलीवाली आंख बन्द करके निशाना साधना शुरू किया। जब तक वह निशाना साधता रहा, तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले को जमीन से बाहर निकाला। कैसा दृश्य था वह! उसके कपड़ों पर क्या कुछ नहीं था! कहीं कुछ क्रीम लगी थी और कहीं शर्बत, कहीं कीचड़ चिपका हुआ था तो कहीं फलों के मुरब्बे के बने सितारे!

उस जगह, जहां से तिबुल ने उसे बोतल के डाट की तरह खींचकर बाहर निकाला, बड़ा-सा काला सूराख़ रह गया। उसमें मिट्टी भर गई और ऐसी आवाज हुई मानो छत पर बरसात की मोटी-मोटी बूंदें टपटपा रही हों।

स्पेनी ने गोली चलाई। गुब्बारे को तो ख़ैर, वह निशाना न बना पाया। ओह! उसकी गोली तो मैनेजर के हरे टोप में, जो ख़ुद भी एक बुर्ज के बराबर ऊंचा था, जा लगी।

तिबुल ने सब्जी के खेत की बाड़ फांदी और नौ-दो-ग्यारह हो गया।

हरा टोप गिर पड़ा और समोवार की पाइप की तरह लुढ़कने लगा। स्पेनी के हाथों के तोते उड़ गये। उसकी बढ़िया निशानेबाज़ होने की ख्याति मिट्टी में मिल गयी थी। इतना ही नहीं, वह मैनेजर की नज़रों में गिर गया था।

"अरे उल्लू!" मैनेजर आपे से बाहर हो गया। उसने काग़ज़ी चक्र स्पेनी के सिर पर दे मारा।

काग़ज़ फट गया और स्पेनी के सिर के गिर्द दांतेदार काग़ज़ी कालर-सा बन गया।

सिर्फ़ लापीतूप ही मुंह ताकता हुआ खड़ा रह गया। गोली दग़ने की आवाज़ से आसपास के कुत्ते भड़क उठे। उनमें से एक कहीं से भागता हुआ आया और पहलवान की ओर झपटा।

"भागो, भागो बचकर!" लापीतूप ने चिल्लाकर कहा।

तीनों सिर पर पांव रखकर भागे।

गुब्बारे बेचनेवाला अकेला ही रह गया। उसने बाड़ पर चढ़कर इधर-उधर नज़र दौड़ाई। तीनों मित्र एक हरी-भरी पहाड़ी से नीचे लुढ़क रहे थे। लापीतूप एक टांग पर उछल रहा था और दूसरी मोटी टांग को उस जगह से पकड़े हुए था जहां से कुत्ते ने उसे काट लिया था। मैनेजर एक वृक्ष पर जा चढ़ा था और उसके साथ लटका हुआ उल्लू जैसा लग रहा था। स्पेनी काग़ज़ी चक्र में से अपने सिर को हिलाता-डुलाता हुआ कुत्ते पर गोली चलाता था और हर बार खेत में खड़े कनकौवे को ही बींधता था।

कुत्ता पहाड़ी के ऊपर खड़ा था और ऐसा ही प्रतीत होता था मानो उसने फिर से झपटने का इरादा छोड़ दिया हो।

कुत्ते को लापीतूप की मोटी टांग से जो मज़ा मिला था, वह उस से सन्तुष्ट नज़र आता था। वह अपनी चमकती हुई गुलाबी ज़बान बाहर निकाले पूंछ हिला रहा था और ख़ुश दिखाई दे रहा था।

छठा अध्याय

अप्रत्याशित परिस्थितियां

तिबुल से जब यह पूछा गया था कि वह काला कैसे हो गया है तो उसने जवाब दिया था कि "डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये"।

मगर डाक्टर गास्पर से पूछे बिना भी कारण का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। हमें याद है कि तिबुल लड़ाई के मैदान से बच निकलने में सफल हो गया था। हमें इस

रात का भी स्मरण है कि सैनिक उसकी तलाश करते रहे थे, उन्होंने मजदूरों के मुहल्ले जला दिये थे और सितारे के चौक में गोलियां चलाई थीं। तिबुल भागकर डाक्टर गास्पर के घर में आ छिपा था। मगर यहां उसे किसी भी क्षण पकड़ा जा सकता था। खतरा इसी बात का था कि यहां उसे बहुत बड़ी संख्या में लोग पहचानते थे।

हर दुकानदार तीन मोटों का हिमायती था, क्योंकि वह खुद भी मोटा और धनी था। डाक्टर गास्पर के अड़ोस-पड़ोस में रहनेवाले धनी लोग सैनिकों तक यह खबर पहुंचा सकते थे कि तिबुल डाक्टर गास्पर के घर में है।

"आपको अपनी शक्ल-सूरत बदलनी होगी," डाक्टर गास्पर ने उस रात को कहा जब तिबुल उनके घर नमूदार हुआ।

डाक्टर गास्पर ने ही उसे नीग्रो बना दिया था। उन्होंने कहा था—

"तुम लम्बे-तड़ंगे हो। तुम्हारा सीना उभरा हुआ, कंधे चौड़े-चौड़े, दांत चमकते हुए और बाल सख्त, काले और घुंघराले हैं। अगर त्वचा गोरी न होती तो उत्तरी अमरीका के नीग्रो जैसे लगते। हां, यह खूब सूझी! मैं तुम्हें काला बनने में मदद दूंगा।"

डाक्टर गास्पर आर्नेरी को सौ विज्ञानों की जानकारी थी। वे बहुत ही गम्भीर, मगर उदारमना व्यक्ति थे। काम के वक्त काम और खेल के वक्त खेल ही होना चाहिए।

इसलिए वे कभी-कभी अपना जी भी बहलाते। मगर विश्राम भी करते तो वैज्ञानिक की भांति। तब वह ग़रीब यतीम बालकों के लिए उपहारस्वरूप पानी में भिगोकर उतारी जानेवाली तस्वीरें, अद्भुत फुलझड़ियां, खिलौने, ग़ज़ब की और अनजानी आवाज़ों वाले वाद्ययन्त्र और नये रंग बनाते।

"यह देखिये," उन्होंने तिबुल से कहा। "इस बोतल में रंगहीन तरल पदार्थ है। ख़ुश्क हवा में जिस भी शरीर पर इसे लगाया जायेगा, वह काला हो जायेगा, सो भी कुछ कुछ बैंगनी-सा – नीग्रो जैसे रंग का। और इस बोतल में वह पदार्थ है जो इस रंग को साफ़ कर देता..."

तिबुल ने रंग-बिरंगे तिकोनों से बनी हुई अपनी बिरजस उतारी और कार्क की बदबू तथा जलन पैदा करने वाला तरल पदार्थ अपने तन पर मला।

एक घंटे बाद उसकी त्वचा का रंग काला हो गया।

तभी मौसी गानीमेड अपना चूहा लिये हुए आई थी। इसके बाद की कहानी हमें मालूम है।

अब हम डाक्टर गास्पर की ओर लौटते हैं। हमें याद है कि कप्तान बोनावेन्तूरा उन्हें महल के कर्मचारी के साथ काली घोड़ा-गाड़ी में बिठाकर ले गया था।

घोड़ा-गाड़ी उड़ी चली जा रही थी। यह तो हमें मालूम ही है कि पहलवान लापीतूप उस तक नहीं पहुंच पाया था। घोड़ा-गाड़ी के अन्दर अंधेरा था। भीतर जाने पर डाक्टर ने शुरू में तो यह समझा कि उसके पास बैठा हुआ कर्मचारी अस्तव्यस्त बालों वाली एक बालिका को अपनी गोद में लिये है।

कर्मचारी मौन साधे था। बालिका भी।

"क्षमा कीजिये, आपके लिये जगह थोड़ी तो नहीं हो रही?" डाक्टर ने टोप उतारते हुए शिष्टतावश पूछा।

कर्मचारी ने रुखाई से जवाब दिया –

"आप चिन्ता न करें।"

घोड़ा-गाड़ी की छोटी-छोटी खिड़कियों से कुछ-कुछ रोशनी छन रही थी। कुछ क्षण बाद आंखों को अन्धेरे में नज़र आने लगा। तब डाक्टर को लम्बी नाक वाला कर्मचारी,

जो अपनी पलकों को कुछ-कुछ मूंदे था, दिखाई दिया और बहुत ही सुन्दर फ्रॉक पहने प्यारी-सी बालिका की भी झलक मिली। बालिका बहुत ही उदास-सी प्रतीत हुई। सम्भवतः उसका रंग ज़र्द था, मगर अंधेरे में यह तय करना मुमकिन नहीं था।

"बेचारी बच्ची!" डाक्टर गास्पर ने सोचा। "ज़रूर यह बीमार है।" उन्होंने फिर से कर्मचारी को सम्बोधित किया—

"सम्भवतः आप मुझसे मदद लेने आये हैं? लगता है यह बेचारी बच्ची बीमार हो गयी है?"

"हां, आपकी मदद की जरूरत है," लम्बी नाक वाले कर्मचारी ने उत्तर दिया।

"निश्चय ही यह तीन मोटों में से किसी एक की भतीजी या उत्तराधिकारी टुट्टी की कोई छोटी-सी मेहमान है।" डाक्टर ने अनुमान लगाया। "इसकी पोशाक बढ़िया है, इसे महल से लाया जा रहा है और सैनिकों का कप्तान इसके साथ आया है। जाहिर है कि यह कोई साधारण बालिका नहीं है। मगर जिन्दा बच्चों को तो उत्तराधिकारी टुट्टी के निकट ही नहीं आने दिया जाता। तब यह नन्ही परी वहां कैसे जा पहुंची?"

डाक्टर अपने अनुमानों में ही उलझ गये। उन्होंने फिर से लम्बी नाक वाले कर्मचारी से बातचीत शुरू की—

"कहिये तो बच्ची को क्या बीमारी है? डिफ़्थीरिया तो नहीं?"

"नहीं, उसकी छाती में छेद है।"

"आपका मतलब है कि फेफड़ों में कुछ गड़बड़ है?"

"उसकी छाती में छेद है," कर्मचारी ने दोहराया।

डाक्टर ने शिष्टतावश बात को गोलमोल ही रहने दिया।

"बेचारी बच्ची!" उन्होंने गहरी सांस ली।

"यह बच्ची नहीं, गुड़िया है," कर्मचारी ने कहा।

इसी समय घोड़ा-गाड़ी डाक्टर के घर के सामने जा पहुंची।

कर्मचारी और कप्तान बोनावेन्तूरा डाक्टर के पीछे-पीछे उनके घर में गये। डाक्टर उन्हें अपनी प्रयोगशाला में ले गये।

"अगर यह गुड़िया है तो भला मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

कर्मचारी ने सारी बात स्पष्ट की।

मौसी गानीमेड सुबह की घटना को अभी तक नहीं भूली थी और उत्तेजित थी। उसने छेद में से, भीतर झांककर देखा। वहां उसे डरावना कप्तान बोनावेन्तूरा दिखाई दिया। वह अपनी तलवार की टेक लगाये खड़ा था और घुटनों तक के मुड़े हुए किनारों वाले बड़े-बड़े बूट पहने अपने एक पैर को हिला-डुला रहा था। उसके बूटों की एड़ियां दुमदार तारों

जैसी थीं। मौसी को बढ़िया गुलाबी फ़ॉक में उदास और बीमार बालिका भी नजर आई जिसे कर्मचारी ने आराम कुर्सी पर बिठा दिया था। बालिका का अस्तव्यस्त बालों वाला सिर झुका हुआ था। ऐसा लगता था मानो वह फुंदनों की जगह लगाये गये सुनहरे गुलाबों वाले प्यारे-प्यारे रेशमी सैंडलों की ओर देख रही थी।

तेज हवा के झोंके हॉल के शटरों को खटखटा रहे थे और इस से मौसी गानीमेड के बातचीत सुनने में बाधा पड़ रही थी। फिर भी कुछ न कुछ तो उसकी समझ में आ ही गया।

कर्मचारी ने डाक्टर गास्पर को तीन मोटों की राज्यीय परिषद् का फ़रमान दिखाया। डाक्टर ने उसे पढ़ा तो उनके हाथों के तोते उड़ गये।

"गुड़िया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए," कर्मचारी ने उठते हुए कहा।

कप्तान बोनावेन्तूरा ने एड़ियां बजायीं।

"मगर... मगर..." डाक्टर ने हाथ हिलाये। "मैं कोशिश करूंगा, मगर वादा नहीं कर सकता। मैं इस जादुई गुड़िया के कल-पुर्जों से अपरिचित हूं। मुझे उन्हें देखना-समझना होगा, यह मालूम करना होगा कि इनमें क्या ख़राबी हुई है और नये पुर्जे तैयार करने होंगे। इसके लिये बहुत काफ़ी वक़्त की जरूरत होगी। हो सकता है कि यह मेरी समझ में ही न आये... मुमकिन है कि मैं इस ख़राब की हुई गुड़िया को ठीक ही न कर पाऊं... मैं विश्वास के साथ नहीं कह सकता, महाजन... इतना थोड़ा समय है... केवल एक रात... मैं वादा नहीं कर सकता..."

कर्मचारी ने उन्हें टोका। उंगली उठाते हुए उसने कहा—

"उत्तराधिकारी टूट्टी के दुख का पारावार नहीं, इसलिए देर नहीं होनी चाहिए। गुड़िया कल सुबह तक ठीक-ठाक हो जानी चाहिए। तीन मोटों का यही हुक्म है। उनके हुक्म अवूली करने की किसी को जुर्रत नहीं हो सकती । कल सुबह आप ठीक-ठाक और भली-चंगी गुड़िया लिये हुए तीन मोटों के महल में आइयेगा।"

"मगर... मगर..." डाक्टर ने विरोध किया।

"यह 'अगर-मगर' बन्द कीजिये! गुड़िया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए। अगर आप यह कर देंगे तो आपको इनाम दिया जायेगा, अगर नहीं, तो कड़ी सजा।"

डाक्टर के तो होश हवा हो गये थे।

"मैं कोशिश करूंगा," वह मिनमिनाये। "मगर इतना तो समझिये कि यह बहुत अधिक जिम्मेदारी का काम है।"

"बेशक!" कर्मचारी ने फ़ौरन कहा और उंगली नीचे कर ली। "मैंने आदेश आप तक पहुंचा दिया, आपका काम है उसे पूरा करना। नमस्कार!"

मौसी गानीमेड दरवाज़े से पीछे हटी और अपने कमरे में भाग गयी जहां कोने में खुशक़िस्मत चूहा चीं-चीं कर रहा था। डरावने मेहमान बाहर निकले। कर्मचारी घोड़ा-गाड़ी में जा बैठा, काउंट बोनावेन्तूरा अपनी चमक-दमक दिखाता उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। सैनिकों ने अपने टोप नीचे को कर लिये। सभी वहां से रवाना हो गये।

उत्तराधिकारी टूटी की गुड़िया डाक्टर की प्रयोगशाला में रह गयी।

डाक्टर ने मेहमानों को विदा किया, फिर मौसी गानीमेड के पास आये और असाधारण कड़ाई से बोले –

"मौसी गानीमेड, ध्यान से मेरी बात सुनिये। लोग मुझे बुद्धिमान व्यक्ति मानते हैं, डाक्टर के नाते मेरी अच्छी ख्याति है और मुझे निपुण कारीगर भी माना जाता है। मैं अपनी ख्याति को बड़ा महत्व देता हूं। इसके अलावा मैं अपने सिर को भी सही-सलामत देखना चाहता हूं। कल सुबह मेरी ख्याति को भी बट्टा लग सकता है और सिर भी कलम किया जा सकता है। आज रात भर मुझे बहुत मुश्किल काम करना है। समझीं?" डाक्टर ने तीन मोटों की राज्यीय परिषद् का फ़रमान हिलाते हुए उसे दिखाया। "मेरे काम में किसी तरह का खलल नहीं पड़ना चाहिये! शोर-गुल नहीं होना चाहिये। तश्तरियों को नहीं बजाइयेगा। चूल्हे पर कुछ नहीं जलाइयेगा। मुर्गियों को आवाज़ नहीं दीजियेगा। चूहे को मत पकड़ियेगा। आमलेट, फूलगोभी, मिठाई और दिल को ताक़त देनेवाली दवाई की बात नहीं कीजियेगा! समझ गयीं?"

डाक्टर गास्पर बहुत गुस्से में थे।

मौसी गानीमेड ने अपने को कमरे में बन्द कर लिया।

"अजीब बातें हो रही हैं, बड़ी ही अजीब बातें!" वह बड़बड़ाती रही। "ख़ाक भी तो मेरी समझ में नहीं आ रहा... पहले तो वह नीग्रो कहीं से आ टपका, फिर गुड़िया और अब यह फ़रमान... अजीब बातें हो रही हैं आजकल!"

अपने को शान्त करने के लिये वह अपनी भतीजी के नाम ख़त लिखने बैठ गयी। ख़त बहुत सावधानी से लिखना पड़ा ताकि क़लम की आवाज़ न हो। वह नहीं चाहती थी कि डाक्टर बिगड़ उठें।

एक घंटा गुज़र गया। मौसी गानीमेड लिखे जा रही थी। वह यहां तक लिख चुकी थी कि कैसे उस सुबह को डाक्टर की प्रयोगशाला में अचानक ही एक नीग्रो नमूदार हुआ था। उसने आगे लिखा –

"...वे दोनों बाहर गये। डाक्टर महल के एक कर्मचारी और सैनिकों के साथ लौट आये। कर्मचारी और सैनिक एक गुड़िया लेकर आये जो बिल्कुल ज़िन्दा लड़की लगती है, मगर नीग्रो उनके साथ नहीं लौटा। वह कहां चला गया मुझे मालूम नहीं..."

नीग्रो, जो वास्तव में नट तिबुल था, कहां चला गया था, यह सवाल डाक्टर गास्पर को भी परेशान कर रहा था। गुड़िया की मरम्मत करते हुए वे लगातार तिबुल के बारे में सोचते रहे। वे झुंझला उठे। अपने आप से बातें करने लगे –

"हद हो गयी लापरवाही की भी! मैंने उसे नीग्रो बनाया, उसे अद्भुत रंग से रंगा, ऐसा बना दिया कि कोई भी पहचान न पाये, मगर चौदहवें बाजार में उसने खुद ही अपना भंडाफोड़ कर दिया! उसे तो गिरफ़्तार किया जा सकता था! ओह! कितना लापरवाह है वह! क्या वह लोहे के पिंजरे में बन्द होना चाहता है?" डाक्टर खीझ रहे थे। तिबुल की लापरवाही, फिर यह गुड़िया... इसके अलावा पिछले दिन की परेशानियां, अदालत चौक में जल्लादों के दस तख़्ते...

"बड़ा भयानक वक़्त आ गया है!" डाक्टर कह उठे।

डाक्टर को यह मालूम नहीं था कि उस दिन दी जानेवाली सज़ायें रद्द कर दी गयी हैं। महल का कर्मचारी नपी-तुली बात करनेवाला व्यक्ति था। उसने महल में घटी घटना के बारे में डाक्टर को कुछ नहीं बताया। डाक्टर उस बेचारी गुड़िया की ओर देखते हुए सोचने लगे –

"इस पर ये वार किसने किये हैं? जरूर किसी हथियार से, शायद तलवार से ही। इस गुड़िया, इस प्यारी बच्ची पर वार किये... किसने ऐसा किया? किसे हिम्मत हुई उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया को तलवार से बींधने की?"

डाक्टर यह अनुमान नहीं लगा पाये कि सैनिकों ने ऐसा किया था। उनके दिमाग़ में यह बात नहीं आ सकती थी कि महल के सैनिक भी तीन मोटों का साथ देना बन्द कर जनता की ओर होते जा रहे हैं। अगर उन्हें यह मालूम हो जाता, तो कितनी ख़ुशी होती!

डाक्टर ने गुड़िया का सिर हाथों में ले रखा था। सूरज खिड़की में से झांक रहा था। गुड़िया उसके प्रकाश में ख़ूब चमक रही थी। डाक्टर उसे ग़ौर से देख रहे थे।

"अजीब बात है, बड़ी अजीब बात है," वह सोच रहे थे, "यह चेहरा तो मैंने कहीं पहले भी देखा है... हां, जरूर! मैंने इसे देखा है, मैं इसे पहचान रहा हूं। मगर कहां देखा था मैंने इसे? कब देखा था? वह जीता-जागता चेहरा था, एक जीवित बालिका का चेहरा, बड़ा प्यारा-सा, मुस्कराता हुआ, तरह तरह के मुंह बनाता, गम्भीर होता, चंचलता दिखाता और उदास होता हुआ... हां, हां! इसमें रत्ती भर भी शक-शुबह नहीं हो सकता! मगर मेरी कम्बख़्त कमज़ोर नज़र चेहरों को याद कर पाने में बाधा डालती है।"

डाक्टर ने गुड़िया के घुंघराले सिर को अपनी आंखों के निकट कर लिया।

"कैसी कमाल की गुड़िया है! कैसे सधे हुए हाथों ने इसे बनाया है! साधारण गुड़ियों जैसी तो उसमें कोई बात ही नहीं। गुड़ियों की आम तौर पर फूली-फूली नीली आंखें होती हैं, उन

में इन्सानी आंखों जैसी कोई भी चीज़ नहीं होती, वे भावनाशून्य होती हैं, उनकी छोटी-सी नाक, फीते जैसे होंठ और बेढंगे से भूरे बाल होते हैं मेमने के ऊन जैसे। गुड़िया वैसे तो सुखी दिखाई देती है, पर वास्तव में होती है भावनाशून्य... मगर इस गुड़िया में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है। क़सम खाकर कहता हूं कि यह तो बिल्कुल ऐसी है मानो किसी लड़की को ही गुड़िया में बदल दिया गया हो!"

डाक्टर गास्पर अपनी असाधारण रोगिनी पर मुग्ध हुए जा रहे थे। उनके दिमाग़ में लगातार यह बात आ रही थी कि कभी, और कहीं तो उन्होंने यह पीला-सा चेहरा, गम्भीर भूरी आंखें और कटे हुए अस्तव्यस्त बाल देखे हैं। सिर को हिलाने-डुलाने का ढंग और आंखों का अन्दाज़ तो ख़ास तौर पर जाना-पहचाना प्रतीत हुआ। वह अपने सिर को ज़रा-सा एक ओर को घुमाकर डाक्टर को झुकी-झुकी नज़र से, बहुत ग़ौर से और शरारत भरे ढंग से देखा करती थी...

डाक्टर अपने पर क़ाबू न रख पाये और उन्होंने ऊंचे स्वर में पूछ ही लिया –

"क्या नाम है तेरा, गुड़िया?"

मगर लड़की चुप रही। तभी डाक्टर को एहसास हुआ कि गुड़िया ख़राब हो गयी है; उसकी आवाज़ लौटानी है, उसके दिल की मरम्मत करनी है, उसकी मुस्कान लौटानी है, उसे नाचना और हसी उम्र की लड़कियों के समान व्यवहार करना सिखाना है।

"देखने में कोई बारह साल की लगती है।"

इत्मीनान से काम करने का वक़्त नहीं था। डाक्टर काम में जुट गये। "मुझे इस गुड़िया को जिन्दा करना है!"

मौसी गानीमेड ने ख़त ख़त्म कर लिया। दो घंटे तक जैसे-तैसे ऊब बर्दाश्त करती रही। अब उसे कुरेद हुई – "जाने ऐसा क्या काम है जो डाक्टर को फ़ौरन करना चाहिये? जाने वह गुड़िया कैसी है?"

वह दबे पांव डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाज़े पर आयी और उसने दिल की शक्लवाले छेद में से झांकने की कोशिश की। ओह! वहां तो चाबी लगी हुई थी। उसे कुछ भी नज़र न आया। इसी समय दरवाज़ा खुला और डाक्टर गास्पर बाहर आये। वे इतना अधिक परेशान थे कि उन्होंने मौसी गानीमेड को उसकी इस बेहूदा हरकत के लिये डांटा-डपटा भी नहीं। मौसी गानीमेड के तो डांट-डपट के बिना ही होश-हवास उड़ गये।

"मौसी गानीमेड, मैं जा रहा हूं," डाक्टर ने कहा, "लगता है कि मुझे जाना ही होगा। बग्घी ले आइये।"

वह चुप हो गये और फिर हथेली से माथा सहलाते हुए बोले –

"मैं तीन मोटों के महल में जा रहा हूं। बहुत मुमकिन है कि मैं वहां से लौटकर न आऊं।"

मौसी गानीमेड को तो जैसे धक्का लगा, वह एकदम पीछे को हट गयी।

"तीन मोटों के महल में?"

"हां, मौसी गानीमेड। मामला बहुत टेढ़ा है। मेरे पास उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया लायी गयी है। वह दुनिया में सबसे अच्छी गुड़िया है। उसका स्प्रिंग टूट गया है। तीन मोटों की राज्यीय परिषद् ने मुझे कल सुबह तक इस गुड़िया को ठीक-ठाक करने का हुक्म दिया है। मुझे कठोर दण्ड दिया जायेगा..."

मौसी गानीमेड तो रुआंसी हो गयी।

"मैं इस बेचारी गुड़िया को ठीक नहीं कर पा रहा हूं। मैंने इसकी छाती में छिपे हुए स्प्रिंग को खोज निकाला है, उसके सभी राज समझ गया हूं और इसे ठीक भी कर सकता हूं। मगर... वह तो छोटी-सी चीज है! बड़ी मामूली-सी चीज के कारण मैं इसे ठीक नहीं कर सकता। इस रहस्यपूर्ण स्प्रिंग में एक दांतेदार चक्र है जो टूटा हुआ है... वह बिल्कुल बेकार हो गया है! नया बनाने की जरूरत है... मेरे पास आवश्यक धातु भी है, चांदी जैसी... मगर काम शुरू करने से पहले यह जरूरी है कि मैं इस धातु को कम से कम दो दिन तक तूतिये में भिगोये रखूं। समझती हैं न, दो दिन तक... मगर यह गुड़िया तो कल सुबह तक तैयार हो जानी चाहिये।"

"क्या कोई और चक्र नहीं लगा सकते?" मौसी गानीमेड ने झिझकते हुए पूछा।

डाक्टर ने निराशा से हाथ झटकते हुए कहा –

"मैं हर तरह की कोशिश कर चुका हूं, मगर बेसूद।"

पांच मिनट बाद एक बन्द बग्घी डाक्टर गास्पर के दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गयी। डाक्टर ने तीन मोटों के महल में जाने का इरादा बना लिया।

"मैं उनसे कह दूंगा कि कल सुबह तक गुड़िया तैयार नहीं हो सकती। फिर वे जैसा भी चाहें, मेरे साथ सुलूक कर सकते हैं..."

मौसी गानीमेड अपने पेशबन्द का छोर चबाने और सिर हिलाने लगी। वह तब तक सिर हिलाती रही जब तक कि उसे उसके अलग होकर गिर जाने की चिन्ता न हुई।

डाक्टर गास्पर ने गुड़िया को अपने पास बिठा लिया और बग्घी रवाना हो गयी।

सातवां अध्याय

अजीब गुड़िया की रात

हवा डाक्टर गास्पर के दोनों ओर सीटियां बजा रही थी। सान रखनेवाले द्वारा छुरी तेज़ करते समय जो आवाज़ पैदा होती है, हवा की सूं-सां उस से भी ज़्यादा नागवार लग रही थी।

डाक्टर ने कालर से कान ढक लिये और हवा की ओर पीठ कर ली।

तब हवा ने सितारों से खिलवाड़ शुरू किया। वह कभी उन्हें मानो फूंक मारकर बुझा देती, कभी उन्हें झूला झुलाती और कभी काली तिकोनी छतों के पीछे छिपा देती। जब यह खेल खेलकर उसका मन ऊब गया तो वह बादलों से उलझने लगी। मगर बादल पुरानी मीनारों की भांति इधर-उधर बिखर जाते। तब हवा गुस्से से एकदम सर्द हो गयी।

डाक्टर को लबादा ओढ़ लेना पड़ा। आधा लबादा उन्होंने गुड़िया को ओढ़ा दिया।

"ज़रा तेज़ी से हांकते चलो! भई कोचवान, ज़रा तेज़ी से!"

न जाने क्यों डाक्टर को डर महसूस होने लगा और वे कोचवान से घोड़े को जल्दी-जल्दी हांकने का अनुरोध करने लगे।

सड़कों पर अन्धेरा था, वे वीरान-सुनसान थीं और वातावरण दिल में दहशत पैदा करता था। केवल कुछ ही खिड़कियों में से लाल-लाल सी रोशनी छन रही थी, बाक़ी बन्द थीं। लोगों को भयानक घटनायें घटने की आशंका थी।

इस शाम को बहुत-सी बातें ग़ैरमामूली-सी लग रही थीं, वे मन में तरह-तरह की शंकायें पैदा कर रही थीं। डाक्टर को ऐसा भी लगा कि अन्धेरे में इस अजीब-सी गुड़िया की आंखें कहीं दो पारदर्शी पत्थरों की तरह चमक न उठें। उन्होंने गुड़िया की ओर से नज़र बचाने की कोशिश की।

"बकवास है!" उन्होंने अपने को तसल्ली दी। "यह तो महज़ मेरे दिल की कमज़ोरी है! यह हर शाम जैसी शाम है, केवल राहगीर कम हैं। सिर्फ़ हवा ही उनकी

परछाइयों से ऐसा खिलवाड़ कर रही है कि हर राहगीर रहस्यमय लबादे में लिपटा-लिपटाया किराये का हत्यारा प्रतीत होता है . . . ग्रौर चौराहों में जल रहे लैम्पों की रोशनी भी बड़ी अजीब तरह की नीली-नीली है . . . काश कि हम जल्दी से तीन मोटों के महल में पहुंच जायें!"

डर से निजात पाने की एक बहुत अच्छी दवाई है – सो जाना। कम्बल से मुंह-सिर ढक लेना तो विशेषतः बहुत लाभदायक रहता है। डाक्टर ने भी यही दवाई आजमाने का निश्चय किया। कम्बल की जगह उन्होंने अपना टोप नीचे की ओर खींचकर ग्रांखें ढक लीं। ग्रौर जाहिर है कि जैसे होना चाहिए था, उन्होंने एक सौ तक गिनना शुरू किया। मगर इस से कोई फ़ायदा न हुआ। तब उन्होंने ज्यादा कारगर तरीक़ा आजमाया। उन्होंने मन ही मन दोहराना शुरू किया –

"एक हाथी ग्रौर एक हाथी – ये हुए दो हाथी। दो हाथी ग्रौर एक हाथी – ये हुए तीन हाथी। तीन हाथी ग्रौर एक हाथी – ये हुए चार हाथी . . ."

इस तरह गिनते-गिनते उन्होंने हाथियों के झुण्ड तक गिनती कर डाली। एक सौ तेईसवां काल्पनिक हाथी तो सचमुच का हाथी बन गया। चूंकि डाक्टर यह न समझ पाये थे कि वह हाथी था या गुलाबी पहलवान लापीतूप, इसलिए जाहिर है कि वे सो गये थे ग्रौर सपने देखने लगे थे।

जागृत अवस्था की तुलना में सोते हुए समय कहीं अधिक तेजी से गुजरता है। पर ख़ैर, सपने में डाक्टर न केवल तीन मोटों के महल में जा पहुंचे, बल्कि उन्होंने यह भी देखा कि उनके खिलाफ़ मुकदमे की कार्रवाई की जा रही है। हर मोटा उनके सामने हाथ में गुड़िया लिए ऐसे ही खड़ा था जैसे जिप्सी नीले लहंगेवाली बन्दरिया को उठाये रहता है।

वे किसी तरह का हीला-हवाला सुनने को तैयार न थे।

"तुमने हमारा फ़रमान पूरा नहीं किया," वे कह रहे थे, "तुम्हें इस के लिए कड़ी सज़ा दी जायेगी। तुम्हें गुड़िया हाथ में लिए हुए सितारे के चौक में कसे हुए रस्से पर चलना होगा। मगर पहले तो तुम अपना चश्मा उतार लो . . ."

डाक्टर ने क्षमा कर देने की प्रार्थना की। उन्हें सबसे ज्यादा फ़िक्र तो गुड़िया की थी . . . उन्होंने कहा –

"मैं तो गिरने का आदी हो चुका हूं . . . अगर मैं रस्से से फिसलकर नीचे तालाब में जा भी गिरा, तो कोई ख़ास बात नहीं। मुझे इसका तजरबा है – मैं शहर के फाटक के क़रीब बुर्ज के साथ नीचे गिर चुका हूं . . . मगर गुड़िया, बेचारी गुड़िया का तो ख़्याल कीजिये! वह तो चूर-चूर हो जायेगी . . . कृपया इस पर रहम कीजिये . . . देखिये, मुझे

यक़ीन है कि यह गुड़िया नहीं है, जीती-जागती लड़की है, बहुत ही प्यारा-सा नाम है इसका, जो मैं भूल गया हूं, जो मुझे याद नहीं आ रहा..."

"नहीं!" तीन मोटे चिल्लाये। "नहीं, तुम्हें हरगिज़ माफ़ नहीं किया जायेगा! तीन मोटों का यही हुक्म है!" वे इतने ज़ोर से चिल्लाये कि डाक्टर की आंख खुल गयी।

"तीन मोटों का यही हुक्म है!" किसी ने डाक्टर के कानों के पास ही चीख़कर कहा।

डाक्टर अब सो नहीं रहे थे। वास्तव में ही कोई ऐसे चिल्ला रहा था। डाक्टर ने अपनी आंखों से, शायद यह कहना ज्यादा सही होगा, अपने चश्मे से टोपी हटाई और इधर-उधर नज़र दौड़ाई। जितनी देर वे सोये रहे थे, इसी बीच रात को चादर और अधिक काली हो गयी थी।

बग्घी खड़ी थी। काली-काली आकृतियां उसे घेरे हुए थीं। इन्हीं के शोर ने डाक्टर का स्वप्न भंग कर दिया था। वे लालटेनें हिला रहे थे। इसी से हिलती-डुलती परछाइयां नज़र आ रही थीं।

"यह क्या मामला है?" डाक्टर ने पूछा। "हम कहां हैं? ये लोग कौन हैं?"

एक आकृति निकट आयी और उसने डाक्टर के सिर तक लालटेन ऊंची करके डाक्टर पर प्रकाश डाला। लालटेन हिल-डुल रही थी। लालटेन वाला हाथ चौड़े कफ़वाले चमड़े के खुरदरे दस्ताने से ढका हुआ था।

डाक्टर समझ गया – सैनिक हैं।

"तीन मोटों का यही हुक्म है," उस आकृति ने दोहराया।

पीले प्रकाश में यह आकृति टुकड़े-टुकड़े सी हो गयी। उसका मोमजामे का चमकता हुआ टोप रात के समय लोहे का प्रतीत हो रहा था।

"किसी को भी महल के क़रीब एक किलोमीटर तक निकट जाने की इजाज़त नहीं है। यह हुक्म आज जारी किया गया है। शहर में गड़बड़ है। आगे जाना मना है!"

"पर मेरा तो महल में जाना बिल्कुल लाज़िमी है।"

डाक्टर झल्लाये हुए थे।

सैनिक ने बहुत कड़ाई से कहा –

"मैं सन्तरियों का कप्तान स्तेरेप हूं। मैं आपको एक क़दम भी आगे नहीं जाने दूंगा! बग्घी लौटाओ!" उसने लालटेन तानते हुए चीख़कर कोचवान से कहा।

डाक्टर का अब तो दिल ही बैठ गया। मगर फिर भी उन्हें यक़ीन था कि सैनिकों को जब यह पता चलेगा कि मैं कौन हूं और किस लिये महल में जाना चाहता हूं, तो वे फ़ौरन आगे जाने की अनुमति दे देंगे।

"मैं डाक्टर गास्पर आर्नेरी हूं," उन्होंने कहा।

जवाब में ज़ोर का ठहाका गूंज उठा। सभी ओर लालटेनें हिलने-डुलने लगीं।

"देखिये हज़रत, ऐसे ख़तरनाक समय में और इतनी देर से रात को हमें हंसी-मज़ाक़ पसन्द नहीं," सन्तरियों के कप्तान ने कहा।

"मैं आप से कह रहा हूं कि मैं डाक्टर गास्पर आर्नेरी हूं।"

कप्तान भड़क उठा। उसने हर शब्द धीरे-धीरे और तलवार टनकारते हुए कहा—

"महल में पहुंच जाने के लिए आप झूठे नाम का सहारा ले रहे हैं। डाक्टर गास्पर आर्नेरी रातों को सड़कों पर नहीं घूमते। आज की रात तो ख़ास तौर पर ऐसा नहीं हो सकता। इस समय वे एक बहुत ही ज़रूरी काम में लगे हुए हैं—वे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया को ठीक-ठाक कर रहे हैं। वे तो कल सुबह ही महल में आयेंगे। और आपको मैं धोखेबाज़ी के लिए गिरफ़्तार करता हूं!"

"क्या?!" अब डाक्टर के भड़कने की बारी थी।

"क्या?! वह मुझ पर यक़ीन नहीं करना चाहता? ख़ैर, मैं अभी उसे गुड़िया दिखाता हूं!" डाक्टर ने गुड़िया की ओर हाथ बढ़ाया —मगर...

गुड़िया अपनी जगह पर नहीं थी। डाक्टर जब सपने देख रहे थे, उसी बीच गुड़िया बग्घी से नीचे जा गिरी थी।

डाक्टर को ठंडे पसीने आ गये।

"शायद मैं सपना देख रहा हूं?" डाक्टर के मन में यह ख़याल आया।

ओह नहीं! यह तो हक़ीक़त थी।

"तो अब कहिये!" दांत पीसते और लालटेन को उंगलियों के बीच झुलाते हुए कप्तान बड़बड़ाया। "जहन्नुम में जाइये! आप जैसे सिरफिरे बुड्ढे से माथापच्ची न करनी पड़े इसी लिए छोड़ देता हूं... जाइये यहां से!"

अब तो कोई चारा ही नहीं था। कोचवान ने बग्घी मोड़ी। पहियों ने चर्र-मर्र की, घोड़ा हिनहिनाया, लोहे की लालटेनें आख़िरी बार लहरायीं और बेचारे डाक्टर वापिस हो लिए।

वे अपने को बस में न रख पाये और रो पड़े। ये लोग उनके साथ बहुत बुरी तरह पेश आये थे, उन्हें सिरफिरा बुड्ढा कहा था। इतना ही नहीं, उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया भी तो खो गयी थी! "इसका मतलब यह है कि अब मेरा सिर गया।"

वे आंसू बहाते रहे। उनके चश्मे के शीशे धुंधला गये थे और अब उन्हें कुछ भी नज़र नहीं आता था। उनका मन हुआ कि तकिये में सिर छिपाकर ख़ूब रोयें। मगर कोचवान तो घोड़ा कुदाता जा रहा था। दस मिनट तक डाक्टर का ऐसा ही बुरा हाल रहा। मगर जल्द ही उनकी सामान्य समझ-बूझ लौट आई।

"मैं अभी भी गुड़िया को खोज सकता हूं," डाक्टर ने सोचा। "आज रात सड़क पर बहुत कम लोग आ-जा रहे हैं। ये सड़कें तो वैसे ही हमेशा सुनसान रहती हैं। मुमकिन है इस बीच वहां से कोई भी व्यक्ति न गुज़रा हो..."

उन्होंने कोचवान को आदेश दिया कि घोड़े की चाल धीमी कर दे और सड़क पर नज़र गड़ाये रहे।

"क्यों, कुछ नज़र आया? कुछ दिखाई दिया?" वे हर क़दम पर पूछते थे।

"नहीं, कुछ भी नज़र नहीं आया, कुछ भी नहीं," कोचवान जवाब देता।

कोचवान ने सड़क पर पड़ी ऐसी बेकार चीज़ों के नाम लिए जिनमें किसी की दिलचस्पी नहीं हो सकती थी। उसने कहा—

"पीपा पड़ा है।"

"नहीं... यह नहीं..."

"शीशे का अच्छा और बड़ा-सा टुकड़ा पड़ा है।"

"नहीं।"

"टूटा हुआ जूता पड़ा है।"

"नहीं," डाक्टर की आवाज़ अधिकाधिक धीमी होती जाती थी।

कोचवान तो सचमुच ही अपनी पूरी कोशिश कर रहा था। वह आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। अन्धेरे में भी वह इतनी अच्छी तरह देख पाता था कि मानो बग्घी का कोचवान न होकर महासागरीय जहाज़ का कप्तान हो।

"आपको कहीं कोई गुड़िया... गुड़िया नज़र नहीं आ रही है? गुलाबी फ्रॉक में?"

"गुड़िया तो नज़र नहीं आ रही," कोचवान ने भारी और दुःखद आवाज़ में उत्तर दिया।

"इसका मतलब है कि वह किसी के हाथ लग गयी... अब और तलाश करने में कोई तुक नहीं। इसी जगह मेरी आंख लगी थी... उस वक़्त तक तो वह मेरे पास बैठी थी... आह!" और डाक्टर का मन फिर से रोने को हुआ।

कोचवान ने सहानुभूति दिखाते हुए कई बार नाक सुड़की।

"तो अब हमें क्या करना है?"

"ओह, नहीं जानता... मैं कुछ नहीं जानता..." डाक्टर हाथों में सिर थामे बैठे थे और दुख तथा बग्घी के धचकों से उनका सिर हिल-डुल रहा था। "मैं समझता हूं, सब समझता हूं," उन्होंने कहा। "यह ज़ाहिर है... बिल्कुल ज़ाहिर है... पहले से यह बात मेरे दिमाग़ में क्यों नहीं आई! वह भाग गई, भाग गई वह गुड़िया... मेरी आंख लग गई और वह खिसक गई। मामला बिल्कुल साफ़ है। वह गुड़िया नहीं, जीती-जागती

लड़की थी। मुझे तो देखते ही यह बात महसूस हुई थी। मगर इससे तीन मोटों की नज़र में तो मेरा अपराध कुछ कम संगीन नहीं हो जाता..."

अब अचानक डाक्टर को ज़ोर की भूख महसूस हुई। वे कुछ देर चुप रहे और फिर उन्होंने बहुत गम्भीरतापूर्वक कहा –

"मैंने आज दिन को खाना नहीं खाया! मुझे नजदीक के किसी भोजनालय में ले चलिए।"

भूख ने डाक्टर को शान्त कर दिया।

वे देर तक अन्धेरी गलियों में चक्कर काटते रहे। सभी भोजनालयों के दरवाज़े बन्द पड़े थे। उस रात, उस ख़तरनाक रात को सभी मोटे पेटवाले परेशान थे।

उन्होंने नये ताले लगा दिये और दरवाज़ों के पीछे छोटी-बड़ी अलमारियां रख दी थीं। उन्होंने खिड़कियों में परों वाली गद्दियां और धारीदार तकिये ठूंस दिये थे। उनकी आंखों से नींद ग़ायब हो गयी थी। जो मोटे और धनी थे, उन्हें उस रात हमला होने की आशंका थी। उन्होंने अपने ग़ुस्सैल कुत्तों को सुबह से ही खाने-पीने को कुछ नहीं दिया था ताकि वे ज्यादा होशियार रहें, भूख से तिलमिलाते हुए आग-बबूला हो जायें। मोटों और धनियों के लिए भयानक रात थी। उन्हें यक़ीन था कि लोग किसी भी क्षण फिर विद्रोह कर सकते हैं। सारे शहर में यह ख़बर भी फैल चुकी थी कि कुछ सैनिकों ने तीन मोटों के साथ ग़द्दारी करते हुए उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया पर तलवारों से वार किये और महल छोड़कर चले गये। इस ख़बर से धनियों और पेटुओं के पैरों तले की धरती ही खिसक गई थी।

"बेड़ा ग़र्क़!" वे परेशान होते हुए कह रहे थे। "अब तो हम सैनिकों पर भी भरोसा नहीं कर सकते। कल उन्होंने जनता की बग़ावत कुचली और आज अपनी तोपों के मुंह हमारे घरों की ओर मोड़ देंगे।"

डाक्टर गास्पर को इस बात की उम्मीद न रही कि वे अपनी भूख को शान्त कर सकेंगे, थोड़ा सुस्ता पायेंगे। आसपास की किसी चीज़ में कोई हरकत न थी, ज़िन्दगी के कहीं कोई आसार न थे।

"तो क्या अब घर ही लौटना होगा?" डाक्टर ने दुखी होते हुए सोचा। "मगर वह तो बहुत दूर है... मेरी तो भूख से जान निकल जायेगी..."

अचानक उन्हें किसी भुनी हुई चीज़ की गंध आई। हां, गंध बहुत ही प्यारी थी, शायद प्याज़ के साथ भूने गये भेड़ के मांस की। कोचवान को इसी समय थोड़ी-सी दूरी पर रोशनी नज़र आई। प्रकाश की पतली-सी रेखा हवा में हिल-डुल रही थी। यह रोशनी कैसी है?

"काश, यह भोजनालय हो!" डाक्टर ने ख़ुश होते हुए कहा।

वे निकट पहुंचे। मगर यह भोजनालय नहीं था।

कुछ छोटे-छोटे घरों से ज़रा परे एक ख़ाली मैदान पड़ा था। वहां पहियों वाला एक घर खड़ा था। उसी के कुछ-कुछ खुले दरवाज़े में से प्रकाश की रेखा छन रही थी।

कोचवान अपनी सीट से नीचे उतरा और जांच-पड़ताल करने के लिए चल दिया। डाक्टर सभी दुर्घटनाओं को भूल-भाल कर भुने हुए मांस की गन्ध में खो गये। वे गुनगुनाने लगे, चहक उठे और उन्होंने ख़ुशी से आंखें मूंद लीं।

"ओह यहां कहीं कुत्ते न हों!" कोचवान अन्धेरे में से चिल्लाया। "लगता है कि यहां कुछ पैड़ियां-सी हैं..."

मगर अन्त अच्छा ही रहा। कोचवान पैड़ियां चढ़कर दरवाज़े के पास पहुंचा और उसने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"कौन है?" प्रकाश की पतली-सी रेखा चौड़ी और चमकती हुई चौकोर में बदल गयी। दरवाज़ा खुला। दहलीज़ पर एक आदमी नज़र आया। इर्द-गिर्द के अन्धेरे और इस व्यक्ति के पीछे चमकते हुए प्रखर प्रकाश के कारण वह काले काग़ज़ का पुतला-सा प्रतीत हुआ।

कोचवान ने डाक्टर की ओर से जवाब दिया –

"डाक्टर गास्पर आर्नेरी। आप कौन हैं? यह पहियों वाला घर किसका है?"

"यह चाचा ब्रिज़ाक का मेलों-ठेलों में घूमनेवाला पहियेदार घर है," दहलीज़ पर नज़र आ रही छाया ने उत्तर दिया। यह छाया अब खिल उठी थी, उत्तेजित सी प्रतीत हुई और हाथ हिलाती-डुलाती बोली – "आइये, पधारिये सज्जनो! चाचा ब्रिज़ाक की गाड़ी में डाक्टर गास्पर आये हैं यह हमारा धन्य-भाग्य है।"

ख़ूब ही बढ़िया अन्त रहा! बहुत काफ़ी भटक लिये वे रात के अंधेरे में! चाचा ब्रिज़ाक की गाड़ी ज़िन्दाबाद!

यहां डाक्टर, कोचवान और घोड़े को पनाह मिली, खाना और आराम मिला। पहियों वाला घर मेहमाननेवाज़ था। इस में चाचा ब्रिज़ाक का घूमने-फिरने वाला कलाकार-दल रहता था।

कौन भला चाचा ब्रिज़ाक के नाम से परिचित नहीं था! कौन नहीं जानता था मेलों-ठेलों में घूमनेवाली इस गाड़ी को! पर्वों-त्योहारों के अवसर पर साल भर इस पहिया-गाड़ी के कलाकार बाज़ार के चौकों में अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। कैसे कमाल के थे इस दल के कलाकार! क्या बढ़िया होते थे इनके तमाशे! सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इसी दल में होता था रस्से पर चलनेवाला नट तिबुल।

यह तो हम जानते ही हैं कि तिबुल देश के सबसे अच्छे नट के रूप में प्रसिद्ध था। उसकी फ़ुर्ती तो हम ख़ुद भी सितारे के चौक में देख चुके हैं। हमें याद है कि सैनिकों की

गोलियों की बौछाड़ में वह किस तरह ऊंचे तार पर चला था।

तिबुल जब बाजार के चौकों में अपने करतब दिखाता था तो छोटे-बड़े सभी दर्शकों के तालियां बजा-बजाकर हाथ दर्द करने लग जाते थे। दुकानदार, बूढ़ी मंगतियां, स्कूली बालक, फ़ौजी और बाक़ी सभी लोग इसी तरह ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजाकर उसे दाद देते थे... मगर अब दुकानदारों और बांके-छैलों का पहलेवाला जोश ठंडा पड़ गया था – "हम उसके लिए तालियां बजाते थे और अब वह हमारे ही विरुद्ध मोर्चा ले रहा है!"

नट तिबुल ने चाचा ब्रिज़ाक की पहिया-गाड़ी से नाता तोड़ लिया था और इस तरह अब यह गाड़ी सूनी-सूनी हो गई थी।

डाक्टर गास्पर ने इसकी कोई चर्चा नहीं की कि तिबुल के साथ क्या बीती थी। उन्होंने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया का भी कोई ज़िक्र नहीं किया।

डाक्टर गास्पर ने मेलों-ठेलों में घूमनेवाली इस गाड़ी, इस पहियेदार घर के अन्दर क्या देखा?

डाक्टर को बड़े-से तुर्की ढोल पर बिठाया गया जो जाल के समान सुनहरी झालरवाले तिकोने लाल कपड़े से सुसज्जित था।

यह पहियेदार घर गाड़ी के डिब्बे की तरह बना हुआ था। कन्वास के पर्दे लगाकर इसे कई कक्षों में विभाजित कर दिया गया था।

रात काफ़ी बीत चुकी थी। इस पहियेदार घर के निवासी सो रहे थे। दरवाज़ा खोलने और परछाईं-सा प्रतीत होनेवाला व्यक्ति बूढ़ा मसखरा अगस्त था। इस रात वह ड्यूटी पर था। डाक्टर जब इस पहियेदार घर के निकट पहुंचे थे, उस समय वह अपने लिए रात का खाना पका रहा था। वास्तव में ही वह प्याज़ के साथ भेड़ का मांस तल रहा था।

डाक्टर ढोल पर बैठे हुए इर्द-गिर्द नज़र दौड़ा रहे थे। लकड़ी के बक्से पर ढिबरी

जल रही थी। दीवारों पर बारीक सफ़ेद और गुलाबी काग़ज़ों में लिपटे हुए चक्र, धातु की चमकती हुई मूठों वाले लम्बे धारीदार चाबुक टंगे हुए थे, कपड़ों के रंग-बिरंगे टुकड़ों, सुनहरे छल्लों, बेल-बूटों और तारों-सितारों से सुसज्जित चमकती हुई पोशाकें लटक रही थीं। वहां तरह-तरह के नक़ाब भी नज़र आ रहे थे—कुछ सींगों वाले, कुछ अजीब लम्बी नाकों वाले और कुछ के मुंह कानों तक फैले हुए। एक और नक़ाब था बड़े-बड़े कानों वाला। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उसके कान थे तो इन्सानों जैसे, मगर बहुत ही बड़े-बड़े।

कोने में रखे पिंजरे में एक अजीबोग़रीब जानवर बैठा था।

एक दीवार के पास लकड़ी की एक लम्बी मेज़ रखी थी। उसके ऊपर दस दर्पण लटके हुए थे। हर दर्पण के पास एक मोमबत्ती खड़ी थी, अपने ही मोम से जमी हुई। ये मोमबत्तियां बुझी हुई थीं।

मेज़ पर तरह-तरह के डिब्बे, तूलिकायें, रंग, पाउडर-पफ़, गुलाबी पाउडर और बनावटी बाल पड़े थे; जहां-तहां रंग-बिरंगे धब्बे सूख रहे थे।

"आज हमने सैनिकों से बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई," मसख़रे ने कहा। "बात यह है कि नट तिबुल हमारे ही दल का कलाकार था। सैनिक हम को पकड़ पाना चाहते थे। वे समझते हैं कि हमने उसे कहीं छिपा दिया है," बूढ़े मसख़रे ने बहुत उदास होते हुए अपनी बात जारी रखी। "मगर हम तो ख़ुद नहीं जानते कि नट तिबुल कहां है। शायद उसकी हत्या कर दी गयी या उसे लोहे के पिंजरे में बन्द कर दिया गया।"

मसख़रे ने गहरी सांस ली और पके बालों वाला अपना सिर हिलाया। पिंजरे में बैठा जानवर बिल्ली जैसी आंखों से डाक्टर की ओर देख रहा था।

"बड़े अफ़सोस की बात है कि आप हमारे यहां इतनी देर से आये," मसख़रे ने कहा। "हम आपको बहुत प्यार करते हैं। आप हमें कुछ तसल्ली, कुछ दिलासा देते। हम जानते हैं कि आप ग़रीबों के, जनसाधारण के दोस्त हैं। इस सिलसिले में मैं आपको एक घटना याद दिलाना चाहता हूं। पिछले वर्ष के बसन्त में हम कलेजी बाज़ार के चौक में अपना तमाशा पेश कर रहे थे। मेरी बेटी ने वहां एक गीत गाया था..."

"हां, हां..." डाक्टर को याद आया। वे अचानक उत्तेजित हो उठे।

"याद है न आपको? उस समय आप भी वहीं थे। मेरी बेटी ने उस कचौड़ी के बारे में गाना गाया था जो किसी मोटे कुलीन के पेट में जाने के बजाय चूल्हे में ही जल जाने को अपना सौभाग्य मानती थी..."

"हां, हां... मुझे याद है... तो आगे क्या हुआ था?"

"कोई कुलीन महिला, एक बुढ़िया यह गाना सुनकर नाराज़ हो गयी थी। उसने लम्बी नाकों वाले अपने नौकरों को हुक्म दिया था कि वे लड़की की पिटाई करें।"

"हां, हां, मुझे याद है। मैंने उसे ऐसा नहीं करने दिया था। मैंने नौकरों को भगा दिया था। उस महिला ने जब मुझे पहचाना था तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया था। ऐसा ही हुआ था न?"

"हां। बाद में जब आप चले गये तो मेरी बेटी ने कहा कि अगर उस कुलीन बुढ़िया के नौकरों ने मेरी पिटाई की होती, तो मैं शर्म के मारे किसी तरह भी जिन्दा न रह पाती... आपने उसकी जान बचाई थी। वह आपका यह एहसान कभी नहीं भूल सकेगी!"

"अब आपकी बेटी कहां है?" डाक्टर ने पूछा। वे बहुत ही उत्तेजित हो रहे थे।

बूढ़े मसखरे ने कन्वास के पर्दे के निकट जाकर आवाज़ दी।

कुछ अजीब-सा नाम पुकारा उसने। दो ध्वनियों का कुछ ऐसे उच्चारण किया मानो लकड़ी की गोल डिबिया का बड़ी मुश्किल से खुलनेवाला ढक्कन खोला गया हो – "सूआोक!"

कुछ क्षण बीते। कन्वास का पर्दा हटा और उसके पीछे से लड़की का अस्तव्यस्त बालों वाला कुछ-कुछ झुका हुआ सिर नजर आया। वह अपनी भूरी आंखों को कुछ-कुछ झुकाये हुए बहुत ध्यान से और कुछ-कुछ शरारती ढंग से डाक्टर की ओर देख रही थी।

डाक्टर ने उसकी ओर देखा तो सकते में आ गये – उनके सामने उत्तराधिकारी टूटी की गुड़िया खड़ी थी!

तीसरा भाग

सुओक

आठवां अध्याय

छोटी-सी अभिनेत्री की कठिन भूमिका

हां, यह वही थी!

मगर शैतान जाने, वह यहां आ कहां से गयी थी? करिश्मा? इसका क्या सवाल पैदा होता है! डाक्टर गास्पर अच्छी तरह से जानते थे कि करिश्मे नहीं होते। उन्होंने समझ लिया कि उनके साथ धोखा हुआ है, छल-कपट हुआ है। गुड़िया वास्तव में जीती-जागती लड़की थी और जब वे असावधानी के कारण बग्घी में सो गये थे, तो वह शरारती लड़की की तरह बाहर कूद गयी थी।

"ऐसे मुस्कराने से कुछ हासिल नहीं होगा! आपकी मासूम मुस्कान से आपका जुर्म कुछ कम संगीन नहीं हो जायेगा," डाक्टर ने कड़ाई से कहा। "आपको तो अपने किये की ख़ुद ही सज़ा मिल गयी है। संयोगवश मैंने आपको वहां आ ढूंढ़ा है, जहां ढूंढ़ पाना शायद असम्भव था।"

गुड़िया आंखें फाड़ फाड़कर उनकी ओर देख रही थी। फिर वह छोटे-से ख़रगोश की भांति आंखें झपकाने लगी। उसने मानो कुछ न समझते हुए मसख़रे अगस्त की ओर देखा। उसने गहरी सांस ली।

"कौन हैं आप? साफ़-साफ़ बताइये!"

डाक्टर ने अपनी आवाज़ को यथाशक्ति कठोर बनाया। मगर गुड़िया इतनी प्यारी थी कि उससे नाराज़ होना बहुत मुश्किल था।

"तो आप मुझे भूल गये," उसने कहा। "मैं सूओक हूं।"

"सू-ओक..." डाक्टर ने दोहराया। "मगर आप तो उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया हैं!"

"कैसी गुड़िया! मैं तो साधारण लड़की हूं..."

"क्या? नहीं, नहीं, आप बन रही हैं!"

गुड़िया पर्दे से बाहर आ गई। लैम्प की तेज़ रोशनी अब उस पर पड़ रही थी। वह मुस्करा रही थी, उसका अस्तव्यस्त बालो वाला सिर एक ओर को झुका हुआ था। उसके बाल किसी भूरी चिड़िया के बच्चे के बालों के समान थे।

पिंजरे में बैठा हुआ झबरीला जानवर गुड़िया की ओर बहुत ध्यान से देख रहा था।

डाक्टर गास्पर कुछ भी नहीं समझ पा रहे थे। पाठकगण, थोड़ा सब्र कीजिये, सारा राज़ आपकी समझ में आ जायेगा। मगर इस समय हम एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जो डाक्टर गास्पर आर्नेरी की नज़र से चूक गई थी। बात यह है कि आदमी जब उत्तेजित होता है तो ऐसी बातें भी नज़र से चूक जाती हैं जिनकी ओर सामान्यतः बरबस ध्यान जाता है।

वह बात यह है—पहियेदार घर में गुड़िया बिल्कुल दूसरी ही नज़र आ रही थी। उसकी भूरी आंखों में ख़ुशी की चमक थी। वह गम्भीर और सतर्क प्रतीत हो रही थी, मगर उसके चेहरे पर दुख-उदासी का नाम-निशान भी नहीं था। इसके विपरीत यह कहा जा सकता था कि वह ऐसी शरारती लड़की थी जो शर्मीली-लजीली होने का ढोंग कर रही थी।

बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती। उसका वह शानदार रेशमी गुलाबी फ़्रॉक क्या हुआ? सुनहरे गुलाबों वाले सैंडल कहां गये? उसकी पोशाक की चमक-दमक, सज-धज, तड़क-भड़क क्या हुई? उन्हीं चीज़ों की बदौलत कोई भी लड़की यदि राजकुमारी नहीं तो नये साल के फ़र-वृक्ष पर सजाने के बढ़िया खिलौने जैसी तो अवश्य बन जाती है। अब गुड़िया बहुत ही साधारण पोशाक पहने थी। जहाज़ियों के नीले कॉलर वाला ब्लाउज़, पुराने-से सैंडल जो कभी सफ़ेद रहे होंगे, मगर इस समय मटमैले-से दिखाई दे रहे थे। वह जुराब भी नहीं पहने थी। मगर इस से आप यह न समझ बैठियेगा कि इस साधारण पोशाक से गुड़िया बदसूरत नज़र आने लगी थी। इसके विपरीत, यह पोशाक उसे ख़ूब जंच रही थी। कभी-कभी कोई लड़की इतने बुरे ढंग के कपड़े-लत्ते पहने होती है कि उसकी ओर देखने तक को मन नहीं होता, मगर ज़रा ध्यान देने पर बिल्कुल दूसरा ही रूप सामने आता है। वह तो बहुत प्यारी, राजकुमारी से भी अधिक प्यारी होती है।

फिर, जैसा कि आपको याद होगा, सबसे बड़ी बात तो यह है कि उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया की छाती पर बहुत भयानक काले कटाव थे। मगर वे अब ग़ायब थे।

यह तो बड़ी ख़ुशमिज़ाज, बड़ी स्वस्थ गुड़िया थी!

मगर डाक्टर गास्पर का किसी भी बात की ओर ध्यान नहीं गया। बहुत मुमकिन है कि अगले कुछ क्षणों में डाक्टर यह सब कुछ भांप जाते, मगर तभी किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। अब मामला और भी उलझ गया। गाड़ी में एक नीग्रो ने प्रवेश किया।

गुड़िया कांप उठी। पिंजरे में बैठा हुआ जानवर अजीबोग़रीब बिल्ली की तरह घुरघुराने लगा, यद्यपि वह बिल्ली नहीं था।

हम जानते हैं कि यह नीग्रो कौन था। डाक्टर गास्पर भी उसे जानते थे। उन्होंने तो तिबुल को नीग्रो बनाया था। मगर और कोई इस राज़ को नहीं जानता था। यह परेशानी, यह उलझन कोई पांच मिनट तक बनी रही। नीग्रो की हरकतें भी बहुत ही भयानक थीं। उसने गुड़िया को हाथों में लेकर ऊपर उठा लिया और उसके गालों और नाक को चूमने लगा। गुड़िया अपने गालों को बहुत ज़ोर से दायें-बायें हिला रही थी ताकि नीग्रो उन्हें चूम न पाये। नीग्रो उन्हें चूमने की कोशिश करता हुआ ऐसे लग रहा था मानो धागे के साथ लटके सेब को चखना चाहता हो। बूढ़े अगस्त ने आंखें मूंद लीं। डर के मारे उसके चेहरे का रंग ज़र्द हो गया। वह उस चीनी शहंशाह की भांति सिर हिला-डुला रहा था जो यह तय कर रहा हो कि अपराधी का सिर क़लम करवाये या उसे शक्कर के बिना जिन्दा चूहा खाने की सज़ा दे?

गुड़िया का सैंडल पैर से उतरकर लैम्प से जा टकराया। लैम्प उलटकर बुझ गया। एकाएक अन्धेरा हो गया। भय और भी बढ़ गया। तभी सब ने यह देखा कि पौ फटने लगी थी। दरवाज़े की दरारों में से प्रकाश की रेखा छनने लगी थी।

"सुबह होने को है," डाक्टर गास्पर ने कहा। "मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया लेकर तीन मोटों के महल में पहुंचना है।"

नीग्रो ने दरवाज़ा खोल दिया। धुंधला-सा उजाला भीतर फैल गया। मसख़रा पहले की तरह आंखें मूंदे बैठा था। गुड़िया पर्दे के पीछे जा छिपी थी। डाक्टर गास्पर ने तिबुल को झटपट सारा क़िस्सा कह सुनाया। उन्होंने बताया कि उत्तराधिकारी की गुड़िया कैसे खो गयी थी और कैसे ख़ुशक़िस्मती से इस पहियेदार घर में मिल गयी थी।

गुड़िया पर्दे के पीछे सब कुछ सुन रही थी, मगर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

"डाक्टर इसे तिबुल के नाम से सम्बोधित कर रहे हैं!" गुड़िया हैरान हो रही थी। "यह भला तिबुल कैसे हो सकता है? यह तो भयानक नीग्रो है। तिबुल तो ख़ूबसूरत, गोरा-चिट्टा है, वह तो काला नहीं है..."

तब उसने पर्दे के पीछे से बाहर झांका। नीग्रो ने अपने लाल पतलून की जेब से एक लंबोतरी-सी बोतल निकाली, उसका कार्क खोला, उसमें से चिड़िया की चीं-चीं सी हुई। नीग्रो ने इस बोतल में से निकलनेवाला तरल पदार्थ अपने तन पर मलना शुरू किया। कुछ क्षण बाद मानो करिश्मा हुआ। नीग्रो गोरा-चिट्टा और सुन्दर हो गया, काला नहीं रहा। अब तो कोई सन्देह बाक़ी न रह गया—यह तिबुल ही था!

"हुर्रा!" गुड़िया चिल्लाई और पर्दे के पीछे से लपककर तिबुल की गर्दन से जा लिपटी।

मसखरे ने तो अपनी आंखों से कुछ नहीं देखा था। इसलिए उसने यह समझ लिया कि बस अब तो कुछ बहुत ही भयानक बात हो गयी है। वह अपनी सीट से नीचे फ़र्श पर जा गिरा और निश्चल-सा पड़ा रहा। तिबुल ने उसका पतलून पकड़कर उसे उठाया।

अब गुड़िया अपने आप ही तिबुल को चूमने लगी।

"यह तो कमाल ही हो गया!" उसने ख़ुशी से हांफते हुए कहा। "तुम ऐसे काले कैसे हो गये थे? मैं तो तुम्हें पहचान ही न पाई..."

"सूओक!" तिबुल ने कड़ाई से कहा।

वह फ़ौरन उसकी चौड़ी छाती से नीचे उतरकर टीन के बने फ़ौजी की भांति उसके सामने सावधान खड़ी हो गई।

"क्या बात है?" उसने स्कूली छात्रा की भांति पूछा।

तिबुल ने उसके अस्तव्यस्त बालों वाले सिर पर हाथ रखा। सूओक ने अपनी ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आंखों को ज़रा ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा।

"डाक्टर गास्पर ने कुछ देर पहले जो कुछ कहा, वह तुम ने सुना था?"

"हां। उन्होंने कहा था कि तीन मोटों ने उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया ठीक करने के लिए उनके पास भेजी थी। वह गुड़िया बग्घी में से उतर भागी। उनका कहना है कि वह गुड़िया मैं हूं।"

"यह तो वे ग़लती कर रहे हैं," तिबुल ने कहा, "मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि यह गुड़िया नहीं है। यह तो मेरी नन्ही-सी दोस्त है, छोटी-सी नर्तकी सूओक है, सर्कस के करतबों में मेरी विश्वसनीय साथी।"

"बिल्कुल सच!" गुड़िया ने ख़ुशी से तिबुल का समर्थन किया। "देखो न हम दोनों तो अनेक बार एकसाथ रस्से पर चले हैं।" तिबुल ने उसे अपनी विश्वसनीय साथी कहा था, वह इस बात से बहुत ख़ुश हुई थी।

"प्यारे तिबुल!" सूओक फुसफुसाई और उसने तिबुल के हाथ से अपना गाल रगड़ा।

"यह कैसे हो सकता है?" डाक्टर ने हैरान होते हुए कहा। "क्या यह जीती-जागती लड़की है? सूओक... यही बताते हैं न आप इसका नाम... हां! हां! आप ठीक कहते हैं! अब सारी बात मेरी समझ में आ गई है। मुझे याद आ गया है... इस लड़की को मैं एक बार पहले भी देख चुका हूं। हां... हां... मैंने इसे उस बुढ़िया के नौकरों से बचाया था जो डंडे से इसकी पिटाई करना चाहते थे!" अब डाक्टर ने अपने हाथ लहराये—

"हा-हा-हा! हां, अब समझ में आया। इसीलिए मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया इतनी जानी-पहचानी लगी थी। दोनों हू-ब-हू एक जैसी हैं। यह एक अद्भुत घटना है।"

अब सारी बात साफ़ हो गई थी और इस से हर किसी को बहुत ख़ुशी हुई।

उजाला बढ़ता जा रहा था। निकट ही एक मुर्गे ने बांग दी।

डाक्टर फिर से उदास हो गये।

"हां, यह सब कुछ तो बहुत ख़ूब है, मगर इसका मतलब है कि उत्तराधिकारी की गुड़िया अब मेरे पास नहीं है। इसका मतलब यह है कि मैं सचमुच ही उसे खो बैठा हूं..."

"नहीं, इसका मतलब यह है कि आपको वह मिल गई है," लड़की को प्यार से अपने साथ सटाते हुए तिबुल ने कहा।

"क्या मतलब?"

"वही, जो मैंने कहा है... सूओक, तुम तो समझती हो न मेरा मतलब?"

"लगता तो ऐसा ही है," सूओक ने धीरे से उत्तर दिया।

"तो क्या ख़्याल है?" तिबुल ने पूछा।

"मैं तैयार हूं," गुड़िया ने कहा और मुस्करा दी।

डाक्टर के पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

"इतवार के दिन जब हम लोगों की भीड़ के सामने अपने करतब दिखाते थे, तब भी तुम मेरी बात माना करती थी। ठीक है न? तुम धारीदार चबूतरे पर खड़ी होती थी। मैं तुम से कहता था—'चलो!' तब तुम तार पर चढ़कर मेरी ओर आती थी। मैं भीड़ के ऊपर बहुत ऊंचाई पर तार के मध्य में खड़ा होता था। तब मैं अपना एक घुटना झुकाकर फिर से तुम्हें कहता था—'चलो!'—तब तुम मेरे घुटने पर पैर रख मेरे कंधे पर चढ़ जाती थी... तब तुम्हें कभी डर महसूस हुआ था क्या?"

"नहीं। तुम मुझ से कहते थे—'चलो!'—इसका मतलब था कि मुझे शान्त-स्थिर रहना चाहिये, किसी चीज से नहीं डरना चाहिये।"

"हां, तो, अब मैं फिर तुम से कहता हूं—'चलो!'—तुम गुड़िया बनोगी।"

"ऐसा ही सही, मैं गुड़िया बनूंगी।"

"गुड़िया?" डाक्टर ने पूछा। "क्या मतलब?"

पाठकगण, मैं आशा करता हूं कि आप सब कुछ समझ गये हैं! आपको तो डाक्टर गास्पर के समान परेशानियों और हैरानियों से दो-चार नहीं होना पड़ा। इसलिए आप तो ऐसे उत्तेजित नहीं हैं और बात को अधिक आसानी से समझ सकते हैं।

जरा ख़्याल कीजिये—डाक्टर पिछले दो दिनों से थोड़ी देर के लिए भी ढंग से नहीं सो पाये थे। इसलिए उनकी काम करने की इस हिम्मत को देखकर तो केवल हैरानी ही होती है।

मुर्गे के दूसरी बांग देने के पहले ही सब कुछ तय हो गया था। तिबुल ने पूरी कार्य-योजना तैयार कर ली थी—

"सूग्रोक, तुम अभिनेत्री हो। उम्र की छोटी होते हुए भी तुम्हें अपनी कला में कमाल हासिल है। वसन्त में जब हमारे दल ने मूक-नाटक 'बुद्धू बादशाह' पेश किया था तो उसमें तुमने पत्तागोभी की सुनहरी जड़ का बहुत अच्छा अभिनय किया था। फिर बैले में तुमने उतारनी तस्वीर का अभिनय किया था और मिल-मालिक से केतली में ख़ूब ही बदली थी। नाचने में तुम सबसे बढ़-चढ़कर हो और गाने में भी। तुम दूर की कौड़ी भी ख़ूब लाती हो। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तुम साहसी लड़की हो, बहुत समझदार भी हो।"

सूग्रोक के चेहरे पर ख़ुशी की लालिमा दौड़ गयी थी। इतनी अधिक प्रशंसा के कारण उसे तो लज्जा भी अनुभव हो रही थी।

"हां तो, तुम्हें उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया की भूमिका अदा करनी होगी।"

सूग्रोक ने तालियां बजायीं और बारी-बारी से तिबुल, बूढ़े अगस्त और डाक्टर गास्पर को चूमा।

"ज़रा रुको," तिबुल ने अपनी बात जारी रखी। "मुझे अभी कुछ और भी कहना है। तुम्हें मालूम ही है कि हथियारसाज़ प्रोस्पेरो तीन मोटों के महल में लोहे के पिंजरे में बन्द है। तुम्हें उसे आज़ाद कराना होगा।"

"क्या पिंजरा खोलना होगा?"

"हां। मैं वह राज़ जानता हूं जो प्रोस्पेरो को महल से निकल भागने में सहायता देगा।"

"राज़?"

"हां। वहां एक सुरंग है।"

तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले का सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"इस सुरंग का मुंह किसी देग में है। यह देग महल के रसोईघर में होना चाहिए। तुम्हें इसे ढूंढ़ना होगा।"

"ठीक है।"

अभी सूर्योदय नहीं हुआ था, मगर पक्षी चहकने लगे थे। गाड़ी के दरवाज़े में से बाहर हरी घास नज़र आ रही थी। उजाला हो जाने पर पिंजरे में बन्द रहस्यपूर्ण जानवर रहस्यमय न रहा। वहां साधारण लोमड़ी नज़र आने लगी थी।

"अब हमें वक़्त नहीं गंवाना चाहिए! बहुत दूर जाना है।"

डाक्टर गास्पर ने कहा—

"अब आप अपना सबसे सुन्दर फ़्रॉक छांट लीजिये..."

सूम्रोक अपने सभी फ़्रॉक निकाल लाई। वे सभी बहुत बढ़िया थे, क्योंकि उसने ख़ुद ही उन्हें तैयार किया था। सभी प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों की भांति सूम्रोक की पसन्द भी बहुत बढ़िया थी।

डाक्टर गास्पर देर तक रंग-बिरंगे फ़्रॉकों को ध्यान से देखते रहे।

"मेरे ख़्याल में तो यह फ़्रॉक ठीक रहेगा। टूटी हुई गुड़िया के फ़्रॉक से यह कुछ बुरा नहीं है। इसे पहन लीजिये!"

सूम्रोक ने यह फ़्रॉक पहन लिया। वह गाड़ी के बीचोंबीच खड़ी थी, सूर्य की पहली किरणों में नहाती हुई सी। एकदम अनुपम थी उसकी छवि, उसका रूप। उसका फ़्रॉक गुलाबी था। मगर सूम्रोक जब हिलती-डुलती थी तो ऐसा प्रतीत होता था मानो सुनहरी बरसात हो रही हो। फ़्रॉक चमकता था, सरसराता था और उससे प्यारी-प्यारी सुगन्ध आती थी।

"मैं तैयार हूं," सूझोक ने कहा।

घड़ी भर में उन्होंने विदा ले ली। सरकस में काम करनेवाले लोगों को टसुए बहाना पसन्द नहीं होता। वे तो अक्सर अपनी जान हथेली पर लिये रहते हैं। फिर कसकर आलिंगन करना भी ठीक नहीं था कि फ़ॉक में सिलवटें न पड़ जायें।

"जल्दी ही लौट आना!" बूढ़े अगस्त ने कहा और गहरी सांस ली।

"मैं अब मज़दूरों के मुहल्लों में जाता हूं। हमें वहां अपनी ताक़त का अनुमान लगाना चाहिए। मज़दूर मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं। उन्हें मालूम हो गया है कि मैं ज़िन्दा और आज़ाद हूं।"

तिबुल ने लबादा लपेटा, चौड़ा-सा टोप पहना, काला चश्मा चढ़ाया और बनावटी लम्बी नाक लगा ली। यह नाक 'क़ाहिरा की यात्रा' मूक-नाटक में तुर्क बादशाह का अभिनय करते समय काम में लाई जाती थी। अब कोई लाख सिर पटकने पर भी उसे पहचान नहीं सकता था। यह सच है कि बड़ी-सी नाक से उसका चेहरा भयानक हो गया था, मगर उसके लिए सुरक्षित रहने का यही सबसे अच्छा तरीक़ा था।

बूढ़ा अगस्त दहलीज़ पर खड़ा रहा। डाक्टर, तिबुल और सूझोक गाड़ी से बाहर निकले।

अब पूरी तरह दिन निकल आया था।

"जल्दी कीजिये, जल्दी कीजिये!" डाक्टर ने उतावली मचाते हुए कहा।

एक मिनट बाद वे सूझोक के साथ बग्घी में जा बैठे।

"तुम डर महसूस नहीं करती?" डाक्टर ने पूछा।

सूझोक जवाब में मुस्करा दी। डाक्टर ने उसका माथा चूमा।

सड़कें अभी भी सुनसान पड़ी थीं। लोगों की आवाज़ बहुत ही कम सुनाई देती थी। मगर अचानक कोई कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। कुछ देर बाद वह ऐसे गुर्राने और चीख़ने लगा मानो कोई उसके मुंह की बोटी छीन लेना चाहता हो।

डाक्टर ने बग्घी से बाहर झांका।

ज़रा ग़ौर कीजिये, यह वही कुत्ता था जिसने पहलवान लापीतूप को काटा था! मगर बात केवल इतनी ही नहीं थी, डाक्टर ने यह दृश्य देखा। यह कुत्ता किसी व्यक्ति से उलझ रहा था। व्यक्ति लम्बा और दुबला-पतला था। उसका सिर बहुत छोटा-सा था। वह सुन्दर, मगर अजीब-सा सूट पहने था और टिड्डा-सा प्रतीत होता था। वह कोई गुलाबी, सुन्दर और समझ में न आनेवाली चीज़ कुत्ते के मुंह से छुड़ा लेने के लिए ज़ोर लगा रहा था। सभी दिशाओं में गुलाबी टुकड़े उड़ रहे थे।

आदमी जीत गया। उसने वह चीज़ कुत्ते के मुंह से छुड़ाकर छाती के साथ चिपका ली और उस दिशा में तेज़ी से भाग चला जिधर से डाक्टर की बग्घी आ रही थी।

यह व्यक्ति जब बग्घी के बराबर पहुंचा, तो डाक्टर की पीठ के पीछे से झांकती हुई सूओक ने एक भयानक चीज़ देखी। यह अजीब-सा आदमी भाग नहीं रहा था, छलांगें मारता हुआ बैले नर्तक की भांति मानो हवा में तैर रहा था। उसके फ्रॉक कोट के हरे छोर पवन चक्की के पंखों की भांति हवा में लहरा रहे थे। और वह अपने हाथों में ... अपने हाथों में काले काले धावों वाली एक लड़की उठाये था।

"यह तो मैं हूं!" सूओक चिल्ला उठी। वह अपनी सीट पर पीछे को हट गई और उसने मख़मली तकिये से मुंह ढक लिया।

चीख़ सुन, भागते हुए व्यक्ति ने मुड़कर देखा। अब डाक्टर को उसे पहचानने में देर न लगी। यह नृत्य-शिक्षक था, श्रीमान एक-दो-तीन।

तेज़ भूखवाली गुड़िया

उत्तराधिकारी टूट्टी छज्जे में खड़ा था। भूगोल का अध्यापक दूरबीन में से देख रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी यह मांग कर रहा था कि कुतुबनुमा भी लाया जाये। मगर उसकी जरूरत नहीं थी।

उत्तराधिकारी टूट्टी गुड़िया के लौटने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था।

वह अत्यधिक उत्तेजित रहा था, इसलिए उसे बहुत गहरी और मीठी नींद आई थी।

छज्जे से नगर के फाटकों से महल की ओर जानेवाली सड़क साफ़ तौर पर दिखाई दे रही थी। नगर के ऊपर चढ़ते हुए सूरज के कारण आंखें मिचमिचा रही थीं। उत्तराधिकारी हथेली से आंखों पर ओट किये हुए था। वह अपनी नाक को सिकोड़ रहा था, छींकना चाहता था, मगर उसे छींक नहीं आ रही थी।

"अभी तो कोई भी नज़र नहीं आ रहा," भूगोल के अध्यापक ने कहा।

इसे यह ज़िम्मेदारी का काम इसलिए सौंपा गया था कि भूगोलविज्ञ होने के कारण वह फ़ासलों, विस्तारों और हिलती-डुलती वस्तुओं को सबसे अधिक अच्छे ढंग से समझ सकता था।

"आप यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि वहां कुछ भी नहीं है?" टूट्टी ने जोर देकर पूछा।

"मुझसे बहस नहीं कीजिये। दूरबीन के

अलावा मेरे पास ज्ञान है और मैं चीज़ों का सही अनुमान भी लगाना जानता हूं। मुझे चमेली की लता दिखाई दे रही है जिसका लातीनी भाषा में बहुत ही सुन्दर, मगर मुश्किल-सा नाम है। उसके आगे पुल हैं और फिर सन्तरी नज़र आ रहे हैं जिनके इर्दगिर्द तितलियां उड़ रही हैं। इनके आगे सड़क है ... ज़रा रुकिये! रुकिये तो!"

उसने दूरबीन का शीशा घुमाया। उत्तराधिकारी टूटी पंजों के बल खड़ा हो गया। उसका दिल ऐसे उछल रहा था मानो उसने पाठ न तैयार किया हो।

"हां," अध्यापक ने कहा।

इसी समय तीन घुड़सवार महल के पार्क से सड़क की ओर आते दिखाई दिये। कप्तान बोनावेन्तूरा अपने घुड़सवारों के साथ उस बग्घी की ओर जा रहा था जो सड़क पर दिखाई दी थी।

"हुर्रा!" उत्तराधिकारी इतने ज़ोर से चिल्लाया कि दूर-दूर के गांवों में कलहंस कीं-क्लिक का राग अलापने लगे।

छज्जे के नीचे कसरत का शिक्षक इस बात के लिए तैयार खड़ा था कि अगर उत्तराधिकारी ख़ुशी के कारण पत्थर की मुंडेर से नीचे जा गिरे, तो वह उसे हाथों में साध ले।

हां तो, डाक्टर की बग्घी महल की ओर जा रही थी। अब न तो दूरबीन की ज़रूरत रही थी और न ही भूगोल के अध्यापक के ज्ञान की। अब तो सभी को बग्घी और सफ़ेद घोड़ा नज़र आ रहे थे।

बड़ी ख़ुशी की घड़ी थी! बग्घी आख़िरी पुल के पास जाकर खड़ी हुई। सन्तरी हट गये। उत्तराधिकारी ज़ोर से दोनों हाथ हिलाता हुआ उछल रहा था, उसके सुनहरे बाल लहरा रहे थे। आख़िर उसे वह चीज़ दिखाई दी जिसका इन्तज़ार था। छोटे क़द

का एक व्यक्ति बूढ़े की तरह धीरे धीरे बग्घी से बाहर निकला। सन्तरी तलवार पर हाथ रखकर सम्मान प्रकट करते हुए दूर खड़े थे। इस नाटे व्यक्ति ने एक अद्भुत गुड़िया बग्घी से बाहर निकाली। यह रेशमी फ़ीतों में लिपटी हुई ताजा गुलाबों के गुलदस्ते जैसी लग रही थी।

सुबह के नीले-नीले आकाश और घास तथा किरणों की चमक में यह दृश्य तो देखते ही बनता था।

घड़ी भर बाद गुड़िया महल में पहुंच गई। वह अपने आप ही चली जा रही थी।

ओह, खूब बढ़िया निभा रही थी सूओक अपनी भूमिका! अगर वह सचमुच की गुड़ियों में जा पहुंचती, तो निश्चय ही वे उसे अपने समान मान लेतीं।

सूओक बिल्कुल शान्त और स्थिर थी। वह अनुभव कर रही थी कि उसे अपने अभिनय में सफलता मिल रही है।

"इस भूमिका से कहीं अधिक कठिन काम करने पड़ते हैं," वह मन ही मन सोच रही थी, "जैसे कि जलती हुई मशाल लेकर बाजीगरी के करतब करना या दोहरी कलाबाज़ी लगाना..."

सूओक ने सरकस में ये दोनों ही काम किये थे।

मतलब यह कि सूओक का दिल मजबूत रहा। इतना ही नहीं, उसे तो यह अभिनय पसन्द भी आया। डाक्टर गास्पर कहीं अधिक चिन्तित थे। वे सूओक के पीछे-पीछे जा रहे थे। सूओक छोटे-छोटे क़दम उठा रही थी, पंजों के बल चलनेवाली जैसे नर्तकी की भांति। उसका फ़्रॉक हिलता-डुलता, लहराता और सरसराता था।

पालिश किया हुआ फ़र्श चमचमा रहा था। वह इस फ़र्श की सतह पर गुलाबी बादल की तरह प्रतिबिम्बित हो रही थी। बड़े-बड़े हॉलों में, जो चमकते हुए फ़र्श के कारण और भी अधिक बड़े और दर्पणों के कारण और भी अधिक चौड़े लग रहे थे, वह बहुत ही छोटी-सी लग रही थी।

ऐसा प्रतीत होता था मानो स्थिर विराट जल-विस्तार पर फूलों की एक छोटी-सी टोकरी बही चली जा रही हो।

सूओक खुश-खुश और मुस्कराती हुई चली जा रही थी, सन्तरियों के पास से, कवचधारी और चमड़े की वर्दी पहने हुए लोगों के क़रीब से जो उसे स्तम्भित-से देख रहे थे। वह गुजरी महल के उन कर्मचारियों के पास से, जो जीवन में पहली बार मुस्कराये थे।

ये लोग सूओक के पास आने पर आदरपूर्वक उसे रास्ता देते। ऐसा लगता मानो वह इस महल की स्वामिनी हो, इस पर अधिकार पाने के लिए आई हो।

ऐसा गहरा सन्नाटा छा गया कि सूओक के हल्के-हल्के क़दमों की आहट भी साफ़ सुनाई देती थी। यह आहट जमीन पर गिरनेवाली पंखुड़ी के समान हल्की थी।

इसी समय सूम्रोक के समान छोटा-सा और कान्तिमय बालक चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियों से नीचे भागा आ रहा था, गुड़िया का स्वागत करने के लिए। यह था उत्तराधिकारी टूट्टी।

इन दोनों का क़द एक जैसा था।

सूम्रोक रुक गई।

"तो यह है उत्तराधिकारी टूट्टी!" उसने सोचा।

उसके सामने एक दुबला-पतला-सा लड़का खड़ा था, किसी गुस्सैल लड़की से मिलता-जुलता। भूरी आंखों वाला, चेहरे पर कुछ-कुछ उदासी की छाप लिये हुए। उसका अस्त-व्यस्त बालों वाला सिर एक ओर को ज़रा झुका हुआ था।

सूम्रोक को मालूम था कि टूट्टी कौन है। वह जानती थी कि तीन मोटे कौन हैं। उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि ग़रीब और भूखों मरते लोग जितना लोहा, जितना कोयला निकालते हैं, जितना अनाज पैदा करते हैं, वह सभी तीन मोटे हथिया लेते हैं। वह उस कुलीन महिला को नहीं भूली थी जिसने अपने नौकरों को उसकी पिटाई करने के लिए भेजा था। वह जानती थी कि तीन मोटे, कुलीन वृद्धाएं, बांके-छैले, दुकानदार और सैनिक–

वे सभी जिन्होंने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को लोहे के पिंजरे में बन्द किया और अब हाथ धोकर उसके मित्र नट तिबुल के पीछे पड़े हैं, एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

सूओक जब महल की ओर रवाना हुई थी तो उसने सोचा था कि उत्तराधिकारी टुट्टी बहुत भयानक व्यक्ति होगा, कुलीन बुढ़िया जैसा। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना कि उसकी लम्बी और पतली-सी लाल-लाल जबान हमेशा बाहर लटकती रहती होगी।

मगर नहीं, सूओक को उसमें ऐसी कोई भयानक बात नजर न आई। सच तो यह है कि टुट्टी को देखकर उसे ख़ुशी ही हुई।

वह अपनी ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आंखों से उसकी ओर देख रही थी।

"अरे, तुम हो गुड़िया?" उत्तराधिकारी टुट्टी ने उसका हाथ छूते हुए पूछा।

"ओह, अब मैं क्या करूं?" सूओक को डर महसूस हुआ। "क्या गुड़िया बातें भी किया करती हैं? आह, मुझे तो किसी ने पहले से कुछ बताया ही नहीं! मुझे तो मालूम नहीं कि सैनिकों ने जिस गुड़िया को तोड़ डाला था, वह क्या कुछ कर सकती थी..."

डाक्टर गास्पर ने स्थिति को सम्भाला।

"श्रीमान जी," डाक्टर ने रस्मी अन्दाज में कहा, "मैंने आपकी गुड़िया को ठीक-ठाक कर दिया है! जैसा कि आप अपनी आंखों से देख रहे हैं मैंने केवल उसमें फिर से जान ही नहीं डाली, उसे पहले से ज्यादा सजीव बना दिया है। यक़ीनन यह पहले से बढ़िया गुड़िया बन गई है, उसका फ्रॉक भी बदल दिया गया है, जो कहीं अधिक सुन्दर है। मुख्य बात तो यह है कि मैंने आपकी गुड़िया को बातें करना, गीत गाना और नाचना भी सिखा दिया है।"

"यह तो कमाल हो गया!" उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा।

"अब मुझे अपना फ़न दिखाना चाहिए!" सूओक ने तय किया।

अब चाचा बिज़ाक के कलाकार दल की छोटी-सी अभिनेत्री ने नये रंगमंच पर अपनी पहली भूमिका खेलनी शुरू की।

यह रंगमंच था महल का मुख्य हॉल। वहां ढेरों दर्शक जमा हो गये थे। सभी ओर उनकी भीड़ लगी हुई थी। वे सीढ़ियों के सिरों पर खड़े थे, बरामदों और गैलरियों में जमा थे। वे गोल खिड़कियों में से झांक रहे थे, छज्जों में भीड़ लगाये थे। इसलिए कि अधिक अच्छे ढंग से देख-सुन सकें, वे स्तम्भों पर चढ़े हुए थे।

बहुत ही रंग-बिरंगे सिर और पीठें सूर्य की प्रखर किरणों में चमचमा रहे थे।

सूओक अपने इर्दगिर्द बहुत-से लोगों को देख रही थी। उनके खिले हुए चेहरे उसे ताक रहे थे।

इस भीड़ में हलवाई थे जिनकी उंगलियों से शाख से बहनेवाली राल की भांति लाल शरबत या बादामी रंग की गाढ़ी-गाढ़ी चटनी बह रही थी। यहां मंत्री भी थे जो मुर्गों के समान रंग-बिरंगे फ़ॉक कोट पहने थे और बन्दरों की सी हरकतें कर रहे थे। इस भीड़ में तंग फ़ॉक कोटों वाले छोटे-छोटे और मोटे-मोटे वादक, दरबारी लोग, कुबड़े डाक्टर, लम्बी नाकों वाले विद्वान और लहराते बालों वाले हरकारे भी थे। यहां मन्त्रियों की तरह ठाठदार कपड़े पहने नौकर-चाकर भी उपस्थित थे। ये सभी लोग एक दूसरे से चिपके खड़े थे।

सभी एकदम ख़ामोश थे। वे दम साधे गुलाबी गुड़िया को देख रहे थे। यह गुड़िया भी बिल्कुल शान्त थी और बारह साल की लड़की के अनुरूप गरिमा से इन सैकड़ों नज़रों का सामना कर रही थी। वह ज़रा भी शर्मा या झेंप नहीं रही थी। यहां के दर्शक चौक के उन दर्शकों से अधिक मांग करनेवाले नहीं थे जिनके सामने सूओक लगभग हर दिन अपना कला-प्रदर्शन करती थी। ओह, वे तो बहुत कठोर दर्शक होते थे – वे तमाशाई लोग, फ़ौजी, अभिनेता, स्कूली छात्र और छोटे-मोटे दुकानदार! सूओक तो उनके सामने भी कभी नहीं घबराई-डरी थी। वे कहा करते थे – "सूओक दुनिया की सबसे अच्छी अभिनेत्री है..." और उसके क़ालीन पर अपनी जेब का छोटा-सा आख़िरी सिक्का तक फेंक देते थे। बेशक यह सही है कि उस सिक्के से कलेजी की कचौड़ी ख़रीदी जा सकती थी जो जुराब बुननेवाली किसी औरत के लिए नाश्ते, दोपहर और रात के खाने का काम दे सकती थी।

इस तरह सूओक ने एक वास्तविक गुड़िया की भूमिका अदा करनी शुरू की।

उसने अपने पंजे जोड़े, फिर पंजों के बल खड़ी हुई और अपनी झुकी हुई बाहों को ऊपर उठाया। वह चीनी राजा की भांति अपनी कनिष्ठाओं को हिलाती हुई गाने लगी। उसका सिर गीत की लय के साथ-साथ दायें-बायें हिलने लगा।

सूओक की मुस्कान में शोख़ी थी, शरारत थी। मगर उसने लगातार इस बात की कोशिश की कि सभी गुड़ियों की भांति उसकी आंखें गोल-गोल और फैली-फैली-सी रहें।

गीत यह था –

किसी अजब विज्ञान-ज्ञान से
मुझे तपाकर भट्टी में।
नयी ज़िन्दगी दे डाली है
प्यारे डाक्टर गास्पर ने॥
सुनो, आह अब मैं भरती हूं
देखो तो, मैं मुस्काई।
फिर से हंसी-ख़ुशी की मैंने

नई ज़िन्दगी है पाई।।
तेरे पास पहुंच पाने को
बहुत बार पथ में भटकी।
भूल न जाना नाम बहन का
"सुम्रोक" रहे मन में अटकी।।
फिर से ज़िन्दा हो जाने पर
सोई तो सपना आया।
अपने लिए तुझे सपने में
ज़ार-ज़ार रोते पाया।।
देखो तो पलकें हिलती हैं
कुंडल मेरा लहराया।
भूल न जाना कभी बहन को
प्यारा नाम "सुम्रोक" पाया।।

"सुम्रोक..." टुट्टी ने धीरे से दोहराया।

टुट्टी की आंखें डबडबायी हुई थीं और इसलिए वे दो नहीं, चार लग रही थीं।

गुड़िया ने गीत ख़त्म किया और श्रोताओं के सम्मुख सिर झुकाया। हॉल में उपस्थित सभी लोगों ने प्रशंसा करते हुए गहरी सांस ली। सभी हिले-डुले, सभी ने सिर हिलाये और अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए ज़बान से चटख़ारा भरा।

वास्तव में ही गीत की धुन बहुत प्यारी थी, यद्यपि ऐसी कमउम्र लड़की की आवाज़ के लिए कुछ कुछ उदासी लिये हुए थी। उसकी आवाज़ तो बहुत ही ग़ज़ब की थी। ऐसा लगता था मानो चांदी या शीशे के कण्ठ से निकल रही हो।

"फ़रिश्ते की तरह गाती है," ख़ामोशी में आर्केस्ट्रा कंडक्टर के शब्द सुनाई दिये।

"हां, पर इसका गीत कुछ अजीब-सा था," तमग़े लगाये हुए किसी दरबारी ने कहा।

बस, आलोचना तो इतनी ही हुई। तीन मोटे हॉल में आये। इतनी भीड़ देखकर वे आग-बबूला हो सकते थे, इसलिए सभी लोग दरवाज़ों की तरफ़ भाग चले। इस हड़बड़ी-गड़बड़ी में हलवाई ने शरबत से सना हुआ अपना पंजा किसी सुन्दरी की पीठ पर लगा दिया। सुन्दरी चीख़ उठी। उसके चीख़ने से यह भी स्पष्ट हो गया कि उसके दांत बनावटी हैं, क्योंकि वे निकलकर बाहर आ गिरे थे। सैनिकों के मोटे कप्तान का भद्दा-सा भारी बूट इस ख़ूबसूरत जबड़े के ऊपर जा पड़ा। बनावटी दांत कचकच की आवाज़ करते हुए पिस गये। और प्रबन्धक ने फ़ौरन घूमकर डांटा—

"कैसी शर्म की बात है! यहां अखरोट बिखरा दिये! पैरों तले आते हैं!"

बनावटी जबड़ा खो बैठनेवाली सुन्दरी ने चीख़कर शिकायत करनी चाही। उसने हाथ भी ऊपर उठाये, मगर जबड़े के साथ ही उसकी आवाज़ का भी दम निकल गया था। उसने कुछ कहा, मगर किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

क्षण भर बाद सभी फ़ालतू लोग हॉल से जा चुके थे। केवल बड़े-बड़े अधिकारी ही बाक़ी रह गये।

अब सूग्रोक और डाक्टर गास्पर तीन मोटों के सामने खड़े थे।

ऐसा लगता था कि पिछले दिन घटी घटनाओं से तीन मोटों को कोई परेशानी नहीं हुई थी। वे तो पार्क में डाक्टर की देख-रेख में गेंद खेलते रहे थे। शरीर में चुस्ती-फुर्ती लाने के लिए वे अक्सर ऐसा करते थे। वे बहुत थक गये थे। पसीने से सराबोर उनके चेहरे चमक रहे थे। उनकी क़मीज़ें पीठों से चिपकी हुई थीं और पीठें हवा से फूले हुए पालों जैसी लग रही थीं। इनमें से एक मोटे की आंख के नीचे चोट का नीला-काला-सा निशान था जो भोंडे गुलाब या ख़ूबसूरत मेंढक के समान था। दूसरा मोटा इस भोंडे-से गुलाब को सहमी-सहमी नज़र से देख रहा था।

"यह तो इस दूसरे मोटे ने उसके चेहरे पर गेंद दे मारा है और चोट का ख़ूबसूरत निशान बना दिया है," सूग्रोक ने सोचा।

वह मोटा जिसे चोट लगी थी, गुस्से से फूं-फां कर रहा था। डाक्टर गास्पर हतप्रभ से मुस्करा रहे थे। मोटे ग़ौर से गुड़िया को देख रहे थे। ख़ुशी से चमकते हुए उत्तराधिकारी टूट्टी के चेहरे को देखकर मोटों का मूड ठीक हुआ।

"हां, तो," एक मोटे ने कहा, "आप हैं डाक्टर गास्पर आर्नेरी?"

डाक्टर ने सिर झुकाया।

"गुड़िया कैसी है?" दूसरे मोटे ने पूछा।

"बहुत ही ख़ूब है!" टूट्टी ख़ुशी से चिल्लाया।

मोटों ने उत्तराधिकारी को इतना अधिक ख़ुश कभी नहीं देखा था।

"यह तो बहुत ख़ुशी की बात है! गुड़िया वास्तव में बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रही है..."

पहले मोटे ने माथे से पसीना पोंछा और चीख़कर कहा —

"डाक्टर गास्पर, आपने हमारा फ़रमान पूरा कर दिया है। अब आप अपना इनाम मांग सकते हैं।"

ख़ामोशी छा गयी।

लाल रंग के विग लगाये हुए नाटा-सा मुंशी अपना पेन तैयार किये हुए था ताकि डाक्टर जो इनाम मांगे, वह उसे झटपट लिख ले।

डाक्टर ने यह कहा – "कल अदालत चौक में विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए जल्लादों के दस तख़्ते बनाये गये थे ..."

"उन्हें आज दण्ड दिया जायेगा," एक मोटे ने टोका।

"मैं भी इसी की चर्चा करने जा रहा हूं। मेरी आप से यह प्रार्थना है कि आप सभी बन्दियों की जान बख़्श दें और उन्हें आज़ाद कर दें। मेरी प्रार्थना है कि आप सभी को माफ़ कर दें और तख़्ते जलवा दें ..."

लाल विगवाला मुंशी तो यह प्रार्थना सुनकर कांप उठा और उसके हाथ से पेन गिर पड़ा। पेन की निब बहुत ही तेज़ थी और वह दूसरे मोटे के पैर में जा घुसी। वह दर्द से चीख़ उठा और एक पैर पर लट्टू की तरह घूमने लगा। पहला मोटा, जिसकी आंख के नीचे चोट का निशान था, दुर्भावना से ठठाकर हंस दिया। उसे अब बदला मिल गया था।

"बेड़ा ग़र्क़!" पांव से पेन निकालते हुए दूसरा मोटा चिल्लाया। कम्बख़्त बिल्कुल तीर के समान है। "बेड़ा ग़र्क़! ऐसी प्रार्थना करना अपराध है! आपको ऐसा इनाम मांगने का अधिकार नहीं है!"

लाल बनावटी बालों वाला मुंशी अपनी जान लेकर भागा। रास्ते में वह एक फूलदान से टकराया जो बम की सी आवाज़ करता हुआ नीचे गिरा और टुकड़े-टुकड़े हो गया। अब तो यहां अच्छा-ख़ासा हंगामा ही हो गया था। मोटे ने पेन निकाला और भागे जाते मुंशी की ओर फेंका। मगर ऐसा मोटा आदमी भला ख़ाक निशानेबाज़ हो सकता है! पेन एक सन्तरी की पीठ में जा घुसा। पर चूंकि वह असली फ़ौजी था, इस लिये टस से मस तक नहीं हुआ। जब तक पहरा बदला नहीं गया, पेन उसी जगह पर लगा रहा।

"मैं आप से अनुरोध करता हूं कि उन सभी मज़दूरों की जान बख़्श दी जाये जिन्हें मौत की सज़ा दी जानेवाली है और जल्लादों के सभी तख़्ते जलवा दिये जायें।" डाक्टर ने धीरे से, मगर दृढ़तापूर्वक दोहराया।

जवाब में तीनों मोटे ऐसे चीख़ उठे मानो कोई तख़्ते तोड़ रहा हो।

"नहीं! नहीं! नहीं! ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता! उन्हें ज़रूर सज़ा दी जायेगी!"

"मरने का अभिनय कीजिये," डाक्टर ने फुसफुसाकर गुड़िया से कहा।

सूओक बात को फ़ौरन भांप गई। वह पंजों के बल खड़ी हुई, दर्दभरी आवाज़ में कराही और लड़खड़ाने लगी। उसका फ़ॉक पकड़ ली गई तितली के पंखों की भांति फड़फड़ा रहा था और उसका सिर लटक-सा गया था। ऐसा लगता था कि वह अभी ढेर हुई कि हुई।

उत्तराधिकारी उसकी ओर लपका।

"हाय! हाय!" वह चीख़ उठा।

सूओक और भी ज़्यादा दर्दीली आवाज़ में कराही।

"आप देख रहे हैं न?" डाक्टर गास्पर ने कहा। "गुड़िया फिर से दम तोड़ने जा रही है। उसके अन्दर लगे हुए पुर्ज़े बहुत ही संवेदनशील हैं। अगर आप मेरी प्रार्थना पर कान नहीं देंगे, तो वह बिल्कुल बेकार होकर रह जायेगी। मेरे ख़्याल में तो अगर श्रीमान उत्तराधिकारी की गुड़िया बेकार का गुलाबी चिथड़ा बनकर रह जायेगी, तो उन्हें बहुत सदमा पहुंचेगा।"

उत्तराधिकारी तो आपे से बाहर हो गया। वह हाथी के बच्चे की तरह पैर पटकने लगा। उसने कसकर आंखें बन्द कर लीं और सिर हिलाने लगा।

"हरगिज़ ऐसा नहीं होने दूंगा! हरगिज़ नहीं!" वह चीख़ उठा। "डाक्टर का अनुरोध पूरा किया जाये! मैं अपनी गुड़िया को नहीं मरने दूंगा! सूओक! सूओक!" वह फूट-फूटकर रोने लगा।

ज़ाहिर है कि तीन मोटों ने हथियार फेंक दिये। फ़ौरन हुक्म जारी कर दिया गया। विद्रोहियों को माफ़ी दे दी गयी। डाक्टर गास्पर ख़ुश ख़ुश घर चल दिये।

"अब मैं घोड़े बेचकर सोऊंगा," डाक्टर रास्ते में सोचते जा रहे थे।

घर लौटते हुए उन्होंने नगर में सुना कि अदालत चौक में जल्लादों के तख़्ते जल रहे हैं और धनी लोग इस बात से बहुत नाराज़ हैं कि ग़रीबों को माफ़ कर दिया गया है।

इस तरह सूम्रोक तीन मोटों के महल में रह गई।

टूट्टी उसे साथ लिये हुए बाग़ में आया।

उत्तराधिकारी ने पैरों से फूलों की क्यारियों को रौंदा, बाड़ के कांटेदार तार से टकराया और तालाब मे गिरते-गिरते बचा। ख़ुशी के मारे उसे मानो अपनी सुध-बुध ही नहीं रही थी।

"क्या वह इतना भी नहीं समझ पा रहा कि मैं जीती-जागती लड़की हूं?" सूम्रोक को हैरानी हो रही थी। "मैं तो कभी किसी के हाथों ऐसे उल्लू न बनती।"

नाश्ता लाया गया। सूम्रोक ने पेस्ट्रियां देखीं और उसे याद आया कि केवल पिछले वर्ष की पतझर में ही उसे एक पेस्ट्री खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और सो भी बूढ़े मसख़रे अगस्त ने कहा था कि वह पेस्ट्री नहीं, मीठी पाव-रोटी है। उत्तराधिकारी टूट्टी के लिये लाई गई पेस्ट्रियों की तो बात ही निराली थी। मधुमक्खियां उन्हें फूल ही समझ बैठी थीं और दसेक उनके इर्दगिर्द मंडराने लगी थीं।

"हाय, मैं क्या करूं?" सूम्रोक व्यथित होती हुई सोचने लगी। "गुड़ियां भला कभी खाती भी हैं? मगर गुड़ियां तो तरह-तरह की होती हैं... ओह, मेरा बहुत मन हो रहा है पेस्ट्री खाने को!"

सूम्रोक अपना मन न मार सकी।

"मैं भी थोड़ी-सी पेस्ट्री खाना चाहती हूं..." उसने धीरे से कहा। उसके गाल लज्जारुण हो गये।

"यह तो बड़ी अच्छी बात है!" उत्तराधिकारी बहुत ख़ुश हुआ। "पहले तो तुम ने कभी कुछ खाना नहीं चाहा था। तब मुझे अकेले नाश्ता करते हुए बड़ी ऊब अनुभव होती थी। ओह, कितनी ख़ुशी की बात है! तुम्हें भूख लगने लगी है..."

सूम्रोक ने एक टुकड़ा खाया। उसके बाद एक और, एक और, फिर एक और। अचानक उसने देखा कि उत्तराधिकारी की देखभाल करनेवाला नौकर जो कुछ दूर खड़ा हुआ था उसकी ओर देख रहा है—सो भी साधारण ढंग से नहीं, सहमा-डरा-सा।

वह मुंह बाये हुए था।

नौकर का ऐसा करना स्वाभाविक ही था।

उसने भला कब अपने जीवन में गुड़ियों को खाते देखा होगा!

सूओक सहम उठी। चौथी पेस्ट्री उसके हाथ से गिर गयी, सबसे अधिक क्रीम और अंगूर के मुरब्बेवाली।

मगर मामला बिगड़ा नहीं। नौकर ने अपनी आंखें मलीं और मुंह बन्द कर लिया। उसने सोचा –

"यह तो मुझे भ्रम हुआ है। गर्मी की मेहरबानी है!"

उत्तराधिकारी लगातार बोलता-बतियाता रहा। आखिर थककर चुप हो गया।

गर्मी के इस वक़्त गहरी नीरवता छाई हुई थी। ज़ाहिर था कि पिछले दिन की हवा पंख लगाकर कहीं दूर उड़ गई थी। अब एकदम शान्ति थी। और तो और पक्षियों ने भी पंख समेट लिये थे।

ऐसी नीरवता में उत्तराधिकारी के निकट घास पर बैठी हुई सूओक एक अनबूझ-सी आवाज सुन रही थी, बार-बार एक ही समय दोहरायी जाती हुई। यह ध्वनि रूई में लिपटी हुई घड़ी की टिक-टिक के समान थी। अन्तर केवल इतना था कि घड़ी "टिक-टिक" करती है और यह ध्वनि थी "धक-धक" की।

"यह क्या है?" सूओक ने पूछा।

"क्या?" उत्तराधिकारी ने आश्चर्य से एक वयस्क की भांति अपनी नज़र ऊपर उठाई।

"यह धक-धक की आवाज़... शायद यह घड़ी है? तुम्हारे पास घड़ी है क्या?"

फिर से ख़ामोशी छा गई और इस ख़ामोशी में फिर से यह धक-धक सुनाई दी। सूओक ने उंगली उठाकर चुप रहने का संकेत किया। उत्तराधिकारी ने भी ध्यान से इस आवाज़ को सुना।

"यह घड़ी नहीं है," उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा। "यह तो मेरा लोहे का दिल है जो धड़क रहा है..."

दसवां अध्याय

चिड़ियाघर

दो बजे उत्तराधिकारी टूट्टी को पढ़ाई के कमरे में बुला लिया गया। पाठ का समय हो गया था। सूओक अकेली रह गई।

किसी को इस बात का सान-गुमान भी नहीं हुआ कि सूओक जीती-जागती लड़की है। शायद उत्तराधिकारी टूट्टी की असली गुड़िया जो अब नृत्य-शिक्षक श्रीमान एक-दो-तीन के पास थी, सूओक की भांति ही सजीव लगती होगी। निश्चय ही किसी बहुत बढ़िया कारीगर

के निपुण हाथों ने उसे बनाया होगा। हां, यह सच है कि वह पेस्ट्रियां नहीं खाती थी। मगर शायद उत्तराधिकारी टूट्टी ने सही कहा था कि उसे भूख ही नहीं लगती थी। तो ख़ैर, इस तरह सूम्रोक अकेली रह गई।

स्थिति ख़ासी उलझी-उलझायी थी।

बहुत बड़ा महल, भूल-भुलैया से ढेरों दरवाज़े, बरामदे और सीढ़ियां।

दहशत पैदा करनेवाले सन्तरी, विभिन्न रंगों के विग लगाये हुए अनजाने-अपरिचित कठोर लोग, ख़ामोशी और चमक-दमक।

सूम्रोक की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

वह उत्तराधिकारी के सोने के कमरे में खिड़की के पास खड़ी थी।

"तो मुझे अपने काम की योजना बना लेनी चाहिये," सूम्रोक ने तय किया। "हथियारसाज़ प्रोस्पेरो लोहे के जिस पिंजरे में बन्द है, वह उत्तराधिकारी टूट्टी के चिड़ियाघर में रखा है। मुझे किसी तरह वहां पहुंचना चाहिये।"

यह तो आप जानते ही हैं कि जीते-जागते बच्चों को उत्तराधिकारी के निकट भी नहीं फटकने दिया जाता था। उसे तो बन्द घोड़ा-गाड़ी में भी कभी नगर नहीं ले जाया गया था। वह तो महल में ही बड़ा हुआ था। उसे विज्ञानों की शिक्षा दी जाती थी, ज़ालिम बादशाहों और सेनानायकों के बारे में किताबें पढ़कर सुनाई जाती थीं। उसके आसपास रहनेवाले लोगों के लिये हंसना-मुस्कराना मना था। उसके सभी शिक्षक और अध्यापक दुबले-पतले थे, ऊंचे क़द के बूढ़े थे, कसकर भींचे हुए पतले होंठों और मटैले चेहरों वाले। इसके अलावा उन सब के हाज़मे भी ख़राब रहते थे। गड़बड़ हाज़मेवाले लोग भी कभी हंसते हैं!

उत्तराधिकारी टूट्टी ने कभी ज़ोर की हंसी, गूंजते हुए ठहाके नहीं सुने थे। हां, कभी-कभार नशे में धुत्त किसी कसाई या अपनी ही तरह के मोटे-मोटे मेहमानों की दावत करनेवाले तीन मोटों के ठहाके उसे ज़रूर सुनाई देते थे। मगर इन्हें प्यारी हंसी थोड़े ही कहा जा सकता था! यह तो भयानक चीख़-चिंघाड़ होती थी। इस से मन खिलता नहीं, दहल उठता था।

मुस्कराती तो थी केवल गुड़िया। मगर तीन मोटे गुड़िया की मुस्कान को ख़तरनाक नहीं मानते थे। फिर गुड़िया बोलती तो थी ही नहीं। वह उत्तराधिकारी को उन बहुत-सी बातों के बारे में कुछ नहीं बता सकती थी जो महल के पार्क और लोहे के पुलों पर पहरा देते हुए सन्तरी उसकी नज़रों से दूर रखते थे। इसी लिये वह जनता, ग़रीबी, भूखे बच्चों, कारख़ानों, खानों, जेलख़ानों और किसानों के बारे में कुछ नहीं जानता था। इसी लिये उसे यह मालूम नहीं था कि धनी लोग ग़रीबों को मेहनत करने

के लिये मजबूर करते हैं और ग़रीबों के थके-हारे हाथों द्वारा तैयार की जानेवाली सभी चीज़ें हथिया लेते हैं।

तीन मोटे अपने उत्तराधिकारी को बहुत ही क्रोधी, बहुत ही क्रूर बनाना चाहते थे। उसे बच्चों से दूर रखा गया और उसके लिये चिड़ियाघर बना दिया गया।

"अच्छा यही है कि वह दरिन्दों को देखा करे," उन्होंने तय किया । "उसे यह निर्जीव, हृदयहीन गुड़िया दे दी जाये और उसके लिये जंगली दरिन्दे जुटा दिये जायें। यही उचित है कि वह शेरों को कच्चा मांस खाते और अजगर को ज़िन्दा ख़रगोश निगलते देखे। यही ठीक रहेगा कि वह दरिन्दों की दिल दहलानेवाली आवाज़ें सुने और अंगारों की तरह जलती हुई उनकी लाल-लाल आंखें देखे। तभी वह निर्दय, तभी वह संगदिल बन सकेगा।"

मगर तीन मोटों के मन के चीते न हो सके।

उत्तराधिकारी टुट्टी मन लगाकर पढ़ता, वीरों और बादशाहों के बारे में रोंगटे खड़े करनेवाली कहानियां सुनता, अपने शिक्षकों की फुंसियों वाली नाकों को नफ़रत से देखता, मगर वह संगदिल न बना।

उसे दरिन्दों की तुलना में गुड़िया कहीं अधिक अच्छी लगती थी।

बेशक आप यह कहेंगे कि बारह साल के बालक के लिए गुड़ियों से खेलना शर्म की बात है। इस उम्र में बहुत-से तो शेरों का शिकार करना चाहेंगे। मगर उत्तराधिकारी के सिलसिले में इसकी एक ख़ास वजह थी। वक़्त आने पर आप को उस कारण की जानकारी हो जायेगी।

फ़िलहाल हम सूओक की ओर लौटते हैं।

उसने शाम होने तक इन्तज़ार करने का फ़ैसला किया। उसे दर असल ऐसा ही करना भी चाहिये था। ज़ाहिर है कि गुड़िया का दिन-दहाड़े महल में अकेले इधर-उधर घूमते फिरना बड़ा अजीब-सा लगता।

पाठ के बाद वे फिर दोनों इकट्ठे हो गये।

"तुम्हें एक बात बताऊं," सूओक ने कहा, "जब मैं डाक्टर गास्पर के यहां बीमार पड़ी थी, तो मैंने एक विचित्र सपना देखा था। उस सपने में मैं गुड़िया से जीती-जागती लड़की में बदल गई... मुझे दिखाई दिया मानो मैं सरकस की कलाकार थी। मैं अन्य कलाकारों के साथ मेलों-ठेलों में घूमनेवाले पहियेदार घर में रहती थी। यह गाड़ी एक जगह से दूसरी जगह जाती, मेलों-ठेलों में ठहरती और हम बड़े-बड़े चौकों में अपने खेल-तमाशे दिखाते। मैं रस्से पर चलती, नाचती, बाज़ीगरी के मुश्किल करतब करती और मूक नाटकों में तरह-तरह की भूमिकाएं खेलती..."

उत्तराधिकारी आंखें फाड़-फाड़कर उसे देखता हुआ ये बातें सुन रहा था।

"हम बहुत ग़रीब लोग थे। अक्सर दोपहर का खाना नहीं खाते थे। हमारे पास एक बड़ा-सा सफ़ेद घोड़ा था। उसका नाम था अनरा। फटे हुए पीले कपड़े से ढके उसके चौड़े ज़ीन पर खड़ी होकर मैं बाज़ीगरी के करतब दिखाती। फिर वह घोड़ा मर गया, क्योंकि पूरे एक महीने तक हमारे पास उसे अच्छी तरह से खिलाने-पिलाने के लिये काफ़ी पैसे नहीं थे..."

"ग़रीब?" टुट्टी ने पूछा। "यह बात मेरी समझ में नहीं आती। आप लोग ग़रीब क्यों थे?"

"बात यह है कि हम ग़रीबों के सामने अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। वे तांबे-पीतल के छोटे-छोटे सिक्के ही हमारी ओर फेंकते थे। कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि तमाशे के बाद मसख़रा अगस्त अपना टोप लेकर दर्शकों के सामने चक्कर लगाता और टोप बिल्कुल ख़ाली ही रह जाता, उसे एक कौड़ी भी दर्शकों से न मिलती।"

उत्तराधिकारी टुट्टी कुछ भी न समझ पाया।

सूश्रोक शाम होने तक उसे ऐसी ही बातें सुनाती रही। उसने उसे ग़रीबों के कठिन जीवन, बड़े नगर और उस कुलीन वृद्धा के बारे में बताया जो उसकी पिटाई कराना चाहती थी। उसने चर्चा की उन अमीरों की जो जीते-जागते बालकों पर कुत्ते लुहा देते हैं। उसने ज़िक्र किया नट तिबुल और हथियारसाज़ प्रोस्पेरो का और यह भी बताया कि मज़दूर, खनिक और जहाज़ी धनियों और मोटों की सत्ता का तख़्ता उलट देना चाहते हैं।

सब से अधिक तो उसने सरकस का ज़िक्र किया। धीरे-धीरे वह अपनी बातों की तरंगों में ऐसी बही कि यह तक भूल गई कि वह सपने की चर्चा कर रही है।

"मैं बहुत अर्से से चाचा ब्रिज़ाक के पहियेदार घर में रह रही हूं। मुझे तो यह भी याद नहीं कि किस उम्र में मैं नाचने, घुड़सवारी करने और कसरती झूले पर तरह-तरह की कसरतें और करतब करने लग गई थी। ओह, मैं कैसे-कैसे बढ़िया करतब करना जानती हूं!" उसने हाथ बजाते हुए कहा, "मसलन, पिछले इतवार को हमने बन्दरगाह में

अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वहां मैंने आड़ुओं की गुठलियों पर वाल्ज़ की धुन बजायी..."

"आड़ुओं की गुठलियों पर? वह कैसे?"

"ओह, तुम यह भी नहीं जानते! क्या तुमने आड़ू की गुठली से बनाई गई सीटी कभी नहीं देखी? यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। मैंने बारह गुठलियां जमा कीं और उनकी सीटियां बना लीं। जब तक उन में सूराख़ नहीं हो गया, उन्हें पत्थर पर घिसती रही, घिसती रही..."

"वाह, यह तो बहुत दिलचस्प बात है!"

"केवल बारह गुठलियों पर ही नहीं, मैं तो चाबी पर भी वाल्ज़ की धुन बजा सकती हूं..."

"चाबी पर भी? वह कैसे? ज़रा बजाकर दिखाओ! मेरे पास बहुत बढ़िया चाबी है..."

इतना कहकर उत्तराधिकारी टूट्टी ने अपनी जाकेट के कालर का बटन खोला और गले में से एक पतली-सी ज़ंजीर निकाली। इस ज़ंजीर के साथ एक छोटी-सी सफ़ेद चाबी लटक रही थी।

"यह लो!"

"तुम इसे इस तरह छिपाये क्यों रहते हो?" सूओक ने पूछा।

"मुझे यह चाबी सरकारी सलाहकार ने दी है। यह मेरे चिड़ियाघर के एक पिंजरे की चाबी है।"

"तो क्या तुम सभी पिंजरों की चाबियां अपने पास रखते हो?"

"नहीं। मुझसे कहा गया है कि यह सबसे महत्त्वपूर्ण चाबी है। मुझे इसे बहुत सम्भालकर रखना चाहिये..."

सुप्रोक ने उसे अपनी कला दिखाई। उसने चाबी का सूराखवाला भाग होंठ के साथ लगाकर एक प्यारी-सी धुन बजाई।

उत्तराधिकारी ऐसा मस्त हुआ कि वह चाबी जो उसे बहुत सम्भालकर रखने के लिये सौंपी गई थी, उसे उसकी सुध-बुध ही न रही। चाबी सुप्रोक के पास ही रह गई। उसने अनजाने ही उसे लैस से सुसज्जित गुलाबी जेब में डाल लिया।

शाम हुई।

गुड़िया के लिये उत्तराधिकारी टूट्टी के सोने के कमरे की बग़ल में ही एक विशेष कमरा तैयार किया गया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी को सपने में अद्भुत चीज़ें दिखाई दे रही थीं—लम्बी-लम्बी नाकों वाले ऐसे नक़ाब कि देखकर बरबस हंसी आये; अपनी नंगी पीली पीठ पर बड़ा-सा चिकना पत्थर लादे हुए एक व्यक्ति और एक मोटा जो इस व्यक्ति पर अपना काला-सा कोड़ा बरसा रहा था। उत्तराधिकारी ने चिथड़े पहने एक छोकरे को आलू खाते देखा। उसे सफ़ेद घोड़े पर सवार एक बनी-ठनी बुढ़िया भी नज़र आई जो आड़ुओं की बारह गुठलियों के सहारे वाल्ज़ की कोई भद्दी-सी धुन बजा रही थी...

इसी समय इस छोटे-से शयन-कक्ष से काफ़ी दूर, महल के पार्क के एक कोने में कुछ और ही घटनायें घट रही थीं। आप घबरायें नहीं, पाठकगण, वहां कोई भयानक बात नहीं हुई थी। इस रात केवल उत्तराधिकारी टूट्टी ने ही सपने में अजीबोग़रीब चीज़ें नहीं देखी थीं। ऐसा ही अद्भुत सपना देख रहा था वह सन्तरी जो उत्तराधिकारी टूट्टी के चिड़ियाघर के फ़ाटकवाली चौकी पर पहरा देते-देते ऊंघने लगा था।

सन्तरी जंगले के साथ टेक लगाये पत्थर पर बैठा था और प्यारी-प्यारी नींद का मज़ा ले रहा था। चौड़ी मियान में बन्द उसकी तलवार घुटनों के बीच रखी हुई थी। काले रेशमी रूमाल के बीच से पिस्तौल बड़े इत्मीनान से उसकी बग़ल में लटक रही थी। उसके निकट ही बजरी पर जंगलेवाली लालटेन रखी थी। सन्तरी के बूट और उसकी आस्तीन पर पत्तों के बीच से आ गिरनेवाला तितली का लम्बा-सा लार्वा लालटेन की रोशनी में चमक रहे थे।

एकदम शान्तिपूर्ण वातावरण था।

हां, तो सन्तरी सो रहा था, अजीबोग़रीब सपना देख रहा था। उसने देखा कि उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया उसके पास आई। वह हू-ब-हू वैसी ही थी जैसी कि सुबह के समय, जब डाक्टर गास्पर आर्नेरी उसे लेकर आये थे। वही गुलाबी फ़्रॉक, वही रेशमी

फ़ीते, वही बढ़िया लैस, वही चमक-दमक। मगर अब सपने में वह जीती-जागती लड़की प्रतीत हुई। वह मनमाने ढंग से हिलती-डुलती थी, दायें-बायें देखती थी, चौंक उठती थी और होंठों पर उंगली रख देती थी।

उसका छोटा-सा शरीर लालटेन की रोशनी में चमक रहा था।

सन्तरी तो सपने में मुस्करा भी दिया।

इसके बाद उसने गहरी सांस ली, अधिक सुविधाजनक ढंग से बैठ गया, कंधा जंगले के साथ टिका दिया और नाक जंगले में बने हुए लोहे के गुलाब पर रख दी।

सूम्रोक ने सन्तरी को सोते देखकर लालटेन उठाई और पंजों के बल बहुत सावधानी से बाड़ को लांघ गई।

सन्तरी खर्राटे ले रहा था। नींद में उसे ऐसे लगा मानो चिड़ियाघर में शेर दहाड़ रहे हों।

किन्तु वास्तव में गहरा सन्नाटा था। जानवर सो रहे थे।

लालटेन की रोशनी तो बहुत ही थोड़े फ़ासले तक पड़ रही थी। सूम्रोक धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी, अंधेरे में इधर-उधर देखती हुई। ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि रात एकदम अन्धेरी नहीं थी। झिलमिलाते सितारे और इस जगह से कुछ दूर, वृक्षों की चोटियों और छतों पर से पड़ती हुई पार्क के लैम्पों की रोशनी इसकी कालिमा को कुछ कम कर रही थी।

लड़की बाड़ लांघकर एक तंग-सी वीथी पर चल दी, सफ़ेद फूलों से ढकी छोटी-छोटी झाड़ियों के बीच से।

कुछ देर बाद उसे जानवरों की गंध मिली। वह फ़ौरन इसे पहचान गई। बात यह है कि एक बार शेरों को सधानेवाला एक व्यक्ति अपने तीन शेरों और एक ग्रेट डेन कुत्ते के साथ उनके सरकस-दल में आ मिला था।

सूम्रोक खुले मैदान में जा पहुंची। उसे अपने इर्दगिर्द काली-काली परछाइयां-सी नज़र आईं मानो छोटे-छोटे घर खड़े हों।

"ये रहे पिंजरे," सूम्रोक फुसफुसाई।

उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसे जानवरों से डर लगता हो ऐसी बात नहीं। बात यह है कि सरकस में काम करनेवाले लोग तो यों भी बुज़दिल नहीं होते। उसे चिन्ता थी तो केवल इस बात की कि उसके पैरों की आहट और लालटेन की रोशनी से कोई जानवर न जाग उठे और शोर मचाकर सन्तरी को न जगा दे।

वह पिंजरों के निकट गई।

"प्रोस्पेरो कहां है?" सूम्रोक चिन्तित हो रही थी।

वह लालटेन ऊपर उठाकर पिंजरों को देख रही थी। कहीं भी कोई चीज हिल-डुल न रही थी, नीरवता छाई थी। लालटेन की रोशनी पिंजरों की सलाखों से विभाजित होकर असमान हिस्सों में पिंजरों में प्रवेश करती हुई जानवरों पर पड़ रही थी।

उसे झबरीले मोटे कान नज़र आये, फिर कोई फैला हुआ पंजा और फिर कोई धारीदार पीठ दिखाई दी... उक़ाब पंख फैलाकर सो रहे थे, प्राचीन मुकुटों जैसे लग रहे थे। कुछ पिंजरों के अन्दर अजीब-सी काली आकृतियां नज़र आ रही थीं।

पतली रुपहली सलाखों वाले पिंजरों में ऊंची-नीची शाखाओं पर तोते बैठे थे। जब सूओक इस पिंजरे के क़रीब खड़ी हुई, तो उसे लगा कि सलाख के बिल्कुल क़रीब बैठे हुए बूढ़े और लम्बी लाल दाढ़ी वाले तोते ने एक आंख खोलकर उसकी ओर देखा। उसकी आंख नीबू के बीज के समान थी।

इतना ही नहीं, उसने झटपट वह आंख बन्द कर ली और ऐसे जाहिर किया मानो सो रहा हो। फिर सूओक को ऐसे प्रतीत हुआ मानो वह अपनी लाल दाढ़ी में मुस्कराया भी।

"मैं तो निरी बुद्धू हूं," सूओक ने अपने को दिलासा दिया। मगर उसे डर महसूस हुआ।

वास्तव में ही उस ख़ामोशी में कोई चीज हिलती-डुलती, सरसराती और हल्की-सी चरमर की आवाज करती...

कभी रात को अस्तबल या मुर्ग़ीख़ाने में जाइये। वहां की ख़ामोशी आपको आश्चर्यचकित कर देगी। मगर साथ ही वहां आपको अनेक हल्की-हल्की आवाजें सुनाई देंगी – पंख की फड़फड़ाहट, घुरघुराहट, तख़्ते की चरमर और कोई बारीक-सी आवाज़ जो मानो किसी सोई हुई मुर्गी के कंठ से निकल गई हो।

"कहां होगा प्रोस्पेरो?" सूओक ने फिर से सोचा। मगर इस बार वह बहुत चिन्तित थी। "अगर आज उसे दण्ड दिया जा चुका और उसके पिंजरे में उक़ाब बिठा दिया गया होगा, तब?"

इसी समय किसी की फटी-सी आवाज़ सुनाई दी –

"सूओक!"

इसी समय उसे किसी की भारी और तेज़ी से चलती हुई सांस और कुछ ऐसी आवाजें सुनाई दीं मानो कोई बड़ा-सा बीमार कुत्ता कराह रहा हो।

"ओह!" सूओक चौंक उठी।

उसने उस तरफ़ लालटेन की जिधर से आवाज़ आई थी। वहां दो लाल-लाल चिंगारियां जल रही थीं। पिंजरे में भालू के समान कोई बड़ी-सी काली आकृति खड़ी थी, सलाखों को थामे हुए, उन पर अपना सिर टिकाये हुए।

"प्रोस्पेरो!" सूभ्रोक ने धीरे से कहा।

इसी क्षण उसके दिमाग़ में ढेरों ख़्याल कौंध गये—

"वह ऐसा भयानक क्यों है? उसके तन पर भालू की तरह बड़े-बड़े बाल उगे हुए हैं। उसकी आंखों में लाल-लाल चिंगारियां हैं। उसके नाख़ून लम्बे और ख़मदार हैं। वह नंग-धड़ंग है। यह आदमी नहीं, बनमानस है..."

सूभ्रोक रुआंसी हो गई।

"आख़िर तुम आ गईं, सूभ्रोक," इस अजीब-से जन्तु ने कहा। "मुझे यक़ीन था कि मैं तुम्हें देख पाऊंगा।"

"नमस्ते। मैं तुम्हें आज़ाद कराने आई हूं," सूभ्रोक ने कांपती हुई आवाज़ में धीरे से कहा।

"मैं पिंजरे से नहीं निकलूंगा। मेरी आख़िरी घड़ी आ पहुंची है।"

फिर से भारी-भरकम और खरखरी-सी आवाज़ें सुनाई दीं। यह जन्तु गिर पड़ा, फिर से उठा और उसने अपना माथा सलाखों के साथ सटा दिया।

"मेरे क़रीब आओ, सूभ्रोक।"

सूभ्रोक क़रीब गई। बड़ा भयानक-सा चेहरा उसकी ओर देख रहा था। निश्चय ही यह किसी इन्सान का चेहरा नहीं था। वह तो भेड़िये की थूथनी जैसा लगता था। सबसे भयानक बात तो यह थी कि इस भेड़िये के कानों की बनावट इन्सान के कानों जैसी थी, यद्यपि वे छोटे-छोटे सख़्त बालों से ढके हुए थे।

सूभ्रोक का मन हुआ कि अपना मुंह ढांप ले। लालटेन उसके हाथों में हिल-डुल रही थी। इसके फलस्वरूप हवा में प्रकाश के पीले-पीले धब्बे चमक उठते थे।

"तुम्हें मुझसे डर लगता है, सूभ्रोक। मैं तो अब इन्सान जैसा नहीं लगता हूं। डरो नहीं! मेरे नज़दीक आओ... तुम कितनी बड़ी हो गई हो। तुम बड़ी दुबली-पतली हो। तुम्हारा चेहरा बड़ा उदास है..."

वह बड़ी मुश्किल से ही बोल पा रहा था। वह नीचे ही नीचे धसकता जा रहा था और आख़िर अपने पिंजरे के लकड़ी के फ़र्श पर लेट गया। वह बड़ी तेज़ी से सांस ले रहा था, उसका मुंह खुला हुआ था और लम्बे-लम्बे पीले दांतों की दो क़तारें दिखाई दे रही थीं।

"मेरी आख़िरी घड़ी क़रीब आ गई है। मगर मैं जानता था कि मरने से पहले तुम्हें एक बार फिर देखूंगा।"

उसने बालों से भरी हुई बन्दर जैसी बांह फैलाकर कुछ टटोलना शुरू किया। वह अंधेरे में कुछ ढूंढ लेना चाहता था। तख़्ते में से एक कील निकालने की आवाज़ हुई और तब वह भयानक बांह सलाखों के बीच से बाहर आई।

इस जन्तु ने एक छोटी-सी तख़्ती आगे की ओर बढ़ाते हुए कहा –

"इसे ले लो। इस से सब कुछ तुम्हारी समझ में आ जायेगा।"

सूभ्रोक ने तख़्ती अपनी जेब में छिपा ली।

"प्रोस्पेरो!" वह धीरे से फुसफुसाई।

मगर कोई उत्तर नहीं मिला।

सूभ्रोक लालटेन क़रीब ले गई। जन्तु का मुंह अब हमेशा के लिए खुला रह गया था। उसकी ज्योतिहीन आंखें सूभ्रोक को ताक रही थीं।

"प्रोस्पेरो!" सूभ्रोक के हाथ से लालटेन नीचे गिर गई। "वह मर गया! वह मर गया! प्रोस्पेरो!"

लालटेन बुझ गई।

चौथा भाग

हथियारसाज़ प्रोस्पेरो

मिठाईघर का बुरा हाल हो गया

चिड़ियाघर के जानवरों ने ख़ूब शोर मचा दिया। इससे उस सन्तरी की नींद टूट गई जिस से फाटक पर हमारा परिचय हो चुका है और जिसकी लालटेन सुओक उठा ले गई थी।

जानवर चीख़-चिंघाड़ रहे थे, दहाड़ और गुर्रा रहे थे, पिंजरे की सलाखों पर ज़ोर-ज़ोर से अपनी दुमें मार रहे थे, पक्षी पंख फड़फड़ा रहे थे ...

सन्तरी ने अपने जबड़े बजाते हुए जमुहाई ली, जंगले पर मुट्ठियां जमाकर अंगड़ाई ली और आख़िर होश में आया।

तब वह एकदम चौंककर खड़ा हुआ। लालटेन ग़ायब थी। सितारे धीमे-धीमे झिलमिला रहे थे। चमेली की प्यारी-प्यारी ख़ुशबू फैली हुई थी।

"बेड़ा ग़र्क़!"

सन्तरी ने गुस्से से थूका। उसके थूक ने गोली का सा काम किया और चमेली के एक फूल को डाल से नीचे गिरा दिया।

जानवरों का सहगान अधिकाधिक ऊंचा होता गया।

सन्तरी ने ख़तरे का संकेत दिया। घड़ी भर बाद लोग मशालें लिए उसकी ओर दौड़ते हुए आये। सन्तरी गालियां बक रहे थे। मशालें चट-चट की आवाज़ कर रही थीं। कोई सन्तरी अपनी तलवार से अटककर गिर पड़ा और किसी दूसरे सन्तरी की एड़ी से टकराकर उसने अपनी नाक घायल कर ली।

"कोई मेरी लालटेन चुरा ले गया!"

"कोई चिड़ियाघर में घुस आया है!"

"चोर!"

"विद्रोही!"

टूटी नाक और टूटी एड़ीवाला सन्तरी तथा अन्य सन्तरी भी अंधेरे में मशालें लहराते हुए अनजाने शत्रु की खोज करने चल दिये।

मगर उन्हें चिड़ियाघर में सन्देह पैदा करनेवाली कोई चीज नज़र न आई।

शेर अपने दुर्गन्धवाले मुंहों को खूब खोल-खोल कर दहाड़ रहे थे। बबर बेचैनी से अपने पिंजरों में इधर-उधर चक्कर काट रहे थे। तोते टीं-टीं और टांय-टांय कर रहे थे। वे पंख फड़फड़ाते हुए इधर-उधर फुदक रहे थे और इस तरह उनका पिंजरा एक शानदार रंग-बिरंगा हिंडोला-सा लग रहा था। बन्दर अपने झूलों पर झूल रहे थे। भालू भारी-भरकम आवाज़ में गुर्र-गुर्र कर रहे थे।

रोशनी और हो-हल्ले से जानवर और भी परेशान हो उठे।

सन्तरियों ने हर पिंजरे को बहुत ध्यान से देखा।

उन्हें कहीं भी कोई गड़बड़ दिखाई न दी।

उन्हें तो वह लालटेन भी नहीं मिली जो सूभोक ने गिरा दी थी।

मगर अचानक घायल नाकवाले सन्तरी ने कहा—

"वह क्या है?" इतना कहकर उसने अपनी मशाल ऊंची की।

सभी की नज़रें ऊपर को उठ गईं। वृक्ष की हरी-भरी चोटी आकाश की छाया में काली-सी लग रही थी। पत्ते गतिहीन थे। बहुत ही शान्त रात थी।

"देख रहे हो न?" सन्तरी ने ऊंची आवाज़ में पूछा। उसने अपनी मशाल हिलाई।

"हां। वहां कुछ गुलाबी-सा है..."

"कुछ छोटा-सा..."

"वहां बैठा हुआ है..."

"अरे उल्लुओ! इतना भी नहीं जानते कि यह क्या है? यह तो तोता है। यह पिंजरे से उड़कर यहां आ बैठा है। ओह, इसे शैतान ले जाये!"

वह सन्तरी जो ड्यूटी पर था और जिसने ख़तरे का संकेत दिया था झेंप-सी अनुभव करता हुआ चुप खड़ा था।

"इसे नीचे उतारना चाहिए। इसी ने सभी जानवरों को परेशान कर डाला है।"

"तुम ठीक कहते हो। बूर्म, चलो, चढ़ो वृक्ष पर। तुम्हीं सबसे छोटे हो।"

बूर्म वृक्ष के क़रीब गया। वह झिझक महसूस कर रहा था।

"ऊपर जाओ और उसे दाढ़ी से पकड़कर नीचे घसीट लाओ।"

तोता बड़े इत्मीनान से बैठा हुआ था। घने हरे पत्तों में उसके पंख मशाल की रोशनी में ख़ूब गुलाबी नज़र आ रहे थे।

वूर्म ने अपना टोप माथे पर झुका लिया और अपनी गुद्दी खुजलाने लगा।

"मुझे डर लगता है... तोते ऐसे ज़ोर से काटते हैं कि नानी याद आ जाती है।"

"उल्लू न हो तो!"

आख़िर वूर्म वृक्ष पर चढ़ चला। मगर आधी ऊंचाई तक जाकर रुका, कुछ क्षण तक ठहरा रहा और फिर नीचे उतर आया।

"मैं किसी भी हालत में यह करने को तैयार नहीं हूं!" उसने कहा। "यह मेरा काम नहीं है। मुझे तोतों से लड़ना नहीं आता।"

इसी समय किसी की बुढ़ाई-सी गुस्से से भरी आवाज़ सुनाई दी। कोई व्यक्ति चप्पल फटफटाता हुआ अंधेरे में से सन्तरियों की ओर भागा आ रहा था।

"इसे मत छेड़ियेगा!" वह चिल्लाया। "इसे परेशान नहीं कीजियेगा!"

यह व्यक्ति था चिड़ियाघर का मुख्य कर्मचारी। वह बड़ा विद्वान और अच्छा प्राणिविज्ञ था, अर्थात् जानवरों के बारे में वह सभी कुछ जानता था जो जानना सम्भव है।

वह शोर सुनकर जाग उठा था।

यह मुख्य कर्मचारी चिड़ियाघर में ही रहता था। वह बिस्तर से उठा और ऐसे हड़बड़ाकर भागा हुआ आया कि रात की टोपी भी उतारना भूल गया, इतना ही नहीं, उसने अपनी नाक पर से चमकता हुआ बड़ा खटमल भी नहीं उतारा।

वह बहुत नाराज़ था। ऐसा स्वाभाविक ही था—कुछ फ़ौजियों ने आकर उसकी दुनिया में दखल देने की जुर्रत की थी और अब कोई बुद्धू उसके तोते को दाढ़ी से पकड़कर नीचे घसीटना चाहता था!

सन्तरियों ने उसे जाने का रास्ता दे दिया।

प्राणिविज्ञ ने अपना सिर पीछे की ओर कर ऊपर देखा। उसे भी पत्तों के बीच कुछ गुलाबी-सा नज़र आया।

"हां," उसने कहा, "यह तोता ही है। यह मेरा सबसे अच्छा तोता है। वह बड़ा मनमौजी है। पिंजरे में टिककर तो बैठता ही नहीं। यह मेरा लौरा है... लौरा! लौरा!" वह उसे बारीक-सी आवाज़ में बुलाने लगा। "इसे यही पसन्द है कि प्यार-दुलार से बुलाया जाये। लौरा! लौरा! लौरा!"

सन्तरियों ने मुंह बन्द कर अपनी हंसी का फ़व्वारा रोका। यह नाटा-सा बूढ़ा फूलदार छापेवाला गाउन और चप्पल पहने था, पीछे की ओर सिर किये था तथा उसकी रात की टोपी का फुंदना ज़मीन चूम रहा था। वह लम्बे-तड़ंगे सन्तरियों, जलती मशालों और चीखते-चिंघाड़ते जानवरों के बीच बड़ा अजीब-सा प्रतीत हो रहा था।

मगर सबसे दिलचस्प बात तो कुछ क्षण बाद हुई। प्राणिविज्ञ वृक्ष पर चढ़ने लगा। बहुत फुर्ती दिखाई उसने इस काम में। ज़ाहिर था कि उसे इसका ख़ासा अभ्यास था। एक, दो, तीन! उसके गाउन के नीचे से उसका धारीदार पाजामा कुछ बार दिखाई दिया और यह प्रतिष्ठित बुर्जुग ऊपर चढ़ता चला गया। आख़िर उसका छोटा-सा, मगर ख़तरनाक रास्ता तय हुआ।

"लौरा!" उसने प्यार से और मुंह में मिसरी घोलते हुए फिर से कहा।

अचानक उसकी चीख़ गूंज उठी। वह चिड़ियाघर से बाहर पार्क और आसपास कम से कम एक किलोमीटर के फ़ासले तक सुनाई दी।

"शैतान!" वह चिल्लाया।

सम्भवतः वृक्ष पर तोता नहीं, कोई राक्षस बैठा था।

सन्तरी एकदम वृक्ष से पीछे हट गये। प्राणिविज्ञ तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़क चला। ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि एक छोटे-से, मगर मज़बूत तने ने उसे नीचे गिरने से बचा लिया। वह वहीं लटककर रह गया।

काश! अन्य वैज्ञानिक अब अपने सम्मानित भाई को इस हाल में देख पाते! निश्चय ही वे उसके बुढ़ापे और उसके ज्ञान का सम्मान करते हुए जान-बूझकर दूसरी ओर मुंह फेर लेते! तने से लटकता हुआ उसका गाउन बहुत ही अटपटा लग रहा था।

सन्तरी सिर पर पैर रखकर भागे जा रहे थे। उनकी मशालों की लपटें हवा में लहरा रही थीं। अन्धेरे में ऐसा प्रतीत होता था मानो दहकते हुए अयालों वाले काले घोड़े भागे जा रहे हों।

चिड़ियाघर में शोर कम हो गया। प्राणिविज्ञ लटका हुआ था, न हिलता था, न डुलता था। मगर उधर महल में शोर मचा हुआ था।

वृक्ष पर रहस्यपूर्ण तोते के नमूदार होने के कोई पन्द्रह मिनट पहले तीन मोटों को बहुत ही बुरी ख़बर मिली थी।

"शहर में भारी गड़बड़ है। मज़दूर बन्दूकें और पिस्तौलें लिए हुए हैं। वे सैनिकों को गोलियों का निशाना बना रहे हैं और सभी मोटों को नदी में फेंक रहे हैं।"

"नट तिबुल आज़ाद है। वह इर्द-गिर्द के लोगों को जमाकर अपनी सेना तैयार कर रहा है।"

"बहुत-से सैनिक मज़दूरों के मुहल्लों में चले गये हैं। वे तीन मोटों की नौकरी नहीं बजाना चाहते।"

"कारख़ानों की चिमनियों से धुआं नहीं निकल रहा। सभी मशीनें ठप पड़ी हैं। खनिक खानों में जाकर धनियों के लिए कोयला निकालने से इन्कार कर रहे हैं।"

"किसान ज़मींदारों से जूझ रहे हैं।"

मन्त्रियों ने तीन मोटों को उक्त समाचार दिये थे।

सदा की भांति इस बार भी तीन मोटे सोच सोचकर मोटे होने लगे। देखते ही देखते उन में से प्रत्येक का आध पाव वज़न बढ़ गया।

"मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता," एक मोटे ने कहा। "मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता... यह मेरी सहनशक्ति से बाहर है... ओह, ओह! मेरा गला घुटा जा रहा है..."

इसी क्षण उसका बर्फ़ जैसा सफ़ेद कालर चटक की आवाज़ करता हुआ खुल गया।

"मैं मोटा होता जा रहा हूं!" दूसरा मोटा चिल्लाने लगा। "मुझे बचाइये!"

तीसरे मोटे ने क्षुब्ध होते हुए अपने पेट पर नज़र डाली।

इस तरह राज्यीय परिषद् के सामने दो सवाल उठ खड़े हुए – पहला तो यह कि किसी भी तरह मोटों की चर्बी को बढ़ने से रोकना और दूसरे – नगर में हो रही हलचल को शान्त करना।

पहले सवाल के बारे में उन्होंने तय किया –

"नाच!"

"नाच! नाच! हां, नाच ही। यह सबसे अच्छा व्यायाम है।"

"घड़ी भर की भी देर न होने दी जाये और फ़ौरन नृत्य-शिक्षक को बुलवाया जाये। वह तीनों मोटों को बैले नाच की शिक्षा दे।"

"हां, यह सही है," पहले मोटे ने कहना शुरू किया, "मगर..."

ठीक इसी समय चिड़ियाघर से प्राणिविज्ञ की चीख़ सुनाई दी जिसे वृक्ष पर अपने प्यारे तोते लौरा की जगह शैतान दिखाई दिया था।

पार्क में इधर-उधर दौड़ते हुए लोग बुरी तरह हांफ रहे थे।

सबसे ख़ूबसूरत काली और नारंगी रंग की तितलियों के तीस जोड़े डरकर पार्क से उड़ गये।

मशालों का सागर-सा लहराने लगा। सारा पार्क धुएं की गन्ध में डूबा और दहकता हुआ ऐसा जंगल बन गया जो अन्धेरे में भागा चला जा रहा हो।

जब चिड़ियाघर के फाटक से कोई दस क़दम का फ़ासला रह गया, तो उस ओर को भागे जाते सभी लोग अचानक ही रुक गये, मानो किसी ने उनके पैर काट डाले हों। वे सभी मुड़े और चीख़ते-चिल्लाते, एक दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते, दायें-बायें मुड़ते, पीछे की ओर भाग चले। वे सभी अपने को बचाने के फेर में पड़े थे। मशालें ज़मीन पर पड़ी थीं, उन से लपटें निकल रही थीं और काले-काले धुएं के बादल छा गये थे।

"ओह!"

"आह!"

"बचाइये!"

लोगों की चीख़-पुकार से पार्क में हंगामा मचा हुआ था। हवा में ऊंची उठती हुई चिंगारियां इधर-उधर भागते और परेशानहाल लोगों पर लाल-लाल रोशनी डाल रही थीं।

चिड़ियाघर की ओर से शान्त, दृढ़ और बड़े-बड़े क़दम बढ़ाता हुआ एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति चला आ रहा था।

इस रोशनी में लाल बालों और चमकती हुई आखों वाला यह व्यक्ति फटी-सी जाकेट पहने भयानक छाया की तरह आ रहा था। वह एक हाथ से चीते के गले में पड़ा हुआ वह पट्टा थामे था जो ज़ंजीर के टुकड़े से बनाया गया था। पीले रंग का यह पतला-सा दरिन्दा भयानक पट्टे से निजात पाने के लिए बेक़रार था। वह उछल-कूद रहा था, गुर्राता था और किसी सूरमा के झंडे पर बबर की भांति अपनी लम्बी लाल ज़बान कभी बाहर निकालता तो कभी अन्दर कर लेता।

भागते हुए लोगों में से कुछ ने पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत की तो उन्होंने देखा कि वह व्यक्ति अपने दूसरे हाथ में एक लड़की को उठाये हुए है जो चमकता हुआ गुलाबी फ़्रॉक पहने है। लड़की सहमी-सहमी सी गुस्से से गुर्राते हुए चीते को देख रही थी, सुनहरे गुलाबों वाले सैंडलों को पैरों से चिपकाये थी और अपने दोस्त के कंधे से सटी जा रही थी।

"प्रोस्पेरो!" भागते हुए लोग चिल्लाये।

"प्रोस्पेरो! यह तो प्रोस्पेरो है!"

"बचाइये!"

"गुड़िया!"

"गुड़िया!"

अब प्रोस्पेरो ने दरिन्दे को छोड़ दिया। चीता पूंछ हिलाता और बड़ी-बड़ी छलांगें मारता भागते हुए लोगों के पीछे दौड़ चला।

सूग्रोक हथियारसाज़ के कंधे से नीचे उतर गई। दौड़ते हुए लोग घास पर बहुत-सी पिस्तौलें गिरा गये थे। सूग्रोक ने तीन पिस्तौलें उठा लीं। उसने दो पिस्तौलें प्रोस्पेरो को दे दीं और एक खुद ले ली। पिस्तौल उसके क़द की आधी लम्बाई के बराबर थी। मगर वह उस काली और चमकती हुई चीज़ का इस्तेमाल करना जानती थी। उसे सरकस में पिस्तौल से निशाना लगाना सिखाया गया था।

"आओ चलें!" हथियारसाज़ ने आदेश दिया।

पार्क के अन्दर क्या हो रहा था, इस बात में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने इस बात की ओर भी ध्यान नहीं दिया कि चीता वहां क्या गुल खिला रहा था।

उन्हें तो महल में से निकलने का मार्ग ढूंढ़ना था। उन्हें तो यहां से बच निकलना था।

वह वांछित देग कहां है जिसकी तिबुल ने चर्चा की थी? वह रहस्यपूर्ण देग कहां है जिसके द्वारा गुब्बारे बेचनेवाला बच निकला था?

"रसोईघर की ओर! रसोईघर की ओर!" रास्ते में अपनी पिस्तौल हिलाते हुए सूग्रोक चिल्लाई।

वे बिल्कुल अंधेरे में झाड़ियों के बीच से भागे जा रहे थे, सोये हुए पक्षियों को जगाते हुए। ओह, सूग्रोक के बढ़िया फ़्रॉक की अब कैसी दुर्गति हो गयी थी!

"किसी मीठी-मीठी चीज़ की गन्ध आ रही है," जगमगाती हुई खिड़कियों के नीचे रुकते हुए सूग्रोक ने कहा।

दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए लोग आम तौर पर उंगली उठाते हैं। मगर सूग्रोक ने इस समय उंगली की जगह पिस्तौल ऊपर उठाई।

सन्तरी इनके पीछे भागे आ रहे थे। मगर ये दोनों वृक्ष की चोटी पर जा चढ़े थे। वे पलक झपकते में खिड़कियों को छूती डालों के सहारे मुख्य खिड़की में जा पहुंचे थे।

यह वही खिड़की थी जिसमें से एक दिन पहले गुब्बारे बेचनेवाला भीतर जा पहुंचा था।

यह मिठाईघर की खिड़की थी।

बेशक रात काफ़ी आ चुकी थी और ख़तरे का संकेत दिया जा चुका था, फिर भी यहां खूब ज़ोर-शोर से काम हो रहा था। सभी हलवाई और सफ़ेद टोप पहने उनके सहायक

चुस्त छोकरे इधर-उधर दौड़-धूप कर रहे थे। वे उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया के लौटने की ख़ुशी में अगले दिन के खाने के लिए फलों की एक विशेष जैली तैयार कर रहे थे। इस बार उन्होंने केक न तैयार करने का फ़ैसला किया था। इस बात का भला कैसे यक़ीन हो सकता था कि फिर कोई उड़ता हुआ मेहमान कहीं आ धमकेगा और फ़ांसीसी क्रीम तथा अद्भुत मुरब्बों का सत्यानाश नहीं कर डालेगा।

मिठाईघर के बीचोंबीच एक बड़े-से टब में पानी उबल रहा था। सभी ओर सफ़ेद भाप का बादल-सा छाया हुआ था। इसी बादल की छाया में रसोइये-छोकरे मौज मना रहे थे—जैली के लिए फल काट रहे थे।

हां तो... पर तभी भाप के बादल और मौज-मेले में से हलवाइयों ने एक भयानक दृश्य देखा।

खिड़की के बाहर शाखायें ज़ोर से हिलीं, पत्ते ऐसे ही सरसराये जैसे कि तूफ़ान आने के पहले और फिर खिड़की के दासे पर दो व्यक्ति नज़र आये—लाल बालों वाला देव और एक बालिका।

"हाथ उठाओ!" प्रोस्पेरो ने कहा। उसके दोनों हाथों में पिस्तौलें थीं।

"ख़बरदार, कोई भी अपनी जगह से न हिले!" अपनी पिस्तौल ऊपर करते हुए सूओक ने ऊंची आवाज़ में कहा।

प्रोस्पेरो और सूओक को अपना आदेश दोहराने की आवश्यकता नहीं हुई। दो दर्जन सफ़ेद आस्तीनें ऊपर को उठ गईं।

इसके बाद पतीले इधर-उधर फेंके जाने लगे।

चमकते हुए शीशे और तांबे, प्यारी-प्यारी और मीठी-मीठी गन्धवाली मिठाईघर की दुनिया का अब अन्त हो गया था।

हथियारसाज़ बड़े देग की तलाश कर रहा था। सिर्फ़ उसी के मिलने पर ख़ुद उसकी और उसकी नन्ही-सी मित्र की जान बच सकती थी जिसने उसे बचाया था।

उन्होंने बर्तनों को उलट-पलट दिया, कड़ाहियों, चोंगियों, तश्तरियों और प्लेटों को इधर-उधर फेंक दिया। शीशे छनछनाते हुए फ़र्श पर गिर रहे थे; आटा सफ़ेद बादल बनकर उड़ रहा था—सहारा रेगिस्तान की रेतीली आंधियों की भांति; सभी ओर बादाम, किशमिश और चेरियों का तूफ़ान बरपा था; ऊंचे ताक़ों से शकर जल-प्रपातों के समान नीचे गिर रही थी; फ़र्श पर फैला हुआ मीठा शर्बत टखनों को छू रहा था; पानी छपछपाता था, फल इधर-उधर उछल रहे थे, तांबे के ढेरों बर्तन इधर-उधर लुढ़क रहे थे... सभी कुछ उथल-पुथल हो गया था। कभी-कभी सपने में ऐसा होता है और चूंकि यह मालूम हो कि यह सपना ही है तो आदमी मनमानी कर सकता है।

"मिल गया!" सूम्रोक चिल्लाई। "यह रहा!"

जिस चीज की उन्हें तलाश थी, वह मिल गई थी। देग का ढक्कन टूटी-फूटी चीज़ों के ढेर में जा मिला था। वह चिपचिपे लाल, हरे और पीले शर्बत में जा गिरा था। प्रोस्पेरो को तलहीन देग दिखाई दिया।

"जल्दी करो!" सूम्रोक चिल्लाई। "तुम चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूं।"

हथियारसाज़ देग में उतर गया। जब वह उसके भीतर जाकर ग़ायब हो गया तो उसे मिठाईघर के लोगों का शोर सुनाई दिया।

सूम्रोक देग में उतर न पायी। चीता पार्क और महल में आतंक फैलाने के बाद यहां आ पहुंचा था। सन्तरियों की गोलियों ने उसे जहां-जहां से घायल कर दिया था, वहां-वहां उसके तन पर ख़ून के लाल धब्बे लगे हुए थे।

हलवाई एक कोने में सिमट गये। सूम्रोक को अपनी पिस्तौल का ध्यान न रहा और उसने चीते पर एक नाशपाती फेंकी।

चीता सिर के बल प्रोस्पेरो के पीछे देग में कूदा। वह अंधेरी और तंग सुरंग में उसके पीछे-पीछे लुढ़कता गया। उसकी पीली पूंछ देग से बाहर हिलती-डुलती नज़र आ रही थी। फिर वह भी ग़ायब हो गई।

सूम्रोक ने हाथों से आंखें ढांप लीं।

"प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो!" वह चीख़ उठी।

हलवाइयों के पेट में हंसी के मारे बल पड़े जा रहे थे। इसी समय सन्तरी मिठाईघर में आ पहुंचे। उनकी वर्दियां तार-तार थीं, उनके चेहरों पर ख़ून नज़र आ रहा था और उनकी पिस्तौलों से धुम्रां निकल रहा था – वे चीते से जूझते रहे थे।

"प्रोस्पेरो तो अब जिन्दा नहीं बचेगा! चीता उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा! अब मेरे लिए सब बराबर है। तुम लोग मुझे गिरफ़्तार कर सकते हो।"

सूम्रोक ने बड़े इत्मीनान से अपनी बात कही। बड़ी-सी पिस्तौल थामे उसका छोटा-सा हाथ उसकी बग़ल में लटक रहा था।

तभी गोली दगी। प्रोस्पेरो ने सुरंग में चीते पर गोली चलाई थी।

सन्तरी देग के इर्दगिर्द जमा थे। शरबत की झील उनके घुटनों को छू रही थी।

एक सन्तरी ने देग में झांका। फिर उसने हाथ अन्दर डालकर कुछ बाहर खींचने की कोशिश की। दो और सन्तरियों ने मदद की। उन्होंने ज़ोर लगाया और मरे हुए चीते को, जो चोंगे में फंसा हुआ था, पूंछ से पकड़कर बाहर खींचा।

"वह मर चुका है," एक सन्तरी ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा।

"वह जिन्दा है! वह जिन्दा है! मैंने उसे बचा दिया! मैंने जनता के मित्र की जान बचा दी है!"

ऐसे खुश हो रही थी सूम्रोक, बेचारी छोटी सूम्रोक, जिसका फ़ॉक फटा हुम्रा था म्रौर जिसके सैंडलों म्रौर बालों में लगे हुए सुनहरे गुलाबों का बुरा हाल हो गया था।

ख़ुशी के मारे उसके चेहरे पर सुर्ख़ी म्रा गई थी।

उसने म्रपने मित्र नट तिबुल द्वारा सौंपा गया कार्यभार पूरा कर दिया था – उसने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को म्राज़ाद करा दिया था।

"हां, तो म्रब हम भी देखेंगे," सूम्रोक को हाथ से पकड़ते हुए एक सन्तरी ने कहा, "म्रब हम भी देखेंगे कि तुम्हारा क्या होता है, मशहूर गुड़िया! देखेंगे..."

"इसे तीन मोटों के पास ले चलो..."

"वे तुम्हें मौत की सज़ा दे देंगे।"

"उल्लू," म्रपने फ़ॉक की गुलाबी लैस से शरबत का धब्बा चाटते हुए सूम्रोक ने इत्मीनान से कहा। यह धब्बा उसके फ़ॉक पर तब लगा था जब प्रोस्पेरो ने मिठाईघर में तोड़-फोड़ की थी।

बारहवां म्रध्याय

नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन

सूम्रोक म्रब गुड़िया नहीं रही थी। उसका क्या हुम्रा, फ़िलहाल हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते। इसके म्रलावा हम म्रभी यह भी स्पष्ट नहीं करेंगे कि वृक्ष पर किस क़िस्म का तोता बैठा था; बूढ़ा प्राणिविज्ञ जो शायद म्रभी तक रस्सी पर सूखने के लिए डाली गई क़मीज़ की भांति लटका हुम्रा था, इतना म्रधिक क्यों डर गया था; हथियारसाज़ प्रोस्पेरो कैसे पिंजरे से निकल भागा, चीता कहां से म्राया म्रौर सूम्रोक हथियारसाज़ के कंधे से कैसे जा लटी; वह भयानक जन्तु क्या था जिसने इन्सानी म्रावाज़ में सूम्रोक से बातचीत की, उसके द्वारा सूम्रोक को दिया गया लकड़ी का टुकड़ा कैसा था, म्रौर वह जन्तु मर क्यों गया था...

समय म्राने पर इनमें से प्रत्येक गुत्थी सुलझ जायेगी। मैं म्रापको विश्वास दिलाता हूं कि कहीं कोई करिश्मा नहीं हुम्रा म्रौर हर चीज़ का ठोस कारण था।

इस समय सुबह का वक़्त है। म्राज तो प्रकृति बहुत ही निखर उठी है। प्रकृति के इस जोबन का एक कुमारी बुढ़िया पर, जिसकी सूरत बकरी से मिलती-जुलती थी, ऐसा म्रसर पड़ा कि उसके सिर में बचपन से रहनेवाला दर्द ग़ायब हो गया। इस सुबह को ऐसी ग़ज़ब की हवा थी। वृक्ष सरसरा नहीं रहे थे, बच्चों की सी ख़ुशीभरी म्रावाज़ में गा रहे थे।

ऐसी सुबह को हर कोई नाचना चाहता है। इसलिए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन का हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था।

जाहिर है कि भूखेपेट तो कोई नहीं नाचता। यदि मन भारी हो, तब भी कोई नहीं नाचना चाहता। मगर भूखे और दुखी केवल वही थे जो आज मजदूरों के मुहल्लों में तीन मोटों के महल पर फिर से धावा बोलने के लिए जमा हो रहे थे। मगर बांके-छैले, धनी महिलायें और पेटुओं तथा धनियों के बेटे-बेटियां खूब मजे में थे। उन्हें इस बात की ख़बर नहीं थी कि नट तिबुल ग़रीबों और भूखे कारीगरों की फ़ौज तैयार कर रहा है। उन्हें नहीं मालूम था कि छोटी-सी नर्तकी सूओक ने हथियारसाज प्रोस्पेरो को आज़ाद करा दिया है जिसकी जनता को बेहद जरूरत थी। नगर में हो रही हलचल को वे बहुत महत्त्व नहीं देते थे।

"यह सब बकवास है!" एक प्यारी-सी, मगर तीखी नाकवाली नवाबजादी ने नाच के सैंडल तैयार करते हुए कहा। "अगर वे फिर से महल पर हल्ला बोलेंगे तो सैनिक उन्हें पिछली बार की तरह पीसकर रख देंगे।"

"यक़ीनन!" एक जवान बांके-छैले ने सेब खाते और अपने फ़ॉक कोट की जांच करते हुए खिलखिलाकर कहा। "इन खनिकों और गन्दे-मन्दे कारीगरों के पास न तो बन्दूकें हैं, न पिस्तौलें और न ही तलवारें। दूसरी तरफ़ सैनिकों के पास तो तोपें भी हैं।"

खाते-पीते और निश्चिन्त लोगों के जोड़े एक-दो-तीन के घर चले आ रहे थे। उसके घर के दरवाज़े पर यह साइन-बोर्ड लगा हुआ था –

नृत्य-शिक्षक, श्रीमान एक-दो-तीन

केवल नृत्य ही नहीं, बल्कि नज़ाकत,
नफ़ासत, फुर्तीलापन, शिष्टाचार और
जीवन के प्रति काव्यमय दृष्टिकोण
की भी शिक्षा देता है।
दस नृत्यों की फ़ीस

पेशगी ली जाती है

गोल हॉल के शहदरंगे लकड़ी के सुन्दर फ़र्श पर एक-दो-तीन अपनी कला सिखा रहा था। वह काली बांसुरी बजा रहा था। इसे तो करिश्मा ही कहना चाहिए कि वह उसके होंठों से लगी रहती थी। कारण कि वह लैस के कफ़ों और सफ़ेद नर्म दस्तानों वाले अपने हाथों को लगातार हिलाता जा रहा था। वह बार-बार झुकता, मुद्रायें बनाता, आंखें घुमाता

भ्रौर ताल के साथ जूते की एड़ी बजाता भ्रौर रह-रहकर दर्पण की भ्रोर भागा जाता। वह दर्पण में भ्रपना रूप निहारता, इस बात की जांच करता कि उसके तन पर जहां-तहां बंधे रिबनों की गांठें तो ठीक-ठाक हैं, उसके फुलेल लगे बाल तो चमक रहे हैं...

जोड़े नाच रहे थे। उनकी संख्या बहुत भ्रधिक थी भ्रौर वे पसीने से तर-ब-तर थे। ऐसा लगता था मानो कोई बहुत ही बढ़िया रंगतवाला, मगर बदज़ायका शोरबा तैयार हो रहा हो।

इस भारी भीड़ में चक्कर लगाता हुम्रा कोई बांका-छैला या कोई सुन्दरी कभी तो बड़े-बड़े पत्तों वाले शलजम जैसी दिखाई देती, कभी पत्तागोभी के पत्ते जैसी या फिर ऐसी ही कोई समझ में न म्रानेवाली, रंगीन भ्रौर भ्रजीब-सी चीज़ लगती, जो शोरबे से भरी तश्तरी में नज़र भ्रा सकती हो।

एक-दो-तीन इस शोरबे में कलछुल जैसा लग रहा था। ऐसा तो इसलिए भ्रौर भी भ्रधिक सही था कि वह लम्बा, दुबला-पतला भ्रौर लचीला था।

म्राह, भ्रगर सुम्रोक इन नृत्यों को देखती तो उसे बरबस हंसी भ्रा जाती। उसने जब मूक नाटक 'बुद्धू बादशाह' में पत्तागोभी की सुनहरी गांठ की भूमिका भ्रदा की थी, वह तब भी कहीं बढ़िया नाची थी। फिर उसे तो नाचना भी पत्तागोभी की गांठ की तरह था।

नाच की यह महफ़िल जब भ्रपने रंग पर भ्राई हुई थी तो चमड़े के खुरदरे दस्तानों से ढकी तीन बड़ी-बड़ी मुट्ठियों ने नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन का दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया।

ये मुट्ठियां देखने में मिट्टी के जगों जैसी प्रतीत होती थीं।

"शोरबे" का नाच बन्द हो गया।

पांच मिनट बाद नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन को तीन मोटों के महल में ले जाया गया।

तीन सैनिक उसे लेने भ्राये थे। उनमें से एक ने उसे भ्रपने घोड़े पर बिठा लिया—पूंछ की भ्रोर उसका मुंह करके, यानी एक-दो-तीन उल्टी दिशा में सवारी कर रहा था। दूसरे सैनिक ने उसका गत्ते का बड़ा-सा बक्सा उठा लिया। उसमें बहुत-सी चीज़ें समा सकती थीं।

"भ्राप समझते ही हैं कि मेरे लिए कुछ सूट, वाद्ययन्त्र भ्रौर विग, स्वर-लिपियां तथा मनपसन्द गीत भ्रपने साथ ले जाना बिल्कुल ज़रूरी है," एक-दो-तीन ने जाने की तैयारी करते हुए कहा। "कौन जाने, मुझे कितने दिनों तक महल में रहना पड़े। मैं तो नफ़ासत भ्रौर ख़ूबसूरती का दीवाना हूं भ्रौर इसीलिए भ्रक्सर कपड़े बदलता रहता हूं।"

नाचनेवाले जोड़े घोड़ों के पीछे-पीछे दौड़े, उन्होंने रूमाल हिलाये भ्रौर एक-दो-तीन के सम्मान में नारे लगाये।

सूरज भ्राकाश में ऊंचा उठ चुका था।

एक-दो-तीन इस बात से ख़ुश था कि उसे महल में बुलाया गया था। उसे तीन मोटे इसलिए पसन्द थे कि सभी भ्रन्य मोटों भ्रौर धनियों के बेटे-बेटियों को वे भ्रच्छे लगते थे।

धनी आदमी जितना अधिक धनी होता था, एक-दो-तीन को वह उतना ही अधिक अच्छा लगता था।

"बात दर असल है भी ऐसी ही," वह सोचता, "ग़रीबों से मुझे भला लाभ ही क्या है? वे नाचना-वाचना तो सीखते नहीं। वे तो हमेशा काम-काज में जुटे रहते हैं और उनके पास पैसे भी कभी नहीं होते। जहां तक धनी व्यापारियों, धनी बांके-छैलों और महिलाओं का सम्बन्ध है, उनके पास हमेशा ढेरों पैसा होता है और करने-धरने को कुछ भी नहीं।"

ज़ाहिर है कि एक-दो-तीन अपनी अक़्ल के मुताबिक़ बहुत समझदार था, मगर हमारी दृष्टि में बुद्धू।

"बड़ी बेवकूफ़ है वह सूम्रोक!" नन्ही नर्तकी का स्मरण करते हुए वह हैरान होता। "वह ग़रीबों, फ़ौजियों, कारीगरों और फटेहाल बालकों के लिए क्यों नाचा करती है? वे तो उसे बस चन्द कौड़ियां ही देते होंगे।"

स्पष्ट है कि अगर इस बुढ़ू एक-दो-तीन को यह मालूम होता कि उस नन्ही-सी नर्तकी ने ग़रीबों, कारीगरों और फटेहाल बालकों के नेता – हथियारसाज़ प्रोस्पेरो – को बचाने के लिए अपनी जान की भी बाज़ी लगा दी, तो उसे और भी अधिक हैरानी होती।

घोड़े सरपट दौड़े जा रहे थे।

रास्ते में बहुत-सी अजीब घटनाएं घटीं। दूरी पर लगातार गोलियां दग रही थीं। घरों के दरवाज़ों पर उत्तेजित लोगों की भीड़ जमा थी। कभी-कभार हाथों में पिस्तौलें लिये हुए दो तीन कारीगर भागते हुए सड़क पार करते... ऐसा प्रतीत हो सकता है कि दूकानदारों के लिए आज हाथ रंगने का सबसे बढ़िया दिन था। मगर उन्होंने तो खिड़कियां बन्द कर ली थीं और झरोखों के साथ अपने चर्बीचढ़े चमकते हुए गाल सटाकर बाहर देख रहे थे। भिन्न-भिन्न लोगों की ज़बानी एक के बाद एक मुहल्ले में यह ख़बर पहुंचती जा रही थी –

"प्रोस्पेरो!"

"प्रोस्पेरो!"

"वह हमारे साथ है!"

"हमा-रे सा-थ है!"

रह-रहकर क़ाबू से बाहर होते और झाग उगलते घोड़े पर सवार कोई स...नक तेज़ी से गुज़रता। जब-तब कोई मोटा हांफता हुआ किसी सड़क पर से भागता हुआ जाता। उसके दायें-बायें लाल बालों वाले नौकर होते जो अपने मालिक की रक्षा करने के लिए हाथों में लाठियां लिये रहते।

एक जगह नौकरों ने अपने मालिक की रक्षा करने के बजाय अप्रत्याशित ही उसकी पिटाई कर डाली। इससे सारे मुहल्ले में ख़ूब शोर मचा।

एक-दो-तीन ने शुरू में तो यही समझा कि वे लोग सोफ़े को झाड़कर उसकी धूल-मिट्टी निकाल रहे हैं।

नौकरों ने अपने मोटे स्वामी को कोई तीन दर्जन सोटियां लगाईं। फिर बारी-बारी से उसपर थूका, एक दूसरे के गले में बांहें डालीं और सोटियां हिलाते तथा यह चिल्लाते हुए कहीं भाग चले –

"तीन मोटे मुर्दाबाद! हम धनियों की नौकरी नहीं बजाना चाहते! जय जनता!"

इसी बीच लोग लगातार चिल्लाते रहे –

"प्रोस्पेरो!"

"भ्रो-स्से-रो!"

थोड़े में यह कि बहुत ही भयावह वातावरण था। हवा में बारूद की गन्ध फैली हुई थी।

आखिर अन्तिम घटना घटी।

दस सैनिकों ने अपने उन तीन साथियों का रास्ता रोक लिया जो एक-दो-तीन को लिये जा रहे थे। ये पैदल सैनिक थे।

"रुक जाओ!" उन दस में से एक ने कहा। उसकी नीली आंखें गुस्से से जल रही थीं। "कौन हो तुम लोग?"

"अंधे हो क्या?!" उस सैनिक ने भी ऐसे ही गुस्से से पूछा जिसके पीछे एक-दो-तीन बैठा था।

सैनिकों के घोड़े जो पूरी ताक़त से दौड़े जा रहे थे, अब क़ाबू से बाहर हो रहे थे। उनके साज़ हिल रहे थे। नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन की टांगें भी डर से हिल रही थीं। यह कहना मुश्किल है कि साज़ ज़्यादा ज़ोर से हिल रहे थे या नृत्य-शिक्षक की टांगें।

"हम तीन मोटों के महल के सैनिक हैं।"

"हम महल में पहुंचने की जल्दी में हैं। फ़ौरन हमारा रास्ता छोड़ दीजिये!"

तब नीली आंखों वाले सैनिक ने अपनी पिस्तौल निकाल ली और कहा—

"अगर यही बात है तो अपनी पिस्तौलें और तलवारें हमारे हवाले कर दो। सैनिकों के शस्त्रों को केवल जनता की सेवा करनी चाहिए, तीन मोटों की नहीं!"

इन दस के दस सैनिकों ने अपनी पिस्तौलें निकाल लीं और घुड़सवारों को घेर लिया।

घुड़सवारों ने भी अपने शस्त्र सम्भाल लिये। एक-दो-तीन बेहोश होकर घोड़े से नीचे जा गिरा। कब उसे होश आया, यह ठीक-ठीक कहना मुमकिन नहीं। मगर इतना निश्चित है कि ऐसा तभी हुआ जब उसे लेकर जानेवाले और उन्हें रोकनेवाले सैनिकों के बीच लड़ाई ख़त्म हो गई। शायद रोकनेवालों की ही विजय हुई थी। एक-दो-तीन ने अपने निकट उसी सैनिक को पड़े पाया, जिसके पीछे वह बैठा था। यह सैनिक मरा हुआ था।

"ख़ून," एक-दो-तीन आंखें मूंदते हुए बुदबुदाया।

घड़ी भर बाद उसने जो कुछ देखा, उससे तो उसके दिल को बहुत ही ज़ोर का धक्का लगा।

उसका गत्ते का बक्सा टूटा पड़ा था। उसका सारा माल-मता बाहर निकला हुआ था। उसके बढ़िया सूट, गीत और विग सड़क की धूल चाट रहे थे...

"आह!"

लड़ाई की गर्मागर्मी में उस सैनिक ने वह बक्सा नीचे फेंक दिया था। वह पत्थरों पर गिरकर टूट गया था।

"आह! आह!"

एक-दो-तीन अपने माल-मते की ओर लपका। उसने पागलों की तरह अपनी वास्कटें, फ़्रॉक कोट, जुराबें और सस्ते, मगर पहली नजर में सुन्दर दिखाई देनेवाले बक्सुओं से सजे हुए जूते समेटे और फिर से जमीन पर बैठ गया। उसके दुख की तो कोई सीमा ही नहीं थी। सभी चीज़ें, उसकी सभी पोशाकें ज्यों की त्यों मिल गई थीं, मगर मुख्य चीज ग़ायब थी। इसी बीच जबकि एक-दो-तीन अपनी पाव-रोटी जैसी मुट्ठियां नीले आकाश की ओर उठाये बैठा था, तीन घुड़सवार बहुत ही तेज़ी से घोड़े दौड़ाते हुए तीन मोटों के महल की ओर बढ़े जा रहे थे।

इनके घोड़े लड़ाई होने के पहले उन घुड़सवारों के क़ब्ज़े में थे जो नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन को अपने साथ ले जा रहे थे। लड़ाई के बाद उन तीन सैनिकों में से एक मारा गया था और बाक़ी दो ने आत्मसमर्पण कर दिया था। वे भी जनता के पक्ष में हो गये थे। उसी समय विजेताओं को एक-दो-तीन के टूटे हुए बक्से में मलमल के टुकड़े में लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज मिली। तब उन दस में से तीन फ़ौरन छीने हुए घोड़ों पर उछलकर सवार हो गये और उनके घोड़े हवा से बातें करने लगे।

सबसे आगे-आगे था नीली आंखों वाला सैनिक। वह मलमल के टुकड़े में लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज अपनी छाती के साथ चिपकाये था।

रास्ते के लोग एक ओर को हट जाते थे। सैनिक के टोप पर लाल फ़ीता बंधा हुआ था। इसका अर्थ था कि वह जनता की ओर हो गया है। इसीलिए रास्ते में मिलनेवाले लोग (अगर वे मोटे या पेटू नहीं थे) उसके पास से गुज़रने पर तालियां बजाते। मगर ग़ौर से सैनिक की ओर देखने पर वे हक्के-बक्के रह जाते। कारण कि सैनिक जो बंडल अपनी छाती से चिपकाये था, उसमें से एक बालिका की टांगें लटक रही थीं। बालिका अपने पैरों में सुनहरे गुलाबों के बक्सुओं वाले गुलाबी सैंडल पहने थी...

तेरहवां अध्याय

विजय हुई

अभी अभी हमने उन असाधारण बातों की चर्चा की है जो उस सुबह हुई थीं। अब हम ज़रा पीछे लौटकर उस रात का उल्लेख करेंगे जो इस सुबह के पहले बीती। जैसा कि आप जानते ही हैं उस रात को भी कुछ कम अनहोनी बातें नहीं हुई थीं।

इसी रात को हथियारसाज़ प्रोस्पेरो तीन मोटों के महल से भागा था और सूम्रोक उनके हाथों गिरफ़्तार कर ली गई थी।

इसके अलावा इसी रात को तीन आदमी ढकी हुई लालटेनें लिए हुए उत्तराधिकारी टूट्टी के सोने के कमरे में आये थे।

यह घटना उस समय से लगभग एक घण्टे बाद घटी जब हथियारसाज़ प्रोस्पेरो ने महल के मिठाईघर में तूफ़ान मचाया और सैनिकों ने सूम्रोक को सुरंग के नज़दीक गिरफ़्तार किया।

उत्तराधिकारी के सोने के कमरे में अन्धेरा था।

बड़ी-बड़ी खिड़कियों में से सितारे झांक रहे थे।

लड़का गहरी नींद सो रहा था, धीरे-धीरे और चैन की सांस लेता हुआ।

कमरे में आनेवाले तीनों व्यक्ति अपनी लालटेनों की रोशनी छिपाने की भरसक कोशिश कर रहे थे।

उन्होंने क्या किया, यह हम नहीं जानते। सिर्फ़ उनकी कानाफूसी सुनाई देती रही। सोने के कमरे के दरवाज़े पर पहरा देनेवाला सन्तरी ऐसे खड़ा रहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

सम्भवतः उत्तराधिकारी के शयन-कक्ष में आनेवाले इन तीनों व्यक्तियों को यहां आने का कुछ विशेष अधिकार प्राप्त था।

यह तो आप जानते ही हैं कि उत्तराधिकारी टूट्टी के शिक्षक दिलेर लोग नहीं थे। गुड़ियावाली घटना तो आप भूले नहीं होंगे। बाग़ में जब वह भयंकर काण्ड हुआ था, जब सैनिकों ने गुड़िया के तन में तलवारें घुसेड़ी थीं, तो शिक्षक का कैसे दम निकल गया था। आपको याद होगा कि तीन मोटों के सामने इस काण्ड की चर्चा करते हुए शिक्षक की कैसे घिग्घी बंध गई थी।

इस बार जो शिक्षक ड्यूटी पर था, वह भी ऐसा ही बुज़दिल साबित हुआ।

जब ये तीनों अपरिचित लोग लालटेनें लिये हुए शयन-कक्ष में आये तो शिक्षक कमरे में ही था। उत्तराधिकारी की नींद में कोई ख़लल न पड़े, वह इसी बात की देखभाल करने के लिए खिड़की के पास बैठा था। इसलिए कि कहीं आंख न लग जाये, वह सितारों को देखता हुआ खगोलशास्त्र की अपनी जानकारी को ताज़ा कर रहा था।

मगर इसी समय दरवाज़ा चरमराया, रोशनी हुई और तीन रहस्यपूर्ण आकृतियां कमरे में नज़र आईं। शिक्षक आराम-कुर्सी में दुबक गया। उसे सबसे ज़्यादा फ़िक्र तो इस बात की थी कि कहीं उसकी लम्बी नाक उसका भंडाफोड़ न कर दे। बात दर असल थी भी कुछ ऐसी ही। सितारों से झिलमिलाती खिड़की की पृष्ठभूमि में यह अनूठी नाक एकदम स्याह नज़र आने लगी थी और इसकी ओर फ़ौरन ध्यान जा सकता था।

मगर इस कायर ने यह सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी – "शायद वे इसे आराम-कुर्सी के हत्थे की सजावट या सामनेवाले घर की कार्निस ही समझेंगे।"

लालटेनों की हल्की पीली रोशनी में कुछ-कुछ नजर आती हुई ये आकृतियां उत्तराधिकारी के पलंग के क़रीब आईं।

"ठीक है," कोई फुसफुसाया।

"सो रहा है," दूसरे ने कहा।

"शी!"

"परेशानी की कोई बात नहीं। वह गहरी नींद सो रहा है।"

"तो काम शुरू कीजिये।"

कोई चीज छनकी।

शिक्षक को ठण्डे पसीने आ गये। उसे लगा कि डर के मारे उसकी नाक लम्बी होती जा रही है।

"तैयार है," कोई फुसफुसाया।

"तो शुरू कीजिये।"

फिर से कोई चीज छनछनाई, किसी तरल पदार्थ के बोतल में डालने की आवाज़ हुई। अचानक फिर से ख़ामोशी छा गई।

"कहां डाला जाये इसे?"

"कान में।"

"वह करवट लेकर सो रहा है। यह स्थिति अधिक अनुकूल भी है। डालिये कान में..."

"मगर बहुत सावधानी से। एक-एक बूंद करके।"

"ठीक दस बूंदें। पहली बूंद बहुत ठण्डी लगेगी, मगर दूसरी बूंद डालने पर कोई अनुभूति नहीं होगी, क्योंकि पहली बूंद फ़ौरन असर करती है। उसके बाद तो कुछ महसूस ही नहीं होता।"

"इस तरल पदार्थ को ऐसे डालने की कोशिश कीजिये कि पहली और दूसरी बूंद के बीच वक़्फ़ा न पड़ने पाये।"

"वरना लड़का ऐसा अनुभव करेगा मानो किसी ने बर्फ़ छुआ दी हो और जाग जायेगा।"

"शी! तो डालता हूं... एक, दो!"

और अब शिक्षक ने पोस्त के फूलों की तेज गन्ध अनुभव की। यह गन्ध सारे कमरे में फैल गई थी।

"तीन, चार, पांच, छः..." किसी ने धीमी आवाज में जल्दी जल्दी गिनती की। "डाल दीं दस बूंदें।"

"अब यह तीन दिन तक गहरी नींद सोया रहेगा।"

"और उसे यह मालूम ही नहीं हो सकेगा कि उसकी गुड़िया का क्या हुआ..."

"उसकी तभी आंख खुलेगी जब सब कुछ खत्म हो चुका होगा।"

"वरना वह रोने और पैर पटकने लगता। तब तीन मोटे मजबूर होकर लड़की को माफ़ कर देते और उसकी ज़िन्दगी बख्श देते..."

ये तीनों अजनबी चले गये। तब कांपता हुआ शिक्षक उठा। उसने नारंगी रंग के फूल की तरह जलनेवाला छोटा-सा रात्रि-दीप जलाया और पलंग के क़रीब आया।

उत्तराधिकारी टूटी लैसवाली सुन्दर रेशमी चादर ओढ़े हुए सो रहा था, छोटा-सा मगर रोबीला-सा प्रतीत होता हुआ। अस्तव्यस्त सुनहरे बालों वाला उसका सिर बड़े-बड़े तकियों पर टिका हुआ था।

शिक्षक झुका और उसने लैम्प को लड़के के पीले चेहरे के क़रीब किया। छोटे-से कान में तरल पदार्थ की बूंद ऐसे चमक रही थीं मानो सीप में मोती।

बूंद में से सुनहरी और हरी आभा एकसाथ झलक दिखा रही थी।

शिक्षक ने कनिष्ठा से इस तरल पदार्थ को छुआ। छोटे-से कान से बूंद गायब हो गयी, मगर शिक्षक की सारी बांह बर्फ़ की तरह सर्द हो गई।

लड़का गहरी नींद सो रहा था।

कुछ घण्टों के बाद उस शानदार सुबह का आरम्भ हुआ जिसका हम पीछे वर्णन कर चुके हैं।

यह तो हमें मालूम ही है कि उस सुबह को नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन के साथ क्या बीती थी। मगर हमारे लिए यह जानना कहीं अधिक दिलचस्प है कि इस सुबह को सूओक का क्या हुआ। हमने उसे तो बहुत ही भयानक स्थिति में छोड़ा था!

शुरू में तो यह तय किया गया कि उसे तहख़ाने में डाल दिया जाये।

"पर यह तो बहुत झंझटवाली बात होगी," सरकारी सलाहकार ने कहा। "हम झटपट उस पर न्यायपूर्ण मुक़दमा चलाकर उसे सज़ा दे देंगे।"

"हां, यह ठीक है। लड़की को लेकर ज्यादा झंझट करने की ज़रूरत नहीं है," तीन मोटों ने सहमति प्रकट की।

मगर आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि तीन मोटों को चीते से बचने के लिये भागते समय बहुत परेशानी हुई थी। इसलिए यह ज़रूरी था कि वे कुछ देर आराम कर लें। उन्होंने कहा—

"अब हम थोड़ी देर सोना चाहते हैं। सुबह मुक़दमे की कार्रवाई होगी।"

इतना कहकर वे अपने अपने सोने के कमरे में चले गये।

सरकारी सलाहकार को इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं था कि अदालत गुड़िया, यानी बालिका को मौत की सज़ा देगी। इसलिए उसने उत्तराधिकारी टूट्टी को गहरी नींद सुला देने का आदेश दिया ताकि वह अपने आंसुओं से कठोर दण्ड को हल्का न करवा दे।

जैसा कि आप जानते ही हैं लालटेनवाले तीन व्यक्तियों ने यह काम पूरा कर दिया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी गहरी नींद सो रहा था।

सूओक सन्तरियों के कमरे में बैठी थी। उसके सभी ओर सन्तरी थे। अगर कोई अजनबी यहां आ जाता तो देर तक यही सोचकर आश्चर्यचकित होता रहता—यह प्यारी-सी, उदास-से चेहरे और सुन्दर गुलाबी फ़ॉकवाली लड़की सन्तरियों के बीच क्या कर रही है? यह ज़ीनों, बन्दूकों और बीयर के गिलासों के अटपटे वातावरण में बड़ी अजीब-सी लग रही थी।

सन्तरी ताश खेल रहे थे, उनकी पाइपों से नीला-नीला कड़ुआ धुआं निकल रहा था। वे एक दूसरे पर चीखते-चिल्लाते और हाथापाई भी करते। ये सन्तरी अभी तक तीन मोटों के प्रति वफ़ादार थे। वे सूओक को अपने बड़े-बड़े घूंसे दिखाते, पैर पटकते और तरह-तरह की सूरतें बनाते।

सूओक ने उनकी इन हरकतों की ओर ध्यान न दिया। उनसे पिंड छुड़ाने और उन्हें मजा चखाने के लिए वह अपनी जबान बाहर निकाल और उन सभी की ओर मुंह करके बैठ गई। वह घण्टा भर ऐसे ही बैठी रही।

कठौते पर बैठे रहना उसे काफ़ी आरामदेह प्रतीत हुआ। यह सही है कि इस तरह बैठने से उसके फ़ॉक में सिलवटें पड़ रही थीं। मगर वह तो वैसे भी अपनी पहलेवाली ख़ूबसूरती खो बैठा था। शाखाओं में उलझकर वह जहां-तहां से फट गया था, मशालों ने उसे कई जगह से जला दिया था, सैनिकों ने उसमें ढेरों सिलवटें डाल दी थीं और उस पर शरबत के धब्बे लग गये थे।

सूओक को अपनी कुछ चिन्ता नहीं थी। उसकी उम्र की लड़कियां असली ख़तरे से नहीं डरतीं। अपने सामने पिस्तौल तनी देखकर उन्हें भय अनुभव नहीं होता, मगर अंधेरे कमरे में अकेले रहते हुए उनकी जान निकलती है।

सूओक सोच रही थी – "हथियारसाज प्रोस्पेरो आज़ाद हो गया। अब वह और तिबुल ग़रीबों को साथ लेकर महल पर धावा बोलेंगे। वे मुझे आज़ाद करा लेंगे।"

इसी समय जब सूओक इस तरह की बातें सोच रही थी, तीन सैनिक सरपट घोड़े दौड़ाते हुए महल की ओर बढ़े जा रहे थे। हम पिछले अध्याय में उनकी चर्चा कर चुके हैं। जैसा कि आपको मालूम है उनमें से एक, यानी नीली आंखों वाला सैनिक एक रहस्यपूर्ण बंडल उठाये हुए था। इसमें से सुनहरे गुलाबों वाले गुलाबी सैंडल पहने दो पैर बाहर लटक रहे थे।

ये तीनों घुड़सवार जब उस पुल के निकट पहुंचे जहां तीन मोटों के प्रति वफ़ादार सन्तरी खड़े थे, तो उन्होंने अपने टोपों से लाल रिबन उतार लिये।

ऐसा इसलिए करना जरूरी था कि सन्तरी उन्हें रोकें-टोकें नहीं।

अगर सन्तरियों को लाल रिबन दिखाई दे जाते, तो वे उन पर गोलियां चलाने लगते। लाल रिबन तो इस बात की निशानी थे कि इन्हें लगानेवाले सैनिक जनता की ओर हो गये हैं।

वे बहुत ही तेज़ी से सन्तरियों के पास से गुज़र गये। सन्तरियों का सरदार तो गिरते-गिरते बचा।

"जरूर कोई बहुत ही ज़रूरी सन्देश लेकर जा रहे होंगे," नीचे गिरा हुआ अपना टोप उठाते और वर्दी से मिट्टी झाड़ते हुए सरदार ने कहा।

इसी समय सूम्रोक की ग्राख़िरी घड़ी निकट ग्रा गई। सरकारी सलाहकार सन्तरियों के कमरे में ग्राया।

सन्तरी उछलकर ग्रटेंशन खड़े हो गये।

"लड़की कहां है?" ग्रपनी ऐनक ऊपर करते हुए सलाहकार ने पूछा।

"इधर ग्राग्रो!" मुख्य सन्तरी ने सूम्रोक को ग्रावाज़ दी।

सूम्रोक कठौते से नीचे उतरी।

सन्तरी ने बड़े भद्दे ढंग से सूम्रोक की पेटी पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया।

"तीन मोटे ग्रदालत-भवन में इसका इन्तज़ार कर रहे हैं," ऐनक नीचे करते हुए सलाहकार ने कहा। "लड़की को मेरे पीछे-पीछे लाग्रो।"

इतना कहकर सरकारी सलाहकार सन्तरियों के कमरे से बाहर चला गया। सूम्रोक को एक हाथ पर उठाये हुए सन्तरी सरकारी सलाहकार के पीछे-पीछे चल दिया।

ग्रोह, सुनहरे गुलाब! ग्रोह, गुलाबी रेशम! निर्दयी हाथ की बदौलत इन सबका बुरा हाल हुग्रा जा रहा था।

सूम्रोक पेटी के सहारे सन्तरी के हाथ में लटकी हुई थी। उसे दर्द महसूस हो रहा था, बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। उसने सन्तरी की कोहनी के ऊपर चुटकी काट ली। उसने चुटकी इतने ज़ोर से काटी कि सैनिक की वर्दी की मोटी ग्रास्तीन के बावजूद वह दर्द से तड़प उठा।

"सत्यानाश हो!" उसने गाली दी ग्रौर सूम्रोक उसके हाथ से नीचे जा गिरी।

"क्या कहा?" सलाहकार घूमा।

इसी समय सलाहकार के कान पर ग्रप्रत्याशित ही ऐसी ज़ोर की धौल पड़ी कि वह ज़मीन चाटने लगा।

उसके फ़ौरन बाद वह सन्तरी भी ज़मीन पर पड़ा दिखाई दिया जो कुछ ही क्षण पहले सूम्रोक को पेटी से पकड़कर लटकाये लिये जा रहा था।

सन्तरी के कान पर भी धौल जमायी गयी थी। सो भी कैसी! ज़रा कल्पना कीजिये कि कैसी ज़ोर की होगी वह धौल जिसने ऐसे हट्टे-कट्टे तथा क्रोधी सन्तरी को ज़मीन पर गिरा दिया था!

इससे पहले कि सूम्रोक मुड़कर कुछ देख पाती, किसी के हाथों ने उसे फिर से झपट लिया ग्रौर उठा ले चले।

हाथ तो ये भी कठोर ग्रौर मज़बूत थे, मगर दयालु प्रतीत हुए। उस सन्तरी के हाथों की तुलना में जो ग्रब चमकते हुए फ़र्श पर पड़ा था, सूम्रोक को इन हाथों में ग्रधिक ग्राराम ग्रनुभव हुग्रा।

"डरो नहीं!" किसी ने फुसफुसाकर कहा।

मोटे बहुत बेचैनी से अदालत-भवन में इन्तजार कर रहे थे। वे चालाक गुड़िया के मुक़दमे की कार्रवाई का ख़ुद संचालन करना चाहते थे। उनके इर्दगिर्द कर्मचारी, सलाहकार, न्यायाधीश और मुंशी बैठे थे। सूरज की किरणों में रंग-बिरंगे — गुलाबी, जामुनी, भड़कीले हरे, लाल, सफ़ेद और सुनहरे — विग चमक रहे थे। मगर दिल ख़ुश करनेवाली सूरज की किरणें भी इन विगों के नीचे उनके गुस्से से फूले हुए तोबड़ों पर रौनक नहीं ला सकी थी।

तीन मोटों का पहले की भांति अब भी गर्मी के मारे बुरा हाल था। उनके माथे से मटर के दानों की भांति पसीने की बूंदें टपटप नीचे गिरती थीं। इससे उनके सामने पड़े हुए काग़ज़ ख़राब हो जाते थे। मुंशी लगातार इन काग़ज़ों को बदलते जाते थे।

"हमारा सलाहकार बहुत इन्तज़ार करवाता है," पहले मोटे ने फांसी पर लटके हुए व्यक्ति की भांति उंगलियां हिलाते हुए कहा।

आख़िर प्रतीक्षा का अन्त हुआ।

तीन सैनिक भवन में आये। उन में से एक लड़की को हाथों में उठाये था। ओह, कैसा दर्दनाक था लड़की का चेहरा!

उस गुलाबी फ़्रॉक की, जो केवल एक दिन पहले अपनी चमक-दमक और बढ़िया कलात्मक सजावट से आश्चर्यचकित करता था, अब बहुत बुरी हालत हो गई थी। सुनहरे गुलाब मुरझा गये थे, चमकता हुआ सलमा और सितारे गिर चुके थे और रेशमी कपड़े में सिलवटें पड़ गई थीं। लड़की का सिर सैनिक के कंधे पर निर्जीव-सा लटका हुआ था। लड़की का चेहरा एकदम ज़र्द था और उसकी शरारती भूरी आंखों में से चमक ग़ायब हो चुकी थी।

रंग-बिरंगे विगों वाली महफ़िल में बैठे लोगों ने नज़रें ऊपर उठाईं।

तीन मोटों ने हाथ मले।

मुंशियों ने अपने लम्बे-लम्बे कानों से लम्बी-लम्बी क़लमें निकालीं।

"हूं," पहले मोटे ने कहा। "सरकारी सलाहकार कहां है?"

वह सैनिक जो लड़की को उठाये हुए था, आगे आया और बोला —

"श्रीमान सरकारी सलाहकार जब इधर आ रहे थे तो रास्ते में उनके पेट में ज़ोर का दर्द हो गया।"

सैनिक ने जब ऐसा कहा था, तो उसकी नीली आंखें चमक रही थीं।

इस उत्तर से सभी सन्तुष्ट हो गये।

मुक़दमे की कार्रवाई शुरू हुई।

सैनिक ने बेचारी लड़की को न्यायाधीशों की मेज़ के सामने खुरदरी-सी बेंच पर बिठा दिया। वह सिर लटकाये बैठी थी। पहले मोटे ने पूछ-ताछ शुरू की।

मगर अब उन्हें बहुत बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा — सुओक एक भी सवाल का जवाब नहीं देना चाहती थी।

"तो ऐसा ही सही!" एक मोटा चीख उठा। "तो ऐसा ही सही! जवाब नहीं देना चाहती, तो न दे। इसी को इससे हानि होगी... हम इसे उतनी ही कड़ी सजा देंगे!"

सूम्रोक तो हिली-डुली भी नहीं।

तीनों सैनिक उसके आस-पास बुत बने खड़े थे।

"गवाहों को बुलाइये!" मोटे ने हुक्म दिया।

गवाह सिर्फ एक ही था। उसे लाया गया। यह वही प्रतिष्ठित प्राणिविज्ञ था, चिड़ियाघर के जानवरों की देखभाल करनेवाला। उसने सारी रात तने पर ही बिताई थी। उसे अभी-अभी नीचे उतारा गया था। वह उसी हालत में यहां आ गया—फूलदार गाउन, धारीदार पाजामा और रात की टोपी पहने हुए। उसकी टोपी का फुंदना आंत की भांति उसके पीछे-पीछे जमीन पर घसिटता चला आ रहा था।

सूम्रोक को बेंच पर बैठी देखकर प्राणिविज्ञ डर से थरथर कांपने लगा। उपस्थित लोगों ने उसे सहारा दिया।

"जो घटना घटी है, हमें कह सुनाइये।"

प्राणिविज्ञ ने कहना शुरू किया। उसने बताया कि मैं वृक्ष पर चढ़ा और वहां शाखाओं के बीच मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुड़िया दिखाई दी। पर चूंकि मैंने कभी जीती-जागती गुड़िया नहीं देखी थी और इस बात की कल्पना तक नहीं की थी कि गुड़िया रात के समय वृक्ष पर चढ़ सकती है, इसलिये मैं बेहद डर गया और बेहोश हो गया।

"उसने हथियारसाज प्रोस्पेरो को कैसे आज़ाद कराया?"

"मुझे मालूम नहीं। मैंने न तो कुछ सुना और न देखा ही। मेरी बेहोशी बहुत गहरी थी।"

"अरी ओ दुष्ट लड़की, तू हमें बतायेगी या नहीं कि तू ने हथियारसाज प्रोस्पेरो को कैसे आज़ाद किया?"

सूम्रोक ने कोई उत्तर न दिया।

"इसे हिलाइये-डुलाइये।"

"खूब अच्छी तरह से!" तीन मोटों ने आदेश दिया।

नीली आंखों वाले सैनिक ने लड़की के कंधे पकड़कर उसे झकझोरा। इतना ही नहीं, उसने उसके माथे पर ज़ोर की चपत भी लगाई।

सूम्रोक अब भी मौन साधे रही।

मोटे तो गुस्से से फूं-फां करने लगे। भर्त्सना करते हुए लोगों के रंग-बिरंगे विगों वाले सिर हिलने लगे।

"ऐसा लगता है कि हमें कुछ भी तफ़सीलें मालूम नहीं हो सकेंगी," पहले मोटे ने कहा।

यह शब्द सुनकर प्राणिविज्ञ ने माथा ठोंकते हुए कहा—

"मैं जानता हूं कि हमें क्या करना चाहिये!"

हर किसी के कान खड़े हो गये।

"चिड़ियाघर में तोतों का भी एक पिंजरा है। वहां बहुत ही दुर्लभ और बढ़िया नसल के तोते हैं। आप यह तो जानते ही हैं कि तोते व्यक्ति के शब्दों को याद रख सकते हैं, उन्हें दोहरा सकते हैं। बहुत-से तोतों के कान बहुत तेज होते हैं और याददाश्त बहुत गजब की... मैं यह समझता हूं कि उस रात को इस लड़की और हथियारसाज प्रोस्पेरो के बीच चिड़ियाघर में जो बातचीत हुई, तोतों को वह सब याद है... इसलिये मैं यह सुझाव देता हूं कि मेरे अद्‌भुत तोतों में से एक को यहां गवाह के रूप में लाया जाये।"

उपस्थित लोगों के अनुमोदन की हल्की-सी आवाज सुनाई दी।

प्राणिविज्ञ चिड़ियाघर की ओर गया और जल्द ही लौट आया। उसकी तर्जनी पर बड़ा-सा और लम्बी लाल दाढ़ीवाला बूढ़ा-सा तोता बैठा था।

आपको उस समय का तो स्मरण होगा जब सूओक रात्रि को चिड़ियाघर में घूमती रही थी। याद है न? उसे एक तोते पर सन्देह हुआ था। यह भी याद है न आपको कि कैसे उस तोते ने सूओक की ओर देखा था और फिर मानो सोने का बहाना करते हुए वह कैसे अपनी लम्बी लाल दाढ़ी में मुस्कराया था।

अब यही लाल दाढ़ीवाला तोता प्राणिविज्ञ की उंगली पर उसी तरह आराम से बैठा था जैसे कि तब पिंजरे के रुपहले छड़ पर।

इस समय वह खुले तौर पर मुस्करा रहा था, इस बात से खुश होता हुआ कि बेचारी सूओक का भंडाफोड़ कर देगा।

प्राणिविज्ञ ने जर्मन भाषा में तोते से बातचीत शुरू की। तोते को लड़की दिखाई गई। तब उसने पंख फड़फड़ाये और वह चिल्ला उठा—

"सूओक! सूओक!"

उसकी आवाज उस पुराने फाटक की चरमराहट जैसी थी जो हवा के कारण अपने जंग लगे कब्जे पर हिलता-डुलता है।

सभी लोग खमोश थे।

प्राणिविज्ञ खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

तोते ने अपनी मुखबिरी जारी रखी। उसने सचमुच ही वह सब कह सुनाया जो उस रात सुना था। इसलिये अगर आप हथियारसाज प्रोस्पेरो के आजाद होने की कहानी जानना चाहते हैं तो वह सब ध्यान से सुनियेगा जो तोता कहेगा।

ओह! यह सचमुच ही बहुत बढ़िया नसल का तोता था! सुन्दर लाल दाढ़ी की तो

बात ही एक तरफ़ रही जो किसी भी जनरल की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती थी, उस तोते की असली ख़ूबी यह थी कि वह इन्सान की कही हुई बातों को दोहराने की अद्भुत क्षमता रखता था।

"तुम कौन हो?" उसने मर्दाना आवाज़ में कहा।

इसके फ़ौरन बाद लड़की की आवाज़ की नक़ल करते हुए उसने बारीक आवाज़ में उत्तर दिया –

"मैं सूम्रोक हूं।"

"सूम्रोक!"

"मुझे तिबुल ने भेजा है। मैं गुड़िया नहीं, जीती-जागती लड़की हूं। मैं तुम्हें आज़ाद कराने आई हूं। तुमने मुझे चिड़ियाघर में आते नहीं देखा?"

"नहीं। मैं शायद सो रहा था। आज वह पहली रात है जब मेरी आंख लगी है।"

"मैं तुम्हें चिड़ियाघर में ढूंढ़ती रही हूं। मैंने यहां एक भयानक जन्तु देखा जो इन्सान की तरह बातचीत करता था। मैं समझी कि वह तुम ही हो। वह जन्तु मर गया।"

"वह तूब था। तो क्या वह मर गया?"

"हां, मर गया। मैं डरकर चीख़ उठी। तब सन्तरी भाग आये। मैं वृक्ष पर जा चढ़ी। मैं बेहद ख़ुश हूं कि तुम ज़िन्दा हो! मैं तुम्हें आज़ाद कराने आई हूं।"

"मगर मेरे पिंजरे में तो बहुत बड़ा ताला लगा हुआ है।"

"मेरे पास ताले की चाबी है।"

तोते ने जब यह अन्तिम वाक्य कहा तो सभी उपस्थित लोग आग-बबूला हो उठे।

"ओह, दुष्ट लड़की!" मोटे चिल्ला उठे। "अब सारी बात समझ में आ गयी। उत्तराधिकारी टुट्टी के पास पिंजरे की जो चाबी थी उसने वह चुरा ली और हथियारसाज़ को आज़ाद कर दिया। हथियारसाज़ ने अपनी ज़ंजीर तोड़ डाली, चीते का पिंजरा तोड़कर उसे ज़ंजीर से बांध लिया ताकि अहाते में से बिना रोक-टोक जा सके।"

"ऐसा ही है!"

"ऐसा ही है!"

"ऐसा ही है!"

मगर सूम्रोक चुप रही।

तोते ने मानो समर्थन करते हुए सिर हिलाया और तीन बार पंख फड़फड़ाये।

मुक़दमे की कार्रवाई ख़त्म हो गई। यह फ़ैसला सुनाया गया –

"बनावटी गुड़िया ने उत्तराधिकारी टुट्टी को धोखा दिया। उसने सबसे बड़े विद्रोही और तीन मोटों के सबसे बड़े दुश्मन – हथियारसाज़ प्रोस्पेरो – को आज़ाद

किया। इसी के कारण बहुत बढ़िया चीता मारा गया। इसलिये इस धोखेबाज़ लड़की को मौत की सज़ा दी जाती है। दरिन्दों से इसके टुकड़े करवाये जायें।"

पाठकगण, तनिक कल्पना करें मृत्यु-दण्ड की घोषणा होने पर भी सूम्रोक न हिली, न डुली!

हॉल में उपस्थित सभी लोग चिड़ियाघर की ओर चल दिये। पक्षियों की चीं-चीं और चहक तथा जानवरों की चीख़-चिंघाड़ ने इन लोगों का स्वागत किया। सबसे अधिक परेशान तो था प्राणिविज्ञ। ऐसा स्वाभाविक भी था–वह चिड़ियाघर की देखभाल जो करता था!

तीन मोटे, सलाहकार, कर्मचारी और अन्य दरबारी मंच पर जा चढ़े। मंच के चारों ओर लोहे का जंगला लगा हुआ था।

बड़ी प्यारी-प्यारी धूप खिली हुई थी! आह, आकाश कैसा नीला-नीला था! तोतों के पंख कैसे चमक रहे थे, बन्दर कैसे कलाबाज़ियां लगा रहे थे और हरी-हरी झलक देनेवाला हाथी कैसे नाच रहा था!

बेचारी सूम्रोक! इन चीज़ों की ओर तो उसने आंख तक उठाकर न देखा। वह तो सम्भवतः सहमी-सहमी आंखों से उस गन्दे-से पिंजरे की ओर देख रही थी जहां कुछ-कुछ झुके हुए शेर इधर-उधर दौड़ रहे थे। वे बरों से मिलते-जुलते थे, कम से कम उनका रंग तो ऐसा ही था–पीला-पीला और बादामी धारियां।

वे गुस्से से लोगों को देख रहे थे। जब तब उनमें से कोई अपना ख़ून जैसा लाल मुंह खोलता जिसमें से कच्चे मांस की गंध आती थी।

बेचारी सूम्रोक!

अलविदा सरकस, चौक, अगस्त, पिंजरे में बन्द लोमड़ी, प्यारे, हृष्ट-पुष्ट और साहसी तिबुल!

नीली आंखों वाला सैनिक लड़की को चिड़ियाघर के मध्य में ले गया और उसे तपते तथा चमकते हुए शीसे पर लिटा दिया।

"मैं निवेदन करना चाहता हूं," अचानक एक सलाहकार ने कहा। "आपने उत्तराधिकारी टुट्टी के बारे में भी कुछ सोचा? अगर उसे यह मालूम हो गया कि उसकी गुड़िया के शेरों से टुकड़े करवाये गये हैं तो वह रो-रोकर जान दे देगा।"

"शी!" साथ बैठे हुए व्यक्ति ने उसे चुप रहने का संकेत करते हुए कहा। "शी! उत्तराधिकारी टुट्टी को सुला दिया गया है... वह तीन दिनों तक या इससे भी ज़्यादा वक़्त तक गहरी नींद सोया रहेगा..."

अब सभी लोगों की नज़रें उस दर्दनाक गुलाबी चीज़ पर टिकी हुई थीं जो पिंजरों के बीच पड़ी थी।

इसी समय जानवरों को सधानेवाला व्यक्ति अपना हंटर सटकारता और पिस्तौल चमकाता हुआ आया। बैंडवालों ने एक धुन बजानी शुरू की। इस तरह सूओक आख़िरी बार दर्शकों के सामने आई।

"हुश!" सधानेवाले ने कहा।

पिंजरे का लोहे का दरवाज़ा चरमरा उठा। शेर बिना शोर किये और भारी क़दम रखते हुए पिंजरे से बाहर निकले।

मोटों ने ठहाका लगाया। सलाहकार खिलखिलाकर हंसे और उन्होंने अपने विग हिलाये। हंटर की आवाज़ सुनाई दी। तीनों शेर सूओक की ओर लपके।

सूओक निश्चल पड़ी थी और उसकी भूरी गतिहीन आंखें आकाश को एकटक ताक रही थीं। सभी लोग उठकर खड़े हो गये। जनता की इस छोटी-सी मित्र के शेरों द्वारा टुकड़े होते देखकर सभी लोग ख़ुशी से चिल्लाने को तैयार थे...

और शेर... निकट आये। उन में से एक ने अपना चौड़े माथेवाला सिर झुकाकर सूओक को सूंघा, दूसरे ने अपने बिल्ली जैसे पंजे से लड़की को छुआ। तीसरे ने तो उसकी

ओर ध्यान भी नहीं दिया, पास से गुज़र गया और मंच के सामने खड़ा होकर मोटों पर गरजने लगा।

तब सभी को यह बात स्पष्ट हो गई कि यह जीती-जागती लड़की नहीं, गुड़िया थी, फटे-से फ्रॉक में पुरानी गुड़िया, न किसी काम की, न काज की।

सभी लोगों के दिल बैठ गये। प्राणिविज्ञ ने तो परेशानी में अपनी आधी ज़बान ही काट ली। जानवरों को सधानेवाले ने शेरों को पिंजरे में वापिस भेज दिया और घृणा से बेजान गुड़िया को ठोकर मारकर नीली और सुनहरी डोरियों वाली अपनी समारोही वर्दी उतारने चला गया।

सभी लोग पांच मिनट तक ख़ामोश रहे।

यह ख़ामोशी बहुत ही अप्रत्याशित ढंग से भंग हुई। चिड़ियाघर के ऊपर नीले आकाश में तोप का एक गोला फटा।

मंच पर खड़े सभी दर्शक लकड़ी के फ़र्श पर झटपट लेट गये। सभी जानवर अपनी पिछली टांगों के बल खड़े हो गये। फ़ौरन बाद दूसरा गोला फटा। आकाश में सफ़ेद धुएं का गोल-गोल बादल छा गया।

"यह क्या माजरा है? यह क्या क़िस्सा है? यह क्या है?" सभी लोग चीख़ उठे।

"जनता धावा बोल रही है!"

"जनता के पास तोपें हैं!"

"सैनिक जनता के साथ मिल गये हैं!!"

"ओह! आह!! ओह!!!"

पार्क में सभी ओर शोर, चीख़-पुकार और गोलियों की ठांय-ठांय सुनाई देने लगी। ज़ाहिर था कि विद्रोही पार्क में घुस आये थे।

सभी लोग चिड़ियाघर के फाटकों की ओर भाग चले। मन्त्रियों ने मियानों से तलवारें निकाल लीं। मोटे गला फाड़कर चिल्ला रहे थे।

पार्क में उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया।

सभी ओर से लोग बढ़े आ रहे थे। बहुत बड़ी संख्या थी उनकी। वे नंगे सिर थे, कुछ के माथों से रक्त बह रहा था, कुछ की जाकेटें तार-तार थीं, फिर भी उनके चेहरों पर ख़ुशी नाच रही थी... ये थे जनसाधारण जिनकी आज विजय हुई थी। सैनिक उनके साथ मिल गये थे। उनके टोपों पर लाल रिबन लगे हुए थे। मज़दूर भी सशस्त्र थे। बादामी रंग की पोशाकें और लकड़ी के जूते पहने हुए ग़रीबों की पूरी की पूरी सेना बढ़ी आ रही थी। उनके दबाव से वृक्ष झुके जा रहे थे, झाड़ियां टूट रही थीं।

"हमारी जीत हुई है!" लोग चिल्ला रहे थे।

तीन मोटों ने समझ लिया कि अब बचकर निकलना मुमकिन नहीं।

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!" उनमें से एक चिल्लाया। "सैनिको, इन्हें गोलियों से भून डालो!"

मगर सैनिक तो ग़रीबों के ही साथी थे। तब सारी भीड़ के शोर-शराबे को शान्त करती हुई एक आवाज़ गूंज उठी। यह आवाज़ थी हथियारसाज़ प्रोस्पेरो की—

"अपने को हमारे हवाले कर दीजिये! जनता जीत गई है! धनियों और पेटुओं की सत्ता का अन्त हो गया! सारा नगर जनता के क़ब्ज़े में है। सभी मोटों को गिरफ़्तार कर लिया गया है।"

रंग-बिरंगे कपड़े पहने उत्तेजित जनता की मज़बूत दीवार ने तीन मोटों को अपने घेरे में ले लिया।

लोग लाल झंडे, लाठियां और तलवारें हिला रहे थे, घूंसे दिखा रहे थे। इसी समय एक गीत गूंज उठा।

तिबुल अपना हरा लबादा पहने प्रोस्पेरो की बग़ल में खड़ा था। उसके सिर पर चिथड़ा बंधा हुआ था जिसपर ख़ून के धब्बे नज़र आ रहे थे।

"यह तो महज़ सपना है!" हाथों से आंखें बन्द करते हुए एक मोटा चिल्लाया।

तिबुल और प्रोस्पेरो ने गाना शुरू किया। हज़ारों लोगों ने इस गीत में अपना स्वर मिलाया। यह गीत छा गया विराट पार्क के ऊपर, नहरों और पुलों पर। नगर के फाटकों से महल की ओर बढ़े आते लोगों ने यह गीत सुना, तो वे भी इसे गाने लगे। यह गीत समुद्री लहर की तरह बढ़ा चला जा रहा था सड़कों पर, लांघता जा रहा था फाटकों को, लहरा रहा था नगर में, सभी राहों और रास्तों पर जहां मज़दूर और ग़रीब बढ़ रहे थे महल की ओर। अब सारा नगर ही इसे गा रहा था। यह गीत था जनता का, उस जनता का जिसने अपने उत्पीड़कों पर विजय पाई थी।

इस गीत को सुनकर केवल तीन मोटे ही अपने मन्त्रियों समेत भेड़ों के रेवड़ की भांति सिमटते-सिकुड़ते और एक दूसरे के साथ सटे जा रहे थे, ऐसी बात नहीं थी। इसे सुनकर नगर के सभी बांके-छैले, मोटे दूकानदार, पेटू, व्यापारी, कुलीन महिलाएं और गंजी चांदवाले जनरल डर और घबराहट से थर-थर कांप रहे थे। ऐसे लगता था मानो वे गीत के बोल नहीं, तोप के गोले हों।

ये लोग अपने लिये छिपने की जगह ढूंढते थे, कानों में उंगलियां ठूंसते थे और बढ़िया, कढ़े हुए सिरहानों में अपने सिर छिपाते थे ताकि गीत के शब्द उन्हें सुनाई न दें।

आख़िर हुआ यह कि धनियों की भारी भीड़ बन्दरगाह की ओर भाग चली। इन लोगों ने जहाज़ों में बैठकर उस देश से भाग जाना चाहा जहां वे अपना सभी कुछ खो बैठे थे—अपनी सत्ता, धन-दौलत और हरामख़ोरी की मज़े की ज़िन्दगी। मगर बन्दरगाह पर उन्हें

पहाड़ियों ने घेर लिया। धनियों को गिरफ़्तार कर लिया गया। उन्होंने माफ़ी मांगी और कहा –

"हमें मारिये-पीटिये नहीं! हम अब आप लोगों से अपने लिये काम नहीं करवायेंगे..."

मगर जनता ने उनपर एतबार नहीं किया। कारण कि धनी लोग ग़रीबों और मज़दूरों को कई बार धोखा दे चुके थे।

सूरज शहर के ऊपर काफ़ी ऊंचा चमक रहा था। आकाश नीला-नीला था। ऐसे लगता था मानो लोग बहुत बड़ा और अभूतपूर्व पर्व मना रहे हों।

अब सभी कुछ जनता के हाथों में था – शस्त्र-भंडार, बारेक, महल अन्न-भंडार और दूकानें। सभी जगह सैनिकों का पहरा था जो अपने टोपों पर लाल रिबन लगाये थे।

चौकों में लाल झण्डे लहरा रहे थे जिनपर ये शब्द अंकित थे –

जो कुछ ग़रीबों के हाथों का बना हुआ है,
उसपर ग़रीबों का ही अधिकार है!

जय जनता!

कामचोर और पेटू मुर्दाबाद!

मगर तीन मोटों का क्या हुआ?

उन्हें महल के बड़े हॉल में लोगों को दिखाने के लिये लाया गया। हरे कफ़ों वाली सलेटी रंग की जाकेटें पहने मज़दूर बन्दूकें लिये हुए पहरा दे रहे थे। हॉल सूरज की किरणों से जगमगा रहा था। ओह, कितनी बड़ी भीड़ थी यहां लोगों की! मगर बहुत ही भिन्न थे ये लोग उन से जिनके सामने नन्ही सुओक ने उस दिन गाना गाया था जब उत्तराधिकारी टूट्टी से उसका परिचय हुआ था।

यहां वही दर्शक जमा थे, जो चौकों और बाज़ारों में सुओक का कार्यक्रम देखकर तालियां बजाते थे। अब उनके चेहरे खिले हुए थे, उनपर ख़ुशी झलक रही थी। लोग एक दूसरे के साथ सटे हुए थे, रेल-पेल और हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। कुछेक की आंखों में तो ख़ुशी के आंसू भी थे।

महल के समारोही हॉलों में ऐसे मेहमान कभी नहीं आये थे। इनके ऊपर सूरज भी कभी ऐसे तेज़ी से नहीं चमका था।

"शी!"

"चुप हो जाइये!"

"चुप हो जाइये!"

जीने के ऊपर क़ैदियों का जुलूस दिखाई दिया। तीन मोटों की नज़रें झुकी हुई थीं। सबसे आगे-आगे था प्रोस्पेरो और उसके साथ-साथ था तिबुल।

ख़ुशी भरे शोर से हॉल के स्तम्भ हिल रहे थे और तीन मोटों के कान फटे जा रहे थे। उन्हें जीने से नीचे लाया गया ताकि लोग उन्हें निकट से देखकर इस बात की तसल्ली कर लें कि ये भयानक मोटे बन्दी बनाये जा चुके हैं।

"हां तो..." स्तम्भ के पास खड़े होकर प्रोस्पेरो ने कहा। उसका क़द विराट स्तम्भ की आधी ऊंचाई के बराबर था। उसका लाल बालों वाला सिर सूरज की रोशनी में अंगारों की भांति दहक रहा था। "हां तो..." उसने कहा, "तो ये रहे तीन मोटे। ये जनता को लूटते-खसोटते थे। ये हमें ख़ून-पसीना एक करने के लिये मजबूर करते थे और हमसे सभी कुछ छीन लेते थे। आप देख रहे हैं न कि कैसे उनपर चर्बी चढ़ी हुई है! हमने इनपर विजय प्राप्त कर ली है। अब हम ख़ुद अपने लिये काम करेंगे। हम सब समान होंगे। हमारे बीच न धनी होंगे, न कामचोर और न ही पेटू। अब हमारी जिन्दगी ख़ूब मज़े में गुज़रेगी, हम सभी के पास पेट भरकर खाने-पीने को होगा और हम सभी धनी होंगे। अगर हमें बुरे दिन भी देखने पड़ेंगे तो भी इस बात का सन्तोष होगा कि ऐसा कोई नहीं है जो मोटा होता जा रहा है जबकि हम भूखों मर रहे हैं..."

"हुर्रा! हुर्रा!" सभी लोग चिल्ला उठे।

तीन मोटों ने नाकें सुड़कीं।

"आज हमारी जीत का दिन है। देखिये तो, सूरज कैसे चमक रहा है! सुनिये तो, परिन्दे कैसे चहचहा रहे हैं! फूल कैसे महक रहे हैं! इस दिन, इस घड़ी को सदा याद रखियेगा!"

प्रोस्पेरो ने जब "घड़ी" कहा तो सभी लोगों का ध्यान उस तरफ़ गया जहां घड़ी लगी हुई थी।

दो स्तम्भों के बीचवाली जगह पर घड़ी लटकी हुई थी। यह बलूत की लकड़ी का बहुत बड़ा बक्सा था, सुन्दर मीनाकारी और नक़्क़ाशी वाला। मध्य में आंकड़ों वाला काला-सा चक्र था।

"क्या बजा है इस वक़्त?" हॉल में उपस्थित हर व्यक्ति ने सोचा।

और अचानक (हमारी इस पुस्तक में यह अन्तिम "अचानक" है)...अचानक बलूत के बक्से का दरवाज़ा पूरी तरह खुल गया। वहां घड़ी के कल-पुर्जे नज़र नहीं आये, उन्हें निकाल दिया गया था। तांबे के स्प्रिंगों और चक्रों की जगह इस छोटी-सी अलमारी में गुलाबी-गुलाबी और चमकती-दमकती सूग्रोक बैठी थी।

"सूग्रोक!" सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये।

"सूग्रोक!" बच्चे चिल्लाये।

"सूग्रोक! सूग्रोक! सूग्रोक!"

तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी।

नीली आंखों वाले सैनिक ने बालिका को बक्से से बाहर निकाला। यह वही नीली आंखों वाला सैनिक था जो नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन के गत्ते के बक्से में से उत्तराधिकारी टुट्टी की गुड़िया उठा ले गया था। वही उसे महल में लाया था, उसी ने धौल जमाकर सरकारी सलाहकार और उस सैनिक को औंधे मुंह ज़मीन पर गिरा दिया था जो जीती-जागती बेचारी सूग्रोक को पेटी से पकड़कर उठाये लिये जा रहा था। उसी ने सूग्रोक को घड़ी के बक्से में बन्द कर उसकी जगह बेजान और खस्ताहाल गुड़िया रख दी थी। याद है न आपको कि मुक़दमे की कार्रवाई के समय उसने कैसे इस गुड़िया के कंधे झकझोरे थे और फिर उसे दहाड़ते हुए शेरों के सामने फेंक दिया था?

लोग सूग्रोक को बारी-बारी से अपने हाथों में लेने लगे। ये वही लोग थे जो उसे संसार की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी मानते थे, जो अपनी जेब का आख़िरी सिक्का तक उसकी दरी पर फेंक देते थे। वे अब उसे गोद में उठाते थे, "सूग्रोक!"—धीरे से उसका नाम लेते थे, उसे चूमते और गले से लगाते थे। इन लोगों की खुरदरी, फटी और कालिख तथा तारकोल पुती जाकेटों के नीचे धड़क रहे थे उनके यातनाएं सहनेवाले दिल, उदारता और कोमलता से ओत-प्रोत हृदय।

सूग्रोक हंसती, उनके अस्तव्यस्त बालों को थपथपाती और अपने नन्हे-नन्हे हाथों से उनके चेहरों का ताज़ा लहू पोंछती, बच्चों को गुदगुदाती, तरह-तरह के मुंह बनाती, ख़ुशी के आंसू बहाती और अस्पष्ट-से शब्द बुदबुदाती।

"इसे इधर बढ़ा दीजिये," हथियारसाज़ ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। बहुत-से लोगों को उसकी आंखों में आंसू चमकते प्रतीत हुए। "इसी ने मेरी जान बचायी थी!"

"इधर बढ़ाइये इसे! इधर!" एक बड़े पत्ते की भांति अपना हरा लबादा हिलाते हुए तिबुल चिल्लाया। "यह मेरी नन्ही-सी सहेली है! इधर आओ, सूओक!"

दूरी पर भीड़ को चीरते और मुस्कराते हुए जल्दी-जल्दी बढ़े आ रहे थे नाटे क़द के डाक्टर गास्पर...

तीन मोटों को उसी पिंजरे में बन्द कर दिया गया जिसमें हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को बन्द किया गया था।

उपसंहार

एक वर्ष बाद नगर में हंसी-ख़ुशी का राज था, जश्न मनाया जा रहा था। लोग तीन मोटों के जुए से मुक्ति पाने की पहली वर्षगांठ मना रहे थे।

सितारे के चौक में बालकों के लिये तमाशे की व्यवस्था की गयी।

सूम्रोक का नाम इश्तिहारों की शोभा बढ़ा रहा था–

सूम्रोक !

सूम्रोक!

सूम्रोक !

हज़ारों बालक अपनी प्यारी अभिनेत्री के मंच पर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर्व के इस दिन वह मंच पर आई, मगर अकेली ही नहीं। उसके साथ एक छोटा-सा लड़का भी था, बहुत कुछ उसी से मिलता-जुलता। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना, कि उसके बाल सुनहरे थे।

यह उसका भाई और कुछ समय पहले तक उत्तराधिकारी टूट्टी था।

नगर ठहाकों और गीतों से गूंज रहा था, झंडे फड़फड़ा रहे थे, मालिनें अपनी झोलियों में से पुष्प-वर्षा कर रही थीं, रंग-बिरंगे परों के फ़ुंदनों से सजाये गये घोड़े उछल-कूद रहे थे, हिंडोले घूम रहे थे और सितारे के चौक में नन्हे-मुन्ने दर्शक दम साधे तमाशा देख रहे थे।

तमाशा ख़त्म होने पर सूम्रोक और टूट्टी को फूलों से लाद दिया गया। बालकों ने उन्हें घेर लिया।

सूम्रोक ने अपने नये फ़्रॉक की जेब में से एक तख़्ती निकाली और उसपर लिखे कुछ शब्द बालकों को पढ़कर सुनाये।

हमारे पाठकों को इस तख़्ती का ध्यान होगा। यह तख़्ती एक भयानक रात को चिड़ियाघर के एक पिंजरे में बन्द दम तोड़ते हुए उस रहस्यपूर्ण व्यक्ति ने सूम्रोक को दी थी जो भेड़िये जैसा लगता था। उसपर यह लिखा हुआ था–

"तुम दो थे, बहन और भाई–सूम्रोक और टूट्टी।

"जब तुम दोनों चार-चार वर्ष के हुए, तो तीन मोटों के सैनिक तुम्हें मां-बाप के घर से उठा लाये।

"मैं हूं तूब, एक वैज्ञानिक। मुझे महल में बुलाया गया। नन्ही सूम्रोक और टूट्टी को मेरे सामने लाया गया।

"तीन मोटों ने मुझसे कहा–'इस बालिका को देख रहे हो, न? हू-ब-हू ऐसी ही एक गुड़िया बना दो।' मैं नहीं जानता था कि किसलिये उन्हें ऐसी गुड़िया की ज़रूरत थी।

"मैंने ऐसी ही गुड़िया बना दी। मैं बहुत बड़ा वैज्ञानिक था। मुझे ऐसी गुड़िया बनाने का आदेश दिया गया था कि वह जीवित लड़की की भांति बढ़ती जाये। सूम्रोक की उम्र पांच वर्ष की हो तो गुड़िया की भी। सूम्रोक बड़ी हो, प्यारी और उदास-सी लड़की बने और गुड़िया भी। मैंने ऐसी ही गुड़िया बना दी। तब तुम दोनों को अलग कर दिया गया। गुड़िया के साथ टूट्टी महल में ही रह गया और सूम्रोक को बहुत बढ़िया नसल के लम्बी लाल दाढ़ीवाले तोते के बदले एक चलते-फिरते सरकस को सौंप दिया गया। तीन मोटों ने मुझे आदेश दिया – 'लड़के का दिल निकालकर उसकी जगह लोहे का दिल लगा दो।' मैंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। मैंने कहा कि इन्सान को उसके इन्सानी दिल से वंचित करना ठीक नहीं। किसी भी तरह का, लोहे, बर्फ़ या सोने का दिल, इन्सान के साधारण और असली इन्सानी दिल की जगह नहीं ले सकता। मुझे पिंजरे में बन्द कर दिया गया और लड़के से झूठमूठ यह कहा जाने लगा कि उसका दिल लोहे का है। वे चाहते थे कि लड़का इस बात पर विश्वास करे और ज़ालिम तथा संगदिल बन जाये। मैं आठ वर्षों से जानवरों के बीच रह रहा हूं। मेरे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल उग आये हैं और दांत लम्बे-लम्बे और पीले-पीले हो गये हैं। मगर मैं तुम लोगों को नहीं भूला। मैं तुमसे माफ़ी चाहता हूं। हम सभी तीन मोटों के कारण बदनसीब बने, धनियों और पेटुओं के उत्पीड़न के शिकार हुए। मुझे क्षमा कर देना टूट्टी, जिसका ग़रीबों की भाषा में अर्थ है – 'जुदाई'। मुझे क्षमा कर देना सूम्रोक, जिसका अर्थ है – 'जीवन भर के लिए'..."